अराध्या व्याकरण

Teacher Manual **Part-1 to 8**

BlueRay Exceedingly Good

अराध्या व्याकरण-1

1. भाषा ज्ञान

(क) 1. भाषा 2. बोलकर 3. मौखिक 4. हिन्दी

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (अ)

(घ) 1. अपनी बात कहना, दूसरों की सुनना, सुनकर समझना, फिर बात करना ही भाषा है। 2. भाषा के दो रूप हैं–1. मौखिक 2. लिखित। 3. पंजाब में पंजाबी तथा उड़ीसा में उड़िया। 4. किसी भाषा को शुद्ध रूप में लिखने और बोलने का ज्ञान कराने वाले नियमों को व्याकरण कहते हैं।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

2. वर्ण एवं लिपि

(क) 1. वर्णमाला 2. वर्ण 3. स्वर 4. देवनागरी

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (अ) 4. (ब)

(घ) 1. वह ध्वनि जिसके और टुकड़े न हो सकें, उसे वर्ण कहते हैं। 2. हिन्दी के वर्णों का उचित क्रम, वर्णमाला कहलाता है। 3. हिन्दी में 11 स्वर और 33 व्यंजन हैं। 4. वर्ण-संकेतों को किसी भी भाषा में जिस रीति से लिखा जाता है, वह उस भाषा की लिपि कहलाती है।

आओ सीखें– स्वयं कीजिए।

3. वर्ण-संयोग

(क) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗

(ख) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (स)

(ग) 1. शब्द-रचना में जो वर्ण पूरा नहीं लिखा जाता, उसे आधा वर्ण कहते हैं। 2. व्यंजन को स्वर-रहित दिखाने के लिए हलंत लगाया जाता है। 3. पाई वाले व्यंजनों का अन्य व्यंजनों से संयोग करने के लिए उनकी पाई हटा देते हैं। 4. 'क' और 'फ' का अन्य वर्णों से संयोग करने के लिए उनकी दाईं ओर की सूँड़ हटा देते हैं।

आओ सीखें– स्वयं कीजिए।

4. स्वरों की मात्राएँ

(क) 1. माला 2. शेर 3. केला 4. राम 5. रोटी

(ख) 1. आ 2. ओ 3. ई
4. ओ,ई 5. ई,आ 6. ऐ, आ
7. ओ, आ 8. इ, आ 9. उ
10. ओ, आ 11. इ, ऊ 12. ऊ
13. उ, इ 14. ऊ, ई 15. उ, आ
16. ऊ 17. ऋ 18. ई, आ

(ग) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब)

(घ) 1. शब्द रचना हेतु व्यंजन के बाद आने वाले स्वर को मात्रा कहते हैं। 2. ए, ऐ स्वरों की मात्राएँ व्यंजन के ऊपर लगती हैं। 3. उ, ऊ, ऋ स्वरों की मात्राएँ व्यंजन के नीचे लगती हैं। 4. आ, ई, ओ, औ स्वरों की मात्राएँ व्यंजन के आगे लगती हैं।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

5. शब्द

(क) 1. दो 2. सार्थक 3. निरर्थक 4. शब्द

(ख) कम, चख , साँप, बिल, बंदर

(ग) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब)

(घ) 1. ध्वनियों के ऐसे मेल को शब्द कहते हैं जिसका कोई अर्थ होता है।

2. शब्द सारवान ध्वनि के योग से बनते हैं।

3. निरर्थक शब्द सार्थक शब्द के साथ प्रयुक्त होने पर सारवान हो उठते हैं।

4. **सार्थक**- चाय, रोटी, पानी, मकान, फल

निरर्थक- वाय, वोटी, वानी , वकान, वल

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

6. लिंग

(क) 1. दादा 2. शिष्या 3. माली 4. नाली

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓

(ग) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स)

(घ) 1. जिन शब्दों से पुरुष अथवा स्त्री जाति का बोध होता है उसे लिंग कहते हैं। 2. नर जाति के शब्द को पुल्लिंग कहते हैं। 3. मादा जाति के शब्द को स्त्रीलिंग कहते हैं।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

7. वचन

(क) 1. कुत्ता 2. लड़के 3. पुस्तकें

(ख) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स)

(ग) 1. शब्द के जिस रूप से उसकी संख्या का

बोध होता है उसे वचन कहते हैं। 2. शब्द के जिस रूप से एक व्यक्ति, प्राणी, वस्तु आदि का बोध होता है एकवचन कहलाता है। 3. शब्द के जिस रूप से एक से अधिक व्यक्तियों, प्राणियों, वस्तुओं आदि का बोध होता है बहुवचन कहलाता है।

(घ) 1. लोटे 2. तारे
3. डिब्बे 4. प्याले
5. जूते 6. साड़ियाँ

(ङ) 1. एकवचन 2. बहुवचन
3. एकवचन 4. एकवचन
5. बहुवचन 6. एकवचन
7. बहुवचन 8. एकवचन

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

8. संज्ञा

(क) 1. सूर्य 2. डाकिया 3. घोड़ा 4. गंगा 5. लक्ष्मण 6. रावण

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(ग) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (अ)

(घ) किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण, भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं।

(ङ) बाल, आँख, कान, हाथ, सिर, नाक, गला, पैर।

(च) स्वयं कीजिए।

9. सर्वनाम

(क) 1. मैं 2. वह 3. तुम 4. हम 5. वे

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓

(ग) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ)

(घ) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। 2. बात कहने वाला अपने लिए 'मैं' और 'हम' शब्दों का प्रयोग करता है। 3. बात सुनने वाले के लिए 'तू', तुम और आप सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया जाता है। 4. दूर और निकट के प्राणी या वस्तु को दर्शाने के लिए 'यह' और 'वह' सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

10. विशेषण

(क) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗

(ख) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब)

(ग) 1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं। 2. जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

11. क्रिया

(क) 1. चहचहाती 2. रेंकता 3. मिमियाती 4. हिनहिनाता

(ख) 1. उड़ना 2. डरना 3. आना 4. मुस्कुराना

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ)

(घ) जिस शब्द से किसी कार्य का करना या होना प्रकट होता है, उसे क्रिया कहते हैं।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

12. शुद्ध-अशुद्ध (उच्चारण)

(क) 1. आज्ञा 2. नाखून 3. प्रणाम 4. विद्यालय 5. आसान

(ख) शुद्ध वर्तनी- बारात, साधु, तिथि, प्रणाम
अशुद्ध वर्तनी- कवीता, बिमार, परसिद्ध, निशचय

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब)

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

13. विलोम शब्द

(क) 1. भीतर 2. धर्म 3. प्रेम 4. हानि 5. काला।

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (अ)

(घ) 1. मीठा 2. हार
3. खोटा 4. अपयश
5. बदबू 6. सूखा

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

14. पर्यायवाची

(क) 1. वाटिका 2. जनक 3. गिरि 4. सरोवर

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) 5. (अ)

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

अराध्या व्याकरण-2

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. भाषा 2. अनेक 3. भारतीय 4. व्याकरण 5. संस्कृत

(ख) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (स)

(घ) 1. जिसके द्वारा लोग आपस में बातचीत करते हैं और अपने विचार एक दूसरे तक पहुँचाते हैं उसे भाषा कहते हैं। 2. बोलने तथा लिखने का कार्य करने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है।
3. भाषा के दो प्रकार हैं- 1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा 4. बोलते समय हमारे मुख से ध्वनियाँ

निकलती हैं। इन ध्वनियों को लिखने के लिए कुछ चिह्नों का निर्माण किया जाता है। ध्वनि चिह्नों को लिखने की रीति "लिपि" कहलाती है। 5. किसी भाषा को शुद्ध रूप में लिखने और बोलने का ज्ञान कराने वाले नियमों को व्याकरण कहते हैं।

(ङ) 1. हमें सदा सत्य बोलना चाहिए।

2. लड़का जा रहा है।

3. हमने खाना खाया।

4. हरि ने दूध पिया।

5. सूरज पूरब में निकलता है।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

2. वर्ण-विचार

(क) रथ, चल, अधर, अजगर

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब)

(घ) 1. जिन वर्णों का उच्चारण किसी अन्य ध्वनि की सहायता के बिना होता है, उन्हें स्वर-वर्ण कहते हैं। 2. जिन वर्णों के उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है उन्हें व्यंजन वर्ण कहते हैं। 3. जब दो व्यंजनों के बीच कोई स्वर नहीं होता है तो वे संयुक्त व्यंजन माने जाते हैं। 4. जिन व्यंजनों में खड़ी पाई होती है, उनकी पाई हटाकर उन्हें व्यंजन में जोड़ दिया जाता है।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

3. शब्द और वाक्य

(क) 1. मैं 2. वह 3. वह 4. हम

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ)

(घ) 1. वाक्य में प्रयोग होने पर जो शब्द अपना रूप बदल लेते हैं। उन्हें विकारी शब्द कहते हैं जैसे- **वह** गीत **गाएगा**। 2. वाक्य में प्रयोग होने पर जो शब्द अपना रूप नहीं बदलते, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। 3. शब्दों का वह सार्थक समूह जो किसी विषय में पूरा भाव प्रकट करे, उसे वाक्य कहते हैं।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

4. संज्ञा

(क) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗

(ख) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स)

(ग) 1. जिस संज्ञा शब्द से उसकी संपूर्ण जाति का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं जैसे- पुस्तक, नदी, पर्वत, गुड़िया आदि।

2. किसी विशेष प्राणी, वस्तु या स्थान के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं जैसे-गंगा, हिमालय, चेतक, लाल किला आदि।

3. जिस शब्द से किसी व्यक्ति या पदार्थ के भाव, दशा या स्थिति का बोध हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं जैसे- दु:ख, पीड़ा, बचपन, हरियाली आदि।

(घ) 1. (स) 2. (द) 3. (अ) 4. (ब)

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

5. लिंग

(क) 1. पुल्लिंग 2. पुल्लिंग 3. स्त्रीलिंग 4. पुल्लिंग

(ख) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब)

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

6. वचन

(क) 1. लड़का 2. कुत्ते 3. रोटियाँ 4. तितलियाँ

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब)

(घ) 1. पर्दे धोकर सुखा दो। 2. दरवाजे बंद कर दो। 3. ताले उठाकर यहाँ रख दो।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

7. कारक

(क) 1. ने 2. में 3. पर 4. को 5. से

(ख) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब)

(ग) 1. संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ संबंध बताने वाली अवस्थाओं को कारक कहा जाता है।

2. वाक्य में जिसके द्वारा कार्य किया जाना प्रकट हो, उसे कर्ताकारक कहते हैं। 3. जिस पर क्रिया का प्रभाव पड़े, वह कर्म कहलाता है, वाक्य में कर्म ही कर्मकारक कहलाता है।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

8. सर्वनाम

(क) 1. मैं 2. वह 3. वे 4. उन्हें 5. तुम

(ख) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ)

(घ) 1. जो सर्वनाम बोलने वाले, सुनने वाले या अन्य किसी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है, उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

2. जिन शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने में किया जाता है उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। 3. जिन सर्वनामों में किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध नहीं होता उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

(ङ) संज्ञा- राम, राजू, समीर, फूल, रमेश
सर्वनाम - वह, कोई, मैं, किसने, कुछ
आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

9. विशेषण

(क) 1. मीठा 2. विशाल 3. नीला 4. बनारसी 5. कुछ 6. काला
(ख) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (अ) 5. (स)
(ग) 1. किसी वस्तु या प्राणी के गुण-दोष बताने वाले शब्दों को गुणवाचक विशेषण कहते हैं। 2. संख्या बताने वाले शब्दों को संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। 3. मात्रा या परिमाण का बोध कराने वाले शब्दों को परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। 4. जो विशेषण संज्ञा की ओर संकेत करते हैं, उन्हें संकेतवाचक विशेषण कहते हैं।
(घ) 1. चतुर-अनुज 2. गरीब-वह
3. सत्यवादी-गाँधीजी 4. काला-घोड़ा
आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

10. क्रिया

(क) 1. खा रहा है। 2. उड़ा रहा है। 3. भौंक रहा है। 4. रो रहा है।
(ख) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ)
(ग) 1. जिन क्रियाओं के साथ कर्म का प्रयोग किया जाता है, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे- राम केला खा रहा है। 2. जिन क्रियाओं के साथ कर्म नहीं होता, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं जैसे- बच्चा सो रहा है।
(घ) 1. अकर्मक क्रिया 2. सकर्मक क्रिया 3. सकर्मक क्रिया 4. अकर्मक क्रिया
आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

11. काल

(क) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓
(ख) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)
(ग) 1. व्याकरण में क्रिया के होने के समय को काल कहते हैं। 2. क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य बीते हुए समय में हुआ था, उसे भूतकाल कहते हैं जैसे- यह पेड़ मेरे दादाजी ने लगाया था। 3. क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य अभी हो रहा है, उसे वर्तमान काल कहते हैं, जैसे- पेड़ पर आम लगे हैं पर अभी कच्चे हैं। 4. क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य आने वाले समय में होगा। उसे भविष्यत् काल कहते हैं, जैसे मैं कल विद्यालय जाऊँगा।
आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

12. क्रियाविशेषण

(क) 1. उधर, स्थानवाचक क्रियाविशेषण 2. बहुत, रीतिवाचक क्रियाविशेषण 3. बाहर, स्थानवाचक क्रियाविशेषण
(ख) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (ब)
(ग) 1. कब 2. जल्दी-जल्दी 3. देर 4. यहाँ-वहाँ
आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

13. शब्द-भंडार

(क) 1. अपराह्न 2. शाकाहारी 3. अशिक्षित
(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓
(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब)
(घ) 1. संस्कृत भाषा के मूल शब्द तत्सम शब्द कहलाते हैं। 2. जब तत्सम शब्द हिंदी में रूप बदलकर प्रयोग किये जाते हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं। 3. समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं। 4. एक-दूसरे के विपरीत अर्थ का बोध कराने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं।
आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

14. मुहावरे

(ख) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ)
(क) 1. उल्लू बनाना 2. अक्ल की दुश्मन 3. कोल्हू का बैल 4. आँखों का तारा 5. नौ-दो ग्यारह होना 6. आग बबूला होना
(ग) 1. ऐसे वाक्यांश जो विशेष अर्थ के लिए प्रयुक्त हों, मुहावरे कहलाते हैं। 2. वाक्यों को प्रभावशाली बनाने के लिए।
आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

अराध्या व्याकरण-3

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. विचारों 2. लिपि 3. देवनागरी 4. बोली
(ख) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓
(ग) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब)
(घ) 1. भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने भाव या विचार लिखकर या बोलकर दूसरों के सामने प्रकट करते हैं।
2. भाषा के दो रूप हैं–मौखिक एवं लिखित।
3. बोलकर प्रयोग की जाने वाली भाषा मौखिक

भाषा कहलाती है।

4. लिखकर प्रयोग की जाने वाली भाषा को लिखित भाषा कहते हैं।

(ङ) 1. भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं।

2. ध्वनियों को लिखने का ढंग लिपि कहलाता है।

3. भाषा को शुद्ध रूप से लिखने व बोलने के नियमों को बताने वाले शास्त्र को व्याकरण कहते हैं।

(च) 1. (द) 2. (अ) 3. (य) 4. (ब) 5. (स)

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

2. वर्ण-विचार

(क) 1. क 2. ह्रस्व 3. न्न 4. श्र 5. स

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (स)

(घ) 1. वह छोटी से छोटी ध्वनि जिसके और टुकड़े न हो सकें, वर्ण कहलाती है। 2. जिन वर्णों को बोलने में किसी दूसरे वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती उन्हें स्वर वर्ण कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं, ह्रस्व व दीर्घ। 3. स्वर वर्ण की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते हैं, ये तीन प्रकार के होते हैं–स्पर्श व्यंजन, अंत:स्थ व्यंजन व ऊष्म व्यंजन।

(ङ) 1. (स) 2. (य) 3. (अ) 4. (ब) 5. (द)

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

3. वर्ण-संयोग

(क) 1. वर्तनी 2. शब्द 3. से पहले 4. के बाद 5. पाई

(ख) 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)

(घ) 2. श–श् निश्चित 3. ज–ज् ज्वाला 4. त–त् गत्ता 5. घ–घ् कृतघ्न 6. ल–ल् बल्ला 7. क–क् पक्का 8. ण–ण् झण्डा 9. स–स् स्थान 10. फ–फ् हफ्ता ह–ह् चिह्न 11. ख–ख् ख्याल 12. द–द् युद्ध 13. ह–ह् प्रह्लाद 14. ग–ग् ग्वाला 15. प–प् प्यारा 16. भ–भ् अभ्यास 17. ब–ब् शब्द 18. क्ष–क्ष् लक्ष्मण 19. व–व् व्यापक 20. च–च् बच्चा

(ग) 1. करम–कर्म 2. धरम–धर्म 3. वरग–वर्ग, 4. उचारण–उच्चारण 5. पूरथम–प्रथम, 6. निरवाह–निर्वाह 7. पृथक–पृथक् 8. रुपया–रुपया

4. शब्द-विचार

(क) 1. वर्ण 2. बदलते 3. अविकारी 4. योगरूढ़

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब)

(घ) 1. एक या अनेक वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं। 2. शब्दों के वर्गीकरण के चार आधार हैं–उद्गम का आधार, रचना का आधार, अर्थ का आधार व प्रयोग का आधार। 3. उद्गम के आधार पर शब्द चार प्रकार के होते हैं। तत्सम्, तद्भव, देशज और विदेशी। 4. रचना के आधार पर शब्द के तीन भेद हैं–रूढ़ शब्द, यौगिक शब्द और योगरूढ़ शब्द। 5. प्रयोग के आधार पर शब्द के दो भेद हैं–विकारी शब्द और अविकारी शब्द।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

5. संज्ञा

(क) 1. व्यक्तिवाचक 2. जातिवाचक 3. भाववाचक 4. समूहवाचक 5. द्रव्यवाचक

(ख) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) 5. (स)

(घ) 1. किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम को संज्ञा कहते हैं। इसके प्रमुख तीन भेद हैं–व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा व भाववाचक संज्ञा। 2. जो शब्द किसी वर्ग या जाति के सभी प्राणियों, वस्तुओं तथा स्थानों आदि के नाम का बोध कराएँ उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे–लड़का, गाय, तोता आदि।

3.

जातिवाचक संज्ञा	**व्यक्तिवाचक संज्ञा**
स्त्री	रजनी
स्थान	चंडीगढ़
पुरुष	राकेश
पर्वत	हिमालय

4. जिन शब्दों से गुण, दशा, अवस्था या भाव आदि का बोध हो, वे भाववाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे- वीरता, कायरता, बचपन, ईमानदारी आदि।

(ङ) 1. बच्चा–बचपन 2. पशु–पशुत्व 3. गरीब–गरीबी 4. बूढ़ा–बुढ़ापा 5. मनुष्य–मानवता 6. कोमल–कोमलता 7. जवान–जवानी 8. गोरा–गोरापन 9. कठोर–कठोरता 10. चालाक–चालाकी 11. लड़का–लड़कपन 12. ईमानदार–ईमानदारी।

(च) 1. चिड़िया–जातिवाचक संज्ञा,

2. ईमानदार–भाववाचक संज्ञा,

3. हिमालय–व्यक्तिवाचक संज्ञा,

4. कानपुर–व्यक्तिवाचक संज्ञा

5. सोना–द्रव्यवाचक संज्ञा
6. सेना–समूहवाचक संज्ञा।
आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

6. लिंग

(क) 1. पुल्लिग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिग
(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗
(ग) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ)
(घ) 1. शब्द के जिस रूप से उसके स्त्री जाति अथवा पुरुष जाति के होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं। 2. पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द पुल्लिग कहलाते हैं। 3. स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं।
आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

7. वचन

(क) 1. घोड़े 2. खिलौने 3. क्यारियाँ 4. मक्खियाँ 5. मछलियाँ
(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓5. ✗
(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब)
(घ) 1. शब्द के जिस रूप से उसकी संख्या में एक या एक से अधिक होने का पता चलता है उसे वचन कहते हैं। वचन दो प्रकार के होते हैं। 1. एक-वचन–जैसे–पुस्तक, गेंद। बहुवचन–जैसे – पुस्तकें, गेंदें।
2. आदर प्रकट करने के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण–माताजी आ रही हैं।
3. (i) **समाचार**–आज समाचार आठ बजे प्रसारित होंगे। (ii) **बाल**–मेरे बाल बहुत छोटे हैं। (iii) **हस्ताक्षर**–क्या आपने हस्ताक्षर कर दिए हैं ?
(ङ) 1. धातु-धातुएँ 2. स्त्री-स्त्रियाँ 3. योजना–योजनाएँ 4. तितली–तितलियाँ
आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

8. कारक

(क) 1. ने 2. से 3. में 4. के 5. ने, को
(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓
(ग) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ)
(घ) 1. संज्ञा अथवा सर्वनाम का वह रूप जो अन्य शब्दों, विशेषत: क्रिया से अपना संबंध स्पष्ट करता है, कारक कहलाता है। जैसे–नीता ने चूहे को पिंजरे में बंद किया। यहाँ कारक के प्रयोग से चूहा व पिंजरा आदि संज्ञा शब्दों का रूप बदल गया और चूहा शब्द चूहे तथा पिंजरा शब्द पिंजरे में बदल गया। 2. कारक के आठ भेद हैं। कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण व संबोधन कारक।
3. जिसके लिए कार्य को किया जाए या जिसे कुछ दिया जाए, उस संज्ञा या सर्वनाम का कारक संप्रदान होता है। इसका चिह्न 'के लिए' है। उदाहरण–ये कपड़े आपके लिए हैं। ये फल मीना के लिए हैं।
4. जिस व्यक्ति या वस्तु पर क्रिया का प्रभाव पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। इसका कारक चिह्न 'को' है। उदाहरण–राम को आराम करने दो। पतंग को ढीला छोड़ो। 5. करण का चिह्न 'से' साधन की ओर संकेत करता है। किंतु अपादान का चिह्न 'से' पृथक् होने (अलग होने) का संकेत करता है।
आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

9. सर्वनाम

(क) 1. मैं 2. तू 3. वे 4. कोई 5. कुछ
(ख) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓
(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (अ)
(घ) 1. जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, सर्वनाम कहलाते हैं। **शर्मिला** मेरी बहन है। **वह** समझदार है। यहाँ संज्ञा शब्द शर्मिला के स्थान पर 'वह' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'वह' शब्द सर्वनाम है।
2. सर्वनाम के छ: भेद हैं। पुरुषवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, संबंधवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम, निजवाचक सर्वनाम। पुरुषवाचक सर्वनाम के भेद–1. उत्तम पुरुष 2. मध्यम पुरुष। 3. अन्य पुरुष
3. मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रयोग सुनने वाले या जिससे बात की जाती है, उसके लिए प्रयोग किया जाता है। जिसके विषय में बात की जाती है उसे अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। उदाहरण–**तुम** यहाँ कब आओगे? (मध्यम पुरुष-वाचक सर्वनाम)
वह कल दिल्ली जाएगा। (अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम)
4. जो सर्वनाम निकट या दूर की किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत करते हैं, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे–**वह** मेरा मित्र

है। **यह** कपड़े की दुकान है।

5. जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का पता नहीं चलता, वहाँ अनिश्चियवाचक सर्वनाम होता है; जैसे–**कोई** तुम्हें बुला रहा है। **कुछ** तो बना लाओ।

6. निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराने वाले सर्वनाम निश्चयवाचक और अनिश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध कराने वाले सर्वनाम अनिश्चितवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

(ङ) 1. वह–निश्चयवाचक सर्वनाम 2. जिसकी, उसकी–संबंधवाचक सर्वनाम 3. कुछ–अनिश्चयवाचक सर्वनाम 4. स्वयं–निजवाचक सर्वनाम 5. आप–मध्यम पुरूषवाचक सर्वनाम, कब–प्रश्नवाचक सर्वनाम

(च) 1. उसने पुस्तक पढ़ ली है। 2. मैंने अपना नाम लिख दिया है। 3. अब मुझे अपना काम करना होगा। 4. वह चार बजे आया था, पर अभी सो रहा है। 5. मैंने जो कहा वह किसी ने सुना तो नहीं। 6. तुम्हें क्या चाहिए ? 7. किसने तुम्हारी पुस्तक ली है? 8. उसने खाना खा लिया है।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

10. विशेषण

(क) 1. भार 2 से पहले 3. की संख्या 4. संज्ञाओं

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (अ)

(घ) 1. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं; जैसे–सफेद कमीज। यहाँ सफेद शब्द संज्ञा 'कमीज' की विशेषता बताने के कारण विशेषण कहलाएगा।

2. विशेषण पाँच प्रकार के होते हैं–गुणवाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, संकेतवाचक विशेषण, व्यक्तिवाचक विशेषण; **व्यक्तिवाचक विशेषण**–जो विशेषण व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से बनाए जाते हैं, उन्हें व्यक्तिवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–नागपुरी संतरे बड़े रसीले होते हैं।

3. जिस शब्द की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं।

4. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या बताते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–चार कमीजें, पाँच रास्ते आदि।

5. जो शब्द किसी वस्तु की माप-तौल बताते हैं, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे–थोड़ा पानी, दो मीटर कपड़ा आदि।

(ङ) 1. पुरानी 2. थोड़े 3. तीन 4. बनारसी 5. मधुर

(च) 1. रुपए 2. लोमड़ी 3. पहाड़ 4. पानी 5. फूल 6. चाय

(छ) 1. (द) 2. (य) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब)

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

11. क्रिया

(क) 1. हथियाना 2. पढ़वाया 3. चला गया 4. बुलवाया

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)

(घ) 1. जिस शब्द से किसी काम का करना या होना पाया जाता है, उसे क्रिया कहते हैं; जैसे–चलना, हँसना, गाना आदि।

2. क्रिया का मूल रूप धातु कहलाता है।

3. जिस क्रिया के साथ कर्म की आवश्यकता होती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे–निधि पुस्तक पढ़ती है। (क्या पढ़ती है? पुस्तक-कर्म)

4. जिस क्रिया के साथ कर्म की आवश्यकता नहीं होती, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे–हाथी नहाता है। (क्या नहाता है?) 5. जब दो या दो से अधिक क्रियाएँ मिलाकर प्रयोग की जाएँ, तो वह संयुक्त क्रिया कहलाती है; जैसे– श्याम बोलता चला गया। 6. प्रेरणार्थक क्रिया जब कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे से उस कार्य को करवाता है; ऐसी क्रिया को प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं, नामधातु क्रिया संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण शब्दों से बने क्रियापदों को नामधातु क्रिया कहते हैं।

(ङ) 1. खाया-सकर्मक 2. खेल-अकर्मक
3. जाएँगे-सकर्मक 4. पकड़-सकर्मक
5. दिए-सकर्मक 6. गाया-सकर्मक
7. पढ़ती-अकर्मक 8. भौंका-अकर्मक

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

12. काल

(क) 1. जाओगे 2. पिया 3. चला गया 4. रहा हूँ 5. गया था 6. रहा है

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) 5. (अ)

(घ) 1. क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने या करने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते हैं। ये तीन प्रकार के होते हैं–भूतकाल, वर्तमान काल व भविष्यत् काल।

2. क्रिया के जिस रूप से यह प्रकट हो कि कार्य बीते हुए समय में हुआ है, उसे भूतकाल कहते हैं। उदाहरण–कल वर्षा हुई थी। सचिन सो गया।

3. क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कार्य अभी जारी है, उसे वर्तमान काल कहते हैं। उदाहरण–मैं खाना खाता हूँ। हवा चल रही है।

4. आगे आने वाले समय को भविष्यत् काल कहते हैं। इस काल की क्रिया में गा गे गी आदि जुड़े रहते हैं। जैसे–मैं दिल्ली जाऊँगा। हम खूब खेलेंगे।

(ङ) 1. वर्तमान काल 2. वर्तमान काल 3. भविष्यत् काल 4. भूतकाल 5. वर्तमान काल 6. भूतकाल 7. भूतकाल 8. भूतकाल 9. भूतकाल 10. वर्तमान काल 11. भूतकाल 12. भविष्यत् काल

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

13. अविकारी शब्द

(क) 1. जल्दी-जल्दी 2. बहुत 3. आज शाम

(ख) 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)

(ग) 1. जो शब्द सदैव एक-सी स्थिति में रहते हैं, अविकारी शब्द कहलाते हैं। इसके चार भेद हैं–क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक।

2. क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रियाविशेषण कहते हैं।

3. जो अविकारी शब्द संज्ञा या सर्वनाम के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से बताएँ, उन्हें संबंधबोधक अव्यय कहते हैं।

4. जो अविकारी शब्द दो शब्दों, वाक्यांशों या उपवाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। प्रमुख समुच्चयबोधक अव्यय हैं–और, व, या, क्योंकि तथा, कि, परंतु, नहीं, तो, ताकि, इसलिए आदि।

5. जो शब्द हर्ष, शोक, आश्चर्य, करुणा आदि के भाव प्रकट करते हैं, विस्मयादिबोधक शब्द कहलाते हैं; जैसे–हाय! मैं लुट गया। वाह! कितनी बढ़िया सुगंध है।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

14. विराम-चिह्न

(क) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(ख) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (अ)

(ग) 1. लिखते समय रुकने का संकेत देने के लिए तथा कथन का आशय समझाने के लिए प्रयोग किए जाने वाले चिह्नों को विराम चिह्न कहते हैं।

2. भाषा में वाक्यों का अर्थ सही रूप में समझाने के लिए विराम चिह्नों की आवश्यकता पड़ती है।

3. हिन्दी में प्रमुख रूप से पूर्ण विराम, अल्पविराम, प्रश्नसूचक-चिह्न, विस्मयादिबोधक-चिह्न, उद्धरण-चिह्न, योजक-चिह्न तथा निर्देशक-चिह्न की आवश्यकता पड़ती है।

(घ) 1. (द) 2. (स) 3. (य) 4. (ब) 5. (अ)

(ङ) सुमन, निधि और मोना बाजार गईं।
शाबाश! तुम बढ़िया खेले।
तुम कहाँ रहते हो ?
हमने अपना काम कर लिया है।
माँ ने पूछा–"तुमने दवाई पी या नहीं।"

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

15. शब्द-भंडार

(क) 1. हानि 2. निराशा 3. व्यय 4. सच 5. अपमान

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब)

(घ) 1. परस्पर समान अर्थ रखने वाले शब्द को पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

2. एक-दूसरे से विपरीत अर्थ बताने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं।

3. अनेक शब्दों के लिए कभी-कभी एक शब्द लिखना भी पर्याप्त होता है। ऐसे शब्द ही वाक्यांश के लिए एक शब्द के नाम से जाने जाते हैं। जैसे–सोहन **काम से जी चुराता** है। (सोहन **कामचोर** है।)

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

16. मुहावरे

1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (अ)

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

अराध्या व्याकरण-4

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. देवनागरी 2. गुरुमुखी 3. हिन्दी 4. लिपि 5. बोली

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) 5. (स)

(घ) 1. भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों के सामने प्रकट करता है और दूसरों के विचार स्वयं समझता है।

2. भाषा के दो रूप होते हैं 1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा–1. **मौखिक भाषा**–मुख से जो कुछ बोला तथा कानों से सुना जाता है, वह भाषा का मौखिक रूप है। 2. **लिखित भाषा**–अपने भावों या विचारों को लिखकर प्रकट करना भाषा का लिखित रूप है।

3. भाषा के लिखित रूप द्वारा भाव या विचारों को दीर्घकाल तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

4. बोलते समय मुख से अनेक ध्वनियाँ निकलती हैं। इन ध्वनियों को लिखने के लिए कुछ चिह्न निर्धारित किए जाते हैं। उन चिह्नों को लिखने की रीति लिपि कहलाती है। हिन्दी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।

5. व्याकरण वह भाषा है जिसकी सहायता से व्यक्ति शुद्ध लिखना, पढ़ना तथा बोलना सीखता है।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

2. वर्ण-विचार

(क) 1. अयोगवाह 2. स्वरों 3. अनुस्वार 4. विसर्ग 5. अंत:स्थ

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (अ) 5. (स)

(घ) 1. वह छोटी-से-छोटी ध्वनि जिसके और टुकड़े न किए जा सकें वर्ण कहलाती है। दो भेद हैं- 1. स्वर 2. व्यंजन

2. जिन वर्णों के उच्चारण में मुख से निकलने वाली वायु बिना किसी रुकावट के मुख से बाहर निकल जाए, उन्हें स्वर कहते हैं। शब्द-रचना में व्यंजनों के बाद आने वाले स्वर का रूप परिवर्तित हो जाता है। इस परिवर्तित रूप को मात्रा कहते हैं।

3. स्वर दो प्रकार के होते हैं-1. ह्रस्व स्वर 2. दीर्घ स्वर। **ह्रस्व स्वर** - जिन स्वरों के उच्चारण में समय कम लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। अ, इ, उ और ऋ ह्रस्व स्वर हैं। **दीर्घ स्वर** - जिन स्वरों के उच्चारण में अधिक समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। आ, ऊ, ई, ए, ऐ, ओ, औ आदि दीर्घ स्वर हैं।

4. व्यंजन को तीन वर्गों में बाँटा जाता है - 1. स्पर्श व्यंजन 2. अंत:स्थ व्यंजन 3. ऊष्म व्यंजन। **स्पर्श व्यंजन** - जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ मुख के विभिन्न स्थानों का स्पर्श करती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। उदाहरण : क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग आदि। **अंत:स्थ व्यंजन** - जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय जीभ मुख के किसी भाग से पूरी तरह स्पर्श नहीं करती, उन्हें अंत:स्थ व्यंजन कहते हैं। उदाहरण : य, र, ल, व। **ऊष्म व्यंजन** - इनका उच्चारण करते समय हवा के तेज गति से मुँह से रगड़ खाने के कारण ऊष्मा सी पैदा होती है। इन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। उदाहरण : श, ष, स, ह।

(ङ) संयुक्त व्यंजन–क्षमा, यज्ञ, श्रवण, पत्र

द्वित्व व्यंजन–भट्टी, पत्ता, मक्का, छप्पर, खच्चर, छत्ता।

(च) 1. रंग–अनुस्वार 2. आँख–अनुनासिक 3. मंच–अनुस्वार 4. साँच– अनुनासिक 5. डंडा–अनुस्वार 6. टाँग–अनुनासिक

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

3. शब्द-विचार

(क) 1. पर्यायवाची 2. प्रचलित 3. तत्सम 4. तत्सम 5. देशज

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (अ) 5. (स)

(घ) 1. दो या दो से अधिक वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं।

2. शब्द जब किसी वाक्य में प्रयुक्त होते हैं तो वे पद कहलाते हैं।

3. शब्द वर्णों के मेल से बनते हैं जबकि पद शब्दों के वाक्य में प्रयुक्त होने के बाद बनते हैं।

4. अर्थ के आधार पर- (i) पर्यायवाची (ii) एकार्थी शब्द (iii) अनेकार्थी शब्द (iv) विलोमार्थी शब्द

5. रचना के आधार पर शब्द के तीन भेद हैं–1. रूढ़ शब्द 2. यौगिक शब्द 3. योगरूढ़ शब्द

6. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के चार भेद होते हैं। 1. तत्सम 2. तद्भव 3. देशज 4. विदेशी या आगत।

7. ऐसे शब्द जिनके रूप वाक्य में प्रयुक्त लिंग, वचन व कारक के अनुसार बदल जाते हैं, विकारी शब्द कहलाते हैं। ये चार होते हैं– संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया।

8. ऐसे शब्द जिन्हें वाक्य में प्रयोग करने पर भी उनका रूप नहीं बदलता, अविकारी शब्द कहलाते हैं। ये हैं– क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक।

(ङ) सार्थक शब्द– माथा, मछली, बाल, गाड़ी, चाय, खाना।

निरर्थक शब्द– वाथा, वछली, वाल, वाड़ी, वाय, वाना।

(च) रूढ़ शब्द–घोड़ा, लड़का, हाथी, बकरी।

यौगिक शब्द–सेनापति, पाठशाला, गौशाला, राष्ट्रपति।

योगरूढ़ शब्द–निशाचर, पंकज, आस्तिक, नास्तिक

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

4. शब्द-भंडार

(क) 1. **गंगा**–सुरनदी, जाह्नवी, देवपगा। 2. **घर**– अयन, आगार, आवास 3. **कंगाल**–गरीब, दीन, निर्धन 4. **वृक्ष**– तरु, पादप, पेड़ 5. **आकाश**– नभ, व्योम, गगन

(ख) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ) 6. (ब)

(ग) 1. जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

2. एक दूसरे के विपरीत अर्थ बताने वाले शब्दों को विलोम शब्द कहते हैं।

3. शब्दों के समूह के लिए एक शब्द का प्रयोग करना, वाक्यांश के लिए एक शब्द कहलाता है।

4. प्राय: पर्यायवाची शब्दों का अर्थ लगभग समान होता है परंतु कुछ शब्दों के अर्थ में थोड़ा भेद होता है। ऐसे शब्द एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द होते हैं।

(घ) 1. सचेत 2. शाप 3. दाता 4. कुमति 5. सुंदर 6. अधिक

(ङ) 1. अष्टभुजी 2. आजीवन 3. अनाथालय 4. गोपनीय 5. पूजनीय

(च) 1. कर्म 2. ग्राम 3. दंत 4. मस्तक 5. कूप 6. मृत्यु

(छ) 1. कटि-कमर 2. परिणाम-नतीजा
कीट-कीड़ा परिमाण-मात्रा
3. मेघ-बादल 4. उधार-कर्ज
मेध-यज्ञ उद्धार-मुक्ति

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

5. संज्ञा

(क) 1. बच्चा 2. दूध 3. पक्षी 4. पानी 5. रात

(ख) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब)

(ग) 1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव या अवस्था के नाम को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा के पाँच भेद होते हैं–1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा 3. भाववाचक संज्ञा 4. समूहवाचक संज्ञा 5. पदार्थवाचक संज्ञा

2. जिन संज्ञा शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु व स्थान का बोध होता है, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरण : राम, कृष्ण, ताजमहल आदि।

3. जिन संज्ञा शब्दों से एक ही जाति अथवा वर्ग के सभी प्राणियों, वस्तुओं अथवा स्थानों आदि का बोध हो, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरण–शहर, गाय।

4. जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी अथवा पदार्थ के गुण, दोष, अवस्था या दशा का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे–बचपन, मिठास।

5. जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी या वस्तु के समूह का बोध होता है, उन्हें समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरण–पुस्तकालय, भीड़।

6. जिन संज्ञा शब्दों से पदार्थ का बोध होता है, उन्हें पदार्थवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- सोना, पारा आदि।

(घ) 1. नेतृत्व 2. मातृत्व 3. शिक्षा 4. कठोरता 5. थकावट 6. आलस्य 7. दौड़ 8. वीरता 9. निकटता 10. परायापन 11. तेजी 12. स्वत्व

(ङ) 1. आगरा 2. चेतक महाराणा प्रताप 3. भारतवर्ष 4. राधा, पिंकी 5. रामचरितमानस, तुलसीदास।

(च) 1. शेर 2. हाथी 3. बिल्ली 4. केले 5. कबूतर

(छ) 1. ध्यान, पढ़ाई-लिखाई। 2. गरीबी, ईमानदारी 3. भलाई 4. मित्रता 5. बुराई

(ज) सुख-दुख–हर व्यक्ति के जीवन में

सुख-दुख तो आता ही है।

सोना-चाँदी–सोना-चाँदी का प्रयोग आभूषणों में किया जाता है।

रात-दिन–जो रात-दिन मेहनत करता है, उसे सफलता अवश्य मिलती है।

माता-पिता–हमें माता-पिता का सम्मान करना चाहिए।

भाई-बहन–सोनू और मोनी भाई-बहन हैं।

आओ सीखें-स्वयं कीजिए।

6. लिंग

(क)1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. कवयित्री 5. स्त्रीलिंग

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(ग)1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)

(घ) 1. संज्ञा में विकार निम्न कारणों से होता है। (1) लिंग के कारण (2) वचन के कारण (3) कारक के कारण

2. शब्द के जिस रूप से यह बोध हो कि वह शब्द पुरुष जाति के लिए प्रयोग किया गया है या स्त्री जाति के लिए, उसे लिंग कहते हैं। जैसे–लड़का, लड़की।

3. शब्द के जिस रूप से स्त्री या मादा जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं। उदाहरण–लड़की, गाय, बकरी।

4. शब्द के जिस रूप से पुरुष या नर जाति का बोध होता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं। उदाहरण–लड़का, कुत्ता, वर।

(ङ) 1. मामीजी शहर गयी हैं। 2. धोबिन कपड़े धोएगी। 3. नौकरानी सफाई करेगी।

(च) 1. नर मकड़ी 2. सेठ 3. नायक 4. चीता 5. आचार्य 6. युवक 7. मेहतर 8. ठाकुर 9. उल्लू 10 माली 11. नर कोयल 12. रस्सा

(छ) 1. माँ 2. ऊँटनी 3. गधी 4. वीरांगना 5. छात्रा 6. स्त्री 7. बुढ़िया 8. गायिका 9. देवरानी 10. मक्खी

(ज) 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. स्त्रीलिंग 4. पुल्लिंग 5. पुल्लिंग 6. पुल्लिंग 7. स्त्रीलिंग 8. स्त्रीलिंग 9. स्त्रीलिंग 10. स्त्रीलिंग 11. पुल्लिंग 12. पुल्लिंग

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

7. वचन

(क) 1. स्त्रियाँ 2. लड़कियाँ 3. लताएँ 4. कुत्ते 5. कौए

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब)

(ङ) स्वयं कीजिए।

(घ) 1. शब्द के जिस रूप से उसकी संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं।

2. शब्द के जिस रूप से किसी एक प्राणी, वस्तु, स्थान आदि का बोध होता है उसे एकवचन कहते हैं।

3. शब्द के जिस रूप से एक से अधिक प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं।

4. (1) स्त्रीलिंग शब्दों के अंतिम स्वर 'अ' के स्थान पर 'ऐं' कर देने से–गाय से गायें

(2) स्त्रीलिंग शब्दों के अंतिम स्वर 'आ' के बाद 'एँ' जोड़ देने से–माता से माताएँ

(3) अंतिम वर्ण 'या' के ऊपर चंद्रबिंदु लगाने से–चुहिया से चुहियाँ।

(च) 1. खूँटी–खूँटियाँ 2. केला–केले

3. नाला–नाले 4. सभा–सभाएँ 5. घोड़ा–घोड़े

6. ध्वनि–ध्वनियाँ 7. ठप्पा–ठप्पे 8. चींटी–चींटियाँ

(च) स्वयं कीजिए।

आओ सीखें। स्वयं कीजिए।

8. कारक

(क) 1. पर 2. की 3. को 4. पर 5. से

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ)

(घ) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया के साथ जाना जाता है, इसे कारक कहते हैं।

2. संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का क्रिया से संबंध प्रकट करने वाले शब्दों को कारक चिह्न या परसर्ग कहते हैं।

3. कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक, संबोधन कारक।

(ङ) 1. संबंध कारक 2. अधिकरण कारक 3.

संबोधन कारक 4. अधिकरण कारक 5. करण कारक 6. अपादान कारक 7. संप्रदान कारक 8. हरि – कर्ता कारक, राम – कर्म कारक

(च) 1. अंशुल ने पुस्तक पढ़ी। 2. अमित ने सुनंदा को देखा। 3. बंदर छत से कूद पड़ा। 4. भक्त देवता के लिए पुष्प लाया। 5. चिड़िया पेड़ पर बैठी है। 6. मैं बस के द्वारा दिल्ली गया।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

9. सर्वनाम

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(ग) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ)

(घ) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

2. सर्वनाम के छः भेद होते हैं–1. पुरुषवाचक सर्वनाम 2. प्रश्नवाचक सर्वनाम 3. निश्चयवाचक सर्वनाम 4. सम्बन्धवाचक सर्वनाम 5. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 6. निजवाचक सर्वनाम

3. जो सर्वनाम किसी पुरुष के नाम के स्थान पर प्रयोग में लाए जाते हैं, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं, जैसे–मैं, वे, हम, तुम, आप।

4. निश्चयवाचक सर्वनाम दूर या पास की वस्तु की ओर संकेत करता है जबकि अनिश्चयवाचक में ऐसा नहीं है।

5. जो सर्वनाम एक शब्द के दूसरे सर्वनाम शब्दों के साथ सम्बन्ध दर्शाते हैं, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं।

6. (स्वयं करें)

(ङ) 1. मैं, उत्तम पुरुष 2. जो/वही, अन्य पुरुष 3. वह, अन्य पुरुष 4. वह, अन्य पुरुष 5. तुम, मध्यम पुरुष

(च) 1. स्वयं–निजवाचक सर्वनाम 2. कोई–अनिश्चयवाचक सर्वनाम 3. कौन–प्रश्नवाचक सर्वनाम 4. मैं–पुरुषवाचक सर्वनाम 5. यह–निश्चयवाचक सर्वनाम

(छ) 1. वे लोग आ गए हैं। 2. यह किसका सामान है? 3. मैं किसी आदमी को नहीं जानता। 4. जिस आदमी ने यह बात कही, वह झूठा है। 5. मैं अपना काम कर रहा हूँ। 6. तू अपना काम कर। 7. मुझे वहाँ जाना है। 8. मैं प्रथम आया तो तुझे दुख क्यों हुआ ?

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

10. विशेषण

(क) 1. विषैला 2. वैज्ञानिक 3. दोषी 4. बुद्धिमान 5. भारतीय

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) 5. (स)

(घ) 1. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताएँ, उन्हें विशेषण कहते हैं।

2. विशेषण के मुख्यतः पाँच भेद होते हैं–1. गुणवाचक 2. परिमाणवाचक 3. संख्यावाचक 4. संकेतवाचक 5. व्यक्तिवाचक

3. जिस शब्द की विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं।

4. जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दशा, स्वभाव आदि का बोध हो, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

5. जो विशेषण किसी वस्तु की नाप-तौल या मात्रा बताते हैं, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे–मुझे थोड़ा अनाज दो।

6. जो विशेषण संज्ञा अथवा सर्वनाम की संख्या बताते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; उदाहरण–मैंने पाँच पैंसिल खरीदीं।

(ङ) 1. सफेद 2. तीन किलो 3. काले 4. ईमानदार 5. असंख्य 6. कुछ

(च) रंग–काला, हरा, नीला
आकार–लम्बा, नुकीला, गोल
गुण–अच्छा, सच्चा, दानी

(छ) स्वयं कीजिए।

(ज) 1.निकटतम–उत्तमावस्था 2. तीव्र–मूलावस्था 3. योग्य–मूलावस्था 4. सुंदर–मूलावस्था 5. अधिक–मूलावस्था 6. मधुरतम–उत्तमावस्था 7. कोमलतर–उत्तरावस्था 8. महानतर–उत्तरावस्था 9. श्रेष्ठतम–उत्तमावस्था 10. प्रियतर–उत्तरावस्था 12. उच्च–मूलावस्था 11.अधिकतम–उत्तमावस्था

(झ) मूल विशेषण – कुछ शब्द अपने मूल रूप में ही विशेषण होते हैं; जैसे – अच्छा, बुरा, काला, गोरा आदि।

यौगिक विशेषण - एक से अधिक शब्दों से मिलकर बने विशेषण यौगिक विशेषण कहलाते हैं; जैसे - बहुत अच्छा, बहुत सुंदर आदि।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

11. क्रिया तथा काल

(क) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(ख) 1. करो 2. कर लिया है 3. किया

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (स) 6. (ब) 7. (अ) 8. (स) 9. (अ) 10. (स)

(घ) 1. जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का पता चलता है, उन्हें क्रिया कहते हैं।

2. क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं।

3. जब वाक्य में क्रिया के साथ कर्म भी हो तो क्रिया को सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे–गाय घास चरती है।

4. सकर्मक क्रिया में कर्म होता है जबकि अकर्मक क्रिया में नहीं होता।

5. संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण आदि शब्दों से बनने वाली क्रिया को नामधातु क्रिया कहते हैं; उदाहरण–लज्जा-लजाना।

6. क्रिया के जिस रूप से कार्य के करने या होने का बोध हो, उसे काल कहते हैं। उपभेद- (1) सामान्य भूतकाल (2) आसन्न भूतकाल (3) पूर्ण भूतकाल (4) अपूर्णभूत (5) संदिग्ध भूत (6) हेतुहेतुमद् भूत।

(ङ) 1. भविष्यत् काल 2. संदिग्ध भूत 3. भविष्यत् काल 4. हेतु-हेतुमद् भूत 5. वर्तमान काल 6. अपूर्ण भूत

(च) 1. मैं स्कूल जाऊँगा। 2. दिनेश गेंद फेंक रहा है। 3. मोची जूते बनाता था।

(छ) 1. सकर्मक 2. सकर्मक 3. सकर्मक 4. अकर्मक 5. अकर्मक

(ज) 1. खेल रहा है। (खेल) 2. पकड़ता। (पकड़) 3. खाया। (खा) 4. लाई। (ला) 5. लिखूँगा। (लिख)

(झ) भूतकाल–क्रिया के जिस रूप से बीते हुये समय में कार्य के सम्पन्न होने का बोध होता है, उसे 'भूतकाल' कहते हैं। उदा० वह दौड़ी।

वर्तमान काल–क्रिया के जिस रूप से कार्य के वर्तमान समय में होने का बोध होता है, उसे 'वर्तमान काल' कहते हैं। उदा० मैं जा रहा हूँ।

भविष्यत् काल–क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में कार्य होने का बोध होता है, उसे 'भविष्यत् काल' कहते हैं। उदा० श्वेता कल भजन गाएगी।

प्रेरणार्थक क्रिया–जिन क्रियाओं में कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को प्रेरित करके कार्य करवाता है, उन्हें 'प्रेरणार्थक क्रियाएँ' कहते हैं। उदा० रोहन ने सतीश से पत्र लिखवाया।

नामधातु क्रिया–संज्ञा, सर्वनाम व विशेषण आदि शब्दों से बनने वाली क्रिया को नामधातु क्रिया कहते हैं। उदा० हाथ-हथियाना, लज्जा–लजाना, ठोकर–ठुकराना।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

12. अविकारी शब्द

(क) 1. व्यय 2. अविकारी 3. अव्यय 4. समय 5. रीतिवाचक 6. घृणा

(ख) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स) 6. (ब) 7. (स) 8. (ब) 9. (अ) 10. (ब)

(ग) 1. जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण कहते हैं। उदा० कम खाओ।

2. जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ जाना जाता है, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं। उदा०राम छत के ऊपर खड़ा था।

3. जो अविकारी शब्द दो शब्दों, दो वाक्यों अथवा वाक्यांशों को जोड़ने का कार्य करता है, उसे समुच्चयबोधक कहते हैं। उदा०–दो और दो चार होते हैं।

4. क्रियाविशेषण के भेद–(1) कालवाचक (2) स्थानवाचक (3) परिमाणवाचक (4) रीतिवाचक। जो क्रियाविशेषण क्रिया के होने का समय सूचित करते हैं, उन्हें कालवाचक कहते हैं। उदा०–वह कल आएगा।

5. जो क्रियाविशेषण क्रिया के स्थान या दिशा का ज्ञान कराए, उसे स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। उदा०–वह इधर नहीं आया।

6. जिन क्रियाविशेषणों से क्रिया की अधिकता, न्यूनता आदि परिमाण का पता लगे, उन्हें

परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। उदा०–वह बहुत हँसा।

(घ) 1. तेज 2. अचानक 3. सर्वत्र 4. आगे-आगे, पीछे-पीछे

(ङ) 1. से पहले 2. के आगे 3. के बिना 4. के मारे

(च) 1. और 2. अपितु 3. परंतु 4. या, या

(छ) 1. अरे-आश्चर्य 2. अहा-हर्ष 3. राम-राम–घृणा 4. अच्छा-अनुमति

(ज) **1. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण**–वह बहुत पढ़ता है। वह कम सोता है। **2. स्थानवाचक क्रियाविशेषण**–वह ऊपर बैठी है। तुम आगे चलो।

(झ) 1. अहा 2. अरे 3. छि: 4. अरे 5. हाय 6. वाह

(ञ) 1. चूँकि–उसने कल कार्य नहीं किया चूँकि वह कल बीमार था।

2. ताकि–उसने झूठ बोला ताकि वह तुम्हें बचा सके।

3. के बिना–विद्या के बिना मनुष्य पशु के समान है।

4. के सामने–घर के सामने मंदिर है।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

13. विराम-चिह्नों का प्रयोग

(क) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब) 6. (स)

(ख) 1. विवरण-चिह्न–(–) 2. कोष्ठक–(()), 3. प्रश्नवाचक–(?) 4. उद्धरण-चिह्न–('.....') 5. विस्मयादिबोधक-चिह्न–(!)

(ग) 1. बोलते या पढ़ते समय वाक्य के बीच में अथवा अन्त में रुकना पड़ता है। रुकने की इस प्रक्रिया को विराम कहते हैं।

2. बोलते या पढ़ते समय वाक्य के बीच में अथवा अंत में रुकना पड़ता है। रुकने से वाक्य का सही अर्थ समझने में सुविधा होती है। लिखते समय रुकने की इस प्रक्रिया को स्पष्ट करने के लिए कुछ संकेत-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। इन चिह्नों को विराम-चिह्न कहते हैं।

3. यदि विराम-चिह्न का प्रयोग न हो तो हम वाक्य को स्पष्ट रूप से नहीं समझ पायेंगे। उदा०–1. रुको मत जाओ। 2. रुको मत, जाओ। 3. रुको, मत जाओ।

4. पूर्ण-विराम सदैव वाक्य के अंत में लगाया जाता है जबकि अल्पविराम वाक्य के बीच में लगाया जाता है।

5. जब हम किसी से प्रश्न पूछते हैं, तब प्रश्न चिह्न प्रश्न के अंत में लगाया जाता है।

(घ) 1. प्रश्नवाचक-चिह्न–तुम्हारा क्या नाम है ?

2. विस्मयादिबोधक-चिह्न–अहा! कितना अच्छा मौसम है।

3. अल्पविराम–राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न भाई थे।

4. अर्धविराम–जल्दी चलो; अंधेरा हो गया है।

5. कोष्ठक–मोहन ने सारा सामान (थैला, अटैची, बिस्तर आदि) गाड़ी में लाद दिया है।

6. उद्धरण-चिह्न–नेताजी ने कहा था, ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।''

(ङ) 1. गुरुजी ने छात्रों से कहा, ''परिश्रम सफलता की कुंजी है।''

2. सतीश, दिनेश और राजीव कल तुम्हारे घर आएँगे।

3. गाँव में एक बूढ़ा व्यक्ति रहता था। उसके चार बेटे थे। उनमें मेल नहीं था। वे सदैव आपस में लड़ते रहते थे।

4. पुस्तक, कुत्ता तथा दिल्ली अथवा किसान पर एक अनुच्छेद लिखिए।

5. भीलराज - ''राजन्, आप क्या चाहते हैं?''
राजा–युद्ध।

6. तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना की।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

14. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब)

(ख) 1. जिन वाक्यांशों का सामान्य या शाब्दिक अर्थ न होकर विशिष्ट अर्थ होता है, वे मुहावरे कहलाते हैं।

2. लोगों में बहुप्रचलित कथन को लोकोक्ति कहते हैं।

3. लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है, जबकि मुहावरा वाक्यांश या खंड-वाक्य होता है।

(ग) स्वयं कीजिए।

(घ) 1. (स) 2. (र) 3. (द) 4. (य) 5. (ब)

6. (अ)

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

अराध्या व्याकरण-5

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. रोमन 2. बोली 3. मौखिक 4. वाक्यों 5. व्याकरण

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (स)

(घ) 1. जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों के सामने प्रकट करता है और दूसरों के विचार समझता है, उसे भाषा कहते हैं। 2. एक मनुष्य को अपने विचार दूसरे मनुष्य तक पहुँचाने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है। 3. व्याकरण की दृष्टि से भाषा के दो रूप हैं– 1. मौखिक भाषा 2. लिखित भाषा .. .. पढना और समझना। 4. भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं तथा ऐसे चिह्न जिन्हें हम भाषा लिखने में प्रयोग करते हैं, उनका समन्वित रूप लिपि कहलाता है। 5. व्याकरण के अध्ययन से मनुष्य किसी भाषा को शुद्ध लिखना, शुद्ध पढ़ना, शुद्ध बोलना सीखता है तथा भाषा पर नियंत्रण भी करना सीखता है।

(ङ) 1. मौखिक 2. लिखित 3. मौखिक 4. लिखित 5. लिखित

(च) 1. (द) 2. (य) 3. (व) 4. (अ) 5. (स)

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

2. वर्ण-विचार

(क) 1. स्वरों 2. वर्ण 3. कंठ 4. शब्द 5. क्रमिक

(ख) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) 5. (स)

(ग) 1. भाषा की सबसे छोटी ध्वनि के संकेत जिसके और टुकड़े ना किए जा सकें, वर्ण कहते हैं। 2. किसी भाषा में प्रयुक्त होने वाले सभी वर्णों के क्रमबद्ध समूह को वर्णमाला कहते हैं। 3. 1. ह्रस्व स्वर ..... दीर्घ स्वर कहते हैं। 4. जब किसी स्वर को किसी व्यंजन के साथ मिलाया जाता है, तो उसका रूप परिवर्तित हो जाता है। स्वर परिवर्तित रूप या चिह्न को मात्रा कहते हैं। 5. स्वर तथा व्यंजन से भिन्न ध्वनि होने के कारण इनका किसी से योग नहीं हैं इसलिए ये अयोगवाह कहलाते हैं। 6. संयुक्त व्यंजन– जब दो व्यंजनों के बीच .... क् + ख = क्ख = अक्खड़।

(घ) 1. अनुस्वार 2. अनुनासिक 3. अनुस्वार 4. अुनस्वार 5. अनुनासिक 6. अनुस्वार 7. अनुनासिक 8. अनुस्वार 9. अनुस्वार 10. अनुनासिक 11. अनुनासिक 12. अनुस्वार।

आओ सीखें– स्वयं कीजिए।

3. शब्द-विचार

(क) 1. एकार्थी 2. यौगिक 3. विकारी 4. निरर्थक 5. तीन

(ख) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)

(घ) 1. वर्णों या ध्वनियों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं। 2. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों को पाँच भागों में बाँटा गया है। (i) तत्सम शब्द (ii) तद्भव शब्द (iii) देशज शब्द (iv) विदेशी शब्द (v) संकर शब्द 3. व्युत्पत्ति से तात्पर्य है-बनावट। इस आधार पर शब्दों के तीन भेद किये जाते हैं। (i) तद्भव शब्द रूढ़ शब्द (ii) यौगिक शब्द (iii) योगरूढ़ शब्द उदाहरण- देश, हिमालय, चारपाई। (iv) अर्थ के आधार पर शब्दों को निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है (i) एकार्थी (ii) अनेकार्थी (iii) समानार्थी या पर्यायवाची (iv) विपरीतार्थी या विलोम। उदाहरण- गाय, उत्तर, जल और पानी, दिन व रात। 5. प्रयोग के आधार पर शब्दों को दो भागों में बाँटा गया है (i) विकारी शब्द (ii) अविकारी शब्द। उदाहरण- लड़के जाते हैं। लड़के धीरे-धीरे चल रहे हैं। 6. जब शब्द किसी वाक्य या वाक्यांश का भाग बन जाते हैं, तब शब्द पद कहलाते हैं। उदाहरण- हाथी-शब्द, पद-हाथी विशाल जानवर है।

(ङ) 1. योगरूढ़ शब्द- चारपाई, पंकज, पीतांबर, लंबोदर

2. रूढ़ शब्द- देश, हाथी, घोड़ा, मोर

3. विदेशी शब्द- बटन, मीटर, कैमरा, सिनेमा

4. देशज शब्द- रोटी, पानी, चाट, चुटकी

5. यौगिक शब्द- हिमालय, रसोईघर, विद्यालय,

पुस्तकालय
6. **मिश्रित** (संकर) शब्द-रेलगाड़ी
(च) 1. उजाला-उज्जवल 2. भीख-भिक्षा 3. घंटी-घंटिका 4. आज-अद्य 5. गाँव-ग्राम 6. चमड़ा-चर्म 7. घिन-घृणा 8. कपूर-कर्पूर 9. आधा-अर्ध 10. उल्लू-उलूक 11. चूरन-चूर्ण 12. अँधेरा-अंधकार 13. बाघ-व्याघ्र 14. शेर-सिंह
(छ) 1. विकारी शब्द परिवर्तित होते हैं जबकि और अविकारी शब्द परिवर्तित नहीं होते।
2. तत्सम और तद्भव शब्द में तत्सम, संस्कृत शब्द होते हैं जबकि तदभ्व हिन्दी शब्द होते हैं।

4. शब्द-रचना

(क) 1. पास-पास 2. शब्दों 3. ध्वनियों 4. पीछे 5. अपना
(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓
(ग) 1. (अ) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ) 6. (स)
(घ) 1. दो ध्वनियों के मेल को संधि कहते हैं उदाहरण- सदा + एव = सदैव। 2. दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से यौगिक शब्द बनाना समास कहलाता है। उदाहरण- कठपुतली। 3. शब्द-निर्माण के लिए शब्दों के पूर्व जो शब्दांश जोड़े जाते हैं वे उपसर्ग कहलाते हैं। उदाहरण- अज्ञान, अधर्म 4. नये शब्द की रचना हेतु मूल शब्दों के अंत में जो शब्दांश जोड़ा जाता है उसे प्रत्यय कहते हैं। उदाहरण- सिलाई, लिखाई।
(ङ) 1. विद्यालय 2. नयन 3. वनौषधि 4. स्वागत 5. कवीन्द्र 6. दिनेश 7. परोपकार 8. इत्यादि 9. सदैव 10. भानूदय।
(च) 1. परीक्षाभवन 2. कार्यकुशल 3. पथभ्रमित 4. हस्तलिखित 5. पिता-पुत्र 6. सेनापति 7. चौराहा 8. तुलसी रचित 9. जन्मांध 10. घुड़सवार
(छ) 1.वान 2. उ 3. आ 4. ला 5. गर 6. ईय
आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

5. लिंग

(क) 1. स्त्रीलिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. पुल्लिंग 5. स्त्रीलिंग
(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓
(ग) 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) 5. (स) 6. (अ)
(घ) 1. संज्ञा के जिस रूप से व्यक्ति या वस्तु, पुरूष या स्त्री होने का बोध होता है, उसे व्याकरण में लिंग कहते हैं। 2. निम्नलिखित दो प्रकार के लिंग माने जाते हैं ..... चाँदी, अध्यापिका, मोरनी आदि। 3. ई, इया, इका, आ, नी, इन, इनी, मती, वती, आनी, त्री, आइन।
(ङ) 1. धावक-पुल्लिंग 2. डंडा-पुल्लिंग 3. सुत-पुल्लिंग 4. नाविक-पुल्लिंग 5. पत्नी-स्त्रीलिंग 6. वधू-स्त्रीलिंग 7. मामा-पुल्लिंग 8. पुष्प-पुल्लिंग 9. घोड़ा - पुल्लिंग 10. कुत्ता-पुल्लिंग, 11. शिष्या-स्त्रीलिंग 12. नाग - पुल्लिंग 13. लुटिया - स्त्रीलिंग 14. कुर्सी - स्त्रीलिंग 15. कली - स्त्रीलिंग 16. सम्राट - पुल्लिंग 17. पंड़ितायन - स्त्रीलिंग 18. सामग्री - स्त्रीलिंग।
(च) ई - घोड़ी, पुत्री, बेटी, देवी
नी- रानी, पानी, नानी, दानी
इन- चौधराइन, पंडिताइन, ठकुराइन, हीरोइन
आओ सीखें– स्वयं कीजिए।

6. वचन

(क) 1. बच्चे 2. चादर 3. केले 4. शाखाओं 5. ताले
(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗
(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स)
(घ) 1. जिस शब्द से किसी वस्तु या पदार्थ के एक या अनेक होने का बोध होता हो, उसे वचन कहते हैं। वचन के दो भेद होते हैं (i) एकवचन (ii) बहुवचन। शब्द के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वस्तु या व्यक्ति आदि की संख्या एक है उसे एक वचन कहते हैं। उदाहरण- घोड़ा, पुस्तक, लड़का। शब्द के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वस्तुओं या व्यक्तियों

आदि की संख्या एक से अधिक हो, उसे बहुवचन कहते हैं। उदाहरण- लड़के, घोड़े आदि। 2. आदर प्रकट करने के लिए बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण- माता जी पूजा कर रही हैं। 3. व्यक्तिवाचक संज्ञा तथा भाववाचक संज्ञा को बहुवचन में प्रयोग किया जा सकता है, उदाहरण- देश में कभी दुर्योधनों की कमी नहीं रही।

(ङ) 1. बहुवचन 2. एकवचन 3. एकवचन 4. बहुवचन।

(च) 1. छात्रवृंद-छात्र 2. बहुएँ- बहू 3. गलियाँ-गली 4. सेनाएँ- सेना 5. पाठक वर्ग- पाठक 6. ध्वनियाँ- ध्वनि।

(छ) 1. चिड़िया-चिड़ियों 2. चूहा-चूहे 3. कन्या-कन्याएँ 4. रात-रातें 5. कुर्सी- कुर्सियाँ 6. दीवार-दीवारें।

आओ सीखें– स्वयं कीजिए।

7. संज्ञा

(क) 1. खटास 2. विनम्रता 3. सज्जनता 4. सफलता 5. पढ़ाई

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ) 6. (स)

(घ) 1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। राम, मेरठ आदि। 2. संज्ञा के निम्नलिखित भेद हैं-1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा 3. भाववाचक संज्ञा। 4. समूहवाचक संज्ञा 5. पदार्थवाचक संज्ञा

3. व्यक्तिवाचक संज्ञा- किसी विशेष .... भगत सिंह आदि। जातिवाचक संज्ञा ..... पेड़, किताब आदि।

4. जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी या वस्तु के गुण, दशा, कार्य भाव आदि का बोध होता है। उदाहरण- लंबाई, चौडाई। 5. जिन संज्ञा शब्दों से किसी समूह, समुदाय या झुंड का बोध होता है। उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरण- सेना, भीड़ आदि। 6. जिन संज्ञा शब्दों से पदार्थ का बोध हो, उन्हें पदार्थवाचक संज्ञा कहते हैं। उदाहरण- सोना, आटा आदि।

(ङ) 1. व्यक्तिवाचक संज्ञा- मोहन, हिमालय
2. जातिवाचक संज्ञा - किला, पहाड़
3. भाववाचक संज्ञा - ऊँचाई, बचपन
4. पदार्थवाचक संज्ञा - दूध, चाँदी
5. समूहवाचक संज्ञा - परिवार, सेना

(च) 1. समीप-समीपता 2. चुनना-चुनाव 3. मीठा-मिठास 4. तेज-तेजी 5. जल्दी-जल्दबाजी 6. दूर-दूरी 7. निज-निजता 8. भाई-भाईचारा।

आओ सीखें– स्वयं कीजिए।

8. सर्वनाम

(क) 1. मुझे 2. किसने 3. तुझे, तू 4. उसे, वह 5. आपको, आप

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (अ)

(घ) 1. जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाते हैं, उन्हें 'सर्वनाम' कहते हैं। उदाहरण- तुम, वह। 2. बात कहने वाला या लिखने वाला व्यक्ति अपने नाम के बदले जिन सर्वनाम का प्रयोग करता है, उसे उत्तम पुरूष कहते हैं। उदाहरण- मैं, हम आदि। 3. जो सर्वनाम शब्द बात सुनने वाले के नाम के बदले प्रयुक्त किये जाते हैं, उन्हें मध्यम पुरुष कहते हैं। उदाहरण- तू, तुम आदि। 4. अन्य पुरुष- बोलने या लिखने वाले जिसके बारे में बात करे या लिखें, उसके नाम के बदले प्रयोग किए जाने वाले सर्वनाम अन्य पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं; वह, वे, वे लोग, उसे, उन्हें, उन्होंने, उसने आदि।

5. **निश्चयवाचक सर्वनाम** - जो सर्वनाम किसी व्यक्ति अथवा वस्तु की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करें, वह निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाता है। जैसे- यह मेरा घर है। 6. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** - जिस सर्वनाम से किसी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ का निश्चित बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे- कोई, कुछ आदि। 7. जिस सर्वनाम से प्रश्न पूछने का बोध होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- तुम कौन हो? 8.

निजवाचक – 'आप' स्वयं के लिये प्रयोग होता है जबकि पुरुषवाचक – 'आप' दूसरे व्यक्ति को सम्मान देने के लिये प्रयोग होता है।

(ङ) 1. उसका घर मेरे घर के पास है। 2. मुझे अभी जाना है। 3. उसने बस पकड़ ली। 4. किसी को दादाजी की चिंता नहीं है। 5. कमरे में कोई है।

(च) 1. जिसकी, उसकी- संबंधवाचक
2. खुद- निजवाचक
3. जो, सो- संबंधवाचक
4. मुझे- पुरुषवाचक
5. कौन है- प्रश्नवाचक
6. कुछ, क्या – अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक

(छ) मोहन से उसके पिताजी ने कहा कि उसे उसके मामा के यहाँ जयपुर भेज दिया जाएगा।

आओ सीखें- स्वयं कीजिए।

9. विशेषण

(क) 1. धार्मिक 2. बिकाऊ 3. जंगली 4. बनारसी 5. विषैला

(ख) 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) 5. (स)

(ग) 1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं। उदाहरण- मोटा।

2. विशेषण जिन शब्दों की विशेषता बताते हैं उन्हें विशेष्य कहते हैं। उदाहरण- लड़का। **लड़का** मोटा है। 3. जो पद विशेषण की विशेषता बताते हैं उन्हें प्रविशेषण कहते हैं। उदाहरण-शेर बहुत शक्तिशाली है। 4. गुणवाचक विशेषण-जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रंग, आकार तथा दशा आदि का बोध कराते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे- शीना सुंदर लड़की है।

5. **निश्चित परिमाणवाचक**- इन विशेषणों से वस्तु या पदार्थ की निश्चित मात्रा का बोध होता है। **अनिश्चित परिमाणवाचक**- इन विशेषणों से वस्तु या पदार्थ की मात्रा (नाप-तौल आदि) का निश्चित बोध नहीं होता।

(घ) 1. सड़ियल 2. योगी 3. साप्ताहिक 4. रोगी 5. सामाजिक 6. दैनिक

(ङ) 1. सर्वनाम- मुझे
2. सार्वनामिक विशेषण-आपकी
3. सार्वनामिक विशेषण- वे
4. सार्वनामिक विशेषण- वह

(च) 1. बहुत 2. ज्यादा 3. बिल्कुल 4. बहुत

आओ सीखें– स्वयं कीजिए।

10. कारक

(क) 1. पर 2. पर 3. पर, से, के, में 4. का, से 5. ने।

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) 5. (स)

(घ) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने का बोध होता है, उसे कारक कहते हैं। उदाहरण- आदित्य ने अपना जन्मदिन मनाया। 2. वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम शब्दों का क्रिया से संबंध प्रकट करने वाले शब्द-चिह्नों को कारक कहते हैं। 3. कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, संबंध, अधिकरण, संबोधन

(ङ) 1. कपिल को खाना दो। 2. हम रेलगाड़ी के द्वारा मुंबई गए। 3. खाना मेज पर रख दो। 4. रीना की दो बहनें हैं। 5. पेड़ पर कोयल बैठी है।

(च) 1. संप्रदान 2. संबोधन 3. संबंध 4. करण 5. करण 6. अपादान।

(छ) **1. कर्ता कारक**- 'कर्ता' का अर्थ है 'करनेवाला'। जो कई क्रिया करता है, उसे क्रिया का कर्ता कहा जाता है; जैसे मोहन ने गीत गाया। यहाँ क्रिया मोहन द्वारा संपादित हुई। अत: मोहन क्रिया का कर्ता है तथा वाक्य में मोहन कर्ताकारक है।

2. कर्म कारक- सकर्मक क्रिया वाले वाक्यों में क्रिया का प्रभाव जिस पर पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं।

3. करण कारक- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के साधन का बोध होता है, उसे करण कारक कहते हैं।

4. संप्रदान कारक- जिसके लिए कुछ दिया जाये, उसे संप्रदान कारक कहते हैं।

5. आपादान कारक- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से 'अलग होने' का अर्थ प्रकट होता है, उसे अपादान कारक कहते हैं।

6. संबंध कारक- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से

उसका संबंध (लगाव, स्वत्व, अपनापन) किसी प्राणी या वस्तु से ज्ञात हो, उसे संबंध कारक कहते हैं।

(ज) 1. कर्ता- ने। 2. कर्म- को। 3. करण- से, के द्वारा। 4. संप्रदान- के लिये, को। 5. आपादान- से अलग होना। 6. संबंध- का, की, के, ना, नी, ने, रा, री, रे। 7. अधिकरण- में, पे, पर। 8. संबोधन- हे, अरे, ओ।

आओ सीखें– स्वयं कीजिए।

11. क्रिया

(क) 1. खाती हैं 2. धोए 3. बनाया 4. हो 5. पड़ती है।

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स)

(घ) 1. किसी काम के करने अथवा होने का बोध कराने वाले पदों को 'क्रिया' कहते हैं। उदाहरण- खेलना। 2. क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं। 3. कर्म की दृष्टि से क्रिया के दो भेद हैं (1) अकर्मक क्रिया (2) सकर्मक क्रिया। 4. वाक्य में मुख्य क्रिया के अतिरिक्त जो अन्य क्रियाएँ प्रयुक्त होती हैं, उन्हें सहायक क्रिया कहते हैं। उदाहरण - है, था आदि। 5. जिन क्रिया के दो कर्म होते हैं, उन्हें द्विकर्मक क्रिया कहते हैं। उदाहरण- संदीप ने दिनेश को पुस्तक दी। 6. अपूर्ण क्रिया के अर्थ को पूर्ण करने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है; उन्हें पूरक कहते हैं। उदाहरण- मैं उसे देख लूँगा।

(ङ) 1. अकर्मक क्रिया- उदय हो रहा है।
2. अकर्मक क्रिया- चल दिए।
3. सकर्मक क्रिया- फूल चुन रहा है।
4. सकर्मक क्रिया- मिठाई खरीदी
5. अकर्मक क्रिया- खेलते रहे

(च)

मुख्य कर्म	**गौण कर्म**
1. चित्र	राधा
2. गाँव	बैलों
3. पाँच रुपए	भावना
4. गेंद	रोहित
5. कलम	रचना

आओ सीखें– स्वयं कीजिए।

12. काल

(क) 1. हेतु-हेतुमद् भूत 2. संभाव्य भविष्यत् 3. अपूर्ण वर्तमान 4. संदिग्ध वर्तमान 5. पूर्ण भूत

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स)

(घ) 1. क्रिया के होने का समय तथा उसकी पूर्ण या अपूर्ण अवस्था क्रिया के होने या न होने के समय की बोधक होती है। यह समय ही क्रिया का काल कहा जाता है। काल के तीन भेद होते हैं- (i) भूतकाल (ii) वर्तमान काल (iii) भविष्यत् काल (i) **भूतकाल**- क्रिया के जिस रूप से उसके बीते हुए समय में होने का बोध हो, वह भूतकाल की क्रिया कहलाती है। (ii) **वर्तमान काल**- क्रिया के जिस रूप से कार्य का वर्तमान काल में होना पाया जाए, उसे वर्तमान काल की क्रिया कहते हैं। (iii) **भविष्यत् काल**- जो काल (समय) अभी आएगा, उसे भविष्यत् काल कहते हैं। 2. भूतकाल के छः भेद होते हैं- सामान्य, आसन्न, पूर्ण, अपूर्ण, संदिग्ध, हेतु-हेतुमद् 3. वर्तमान काल के तीन भेद हैं- सामान्य, अपूर्ण संदिग्ध।

सामान्य वर्तमान- क्रिया के जिस रूप से कार्य के वर्तमान काल में सामान्य रूप से होने का पता चले, उसे सामान्य वर्तमान कहते हैं; जैसे- समीर आता है। **अपूर्ण वर्तमान**- क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कार्य वर्तमान काल में शुरू होकर अभी जारी है, उसे अपूर्ण वर्तमान कहते हैं; जैसे- सलिल खेल रहा है। भविष्यत् काल के तीन भेद है- 1. सामान्य भविष्यत् 2. संभाव्य भविष्यत् 3. हेतु-हेतुमद 4. **सामान्य भविष्यत्**- क्रिया ..... शायद कल वर्षा हो। 5. पूर्ण भूत- क्रिया के जिस ..... चुकी थी। अपूर्ण भूत- क्रिया ..... भिखारी खाना गा रहा था। **संदिग्ध भूत**- क्रिया के ..... गीत गाया होगा।

(ङ) 1. हेतु हेतुमद् भूत। 2. आता है - सामान्य वर्तमान। 3. गए होंगे- संदिग्ध वर्तमान। 4. बल दे रहे

हैं- अपूर्ण वर्तमान। 5. जाएगा - सामान्य भविष्यत्। 6. वर्षा हो- संभाव्य भविष्यत्। 7. याद कर रहे हैं- अपूर्ण वर्तमान। 8. लिखते हैं- सामान्य वर्तमान। 9. पढ़ता है- सामान्य वर्तमान। 10. मारे गए- सामान्य भूत।

(च) 1. सुमित परीक्षा देने जाता है। 2. शायद रोहित और सोनू सो गए। 3. माताजी मंदिर जा रही थीं। 4. मेघा झूला झूल रही थी। 5. उसने पत्र लिखा। 6. वे आ गए होंगे।

13. वाच्य

(क) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗

(ख) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स) 6. (ब)

(ग) 1. क्रिया का वह रूप, जिसके द्वारा इस बात का बोध होता है कि वाच्य में कर्ता, कर्म, अथवा 'भाव' में किसकी प्रधानता है, वाच्य कहलाता है। 2. जिस वाक्य में क्रिया कर्ता के लिंग और वचन के आधार पर होती है, वह वाक्य कर्तृवाच्य में होता है; जैसे- अशोक फल खाता है। 3. कर्मवाच्य- जिस वाक्य में कर्म की प्रधानता होती है, अर्थात् क्रिया कर्म के लिंग और वचन के आधार पर होती है, वह वाक्य 'कर्मवाच्य' में होता है; जैसे- धोबी के द्वारा कपड़े धोए गए। 4. भाववाच्य- जिस वाक्य में क्रिया का संबंध न तो कर्ता से होता है और न कर्म से, वरन् भावप्रधान हो, वह वाक्य 'भाववाच्य' में होता है; जैसे- उससे चला नहीं जाता।

(घ) 1. कर्तृवाच्य 2. भाववाच्य 3. भाववाच्य 4. कर्मवाच्य 5. भाववाच्य 6. कर्मवाच्य 7. भाववाच्य 8. कर्तृवाच्य

आओ सीखें– स्वयं कीजिए।

14. अविकारी शब्द

(क) 1. परिमाणवाचक 2. रीतिवाचक 3. रीतिवाचक 4. कालवाचक 5. अव्यय

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) 5. (अ)

(घ) 1. अविकारी वे शब्द हैं, जिनमें कोई विकार (परिवर्तन) न हो। वाक्य में प्रयोग करते समय जिन शब्दों में कोई विकार (परिवर्तन) नहीं होता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। अविकारी शब्द निम्नलिखित होते हैं- (i) क्रियाविशेषण (ii) संबंधबोधक (iii) समुच्चयबोधक (iv) विस्मयादिबोधक

2. जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण कहतें हैं। उदाहरण- मैं अभी आया।

3. जो अविकारी शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ जुड़कर उनका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से प्रकट करते हैं, उन्हें संबंधबोधक कहते हैं।

(i) रूप-रचना के आधार- ..... की बाबत आदि।

4. जो अविकारी शब्द दो शब्दों, दो वाक्यों अथवा वाक्यांशों को जोड़ने का कार्य करता है, उसे समुच्चयबोधक कहते हैं। उदाहरण- दो और दो चार होते हैं।

5. हर्षबोधक, आश्चर्यबोधक, शोकबोधक, स्वीकारबोधक, अनुमोदनबोधक, तिरस्कारबोधक, संबोधनबोधक, आशीर्वाद बोधक।

(ङ) 1. रात-भर-कालवाचक 2. धीरे-धीरे रीतिवाचक 3. कब-कालवाचक 4. यहाँ-वहाँ - स्थानवाचक 5. अचानक-रीतिवाचक

(च) 1. क्योंकि 2. और 3. या 4. और 5. या

आओ सीखें– स्वयं कीजिए।

15. वाक्य विचार

(क) स्वयं कीजिए।

(ख) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स)

(ग) 1. किसी विचार को पूर्णता से प्रकट करने वाला शब्द-समूह वाक्य कहलाता है। 2. उद्देश्य और विधेय। **उद्देश्य**- वाक्य में जिस वस्तु या प्राणी के विषय में कुछ कहा जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं। 3. **विधेय**- उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है, वह सब विधेय कहलाता है। उदाहरण- कोयल डाल पर बैठी है। 4. रचना के आधार पर तीन भेद होते हैं- (1) सरल (2) संयुक्त (3) मिश्र 5. (1) विधिवाचक (2) नकारात्मक (3) आज्ञावाचक (4) प्रश्नवाचक (5) विस्मयादिबोधक

(6) संदेहवाचक (7) इच्छावाचक (8) संकेतवाचक

(घ) 1. रवीन्द्रनाथ टैगोर, गीतांजलि, की सर्वश्रेष्ठ कृति है। 2. स्वामी विवेकानंद, ने देश को नई दिशा दी। 3. वह आदमी, पागल हो गया है। 4. मछुवारे ने मछली, पकड़ ली थी। 5. वह बिस्तर, पर लेटते ही सो गया।

(ङ) 1. मोहन, सत्य बोलो। 2. मोहन आज विद्यालय आया है। 3. क्या पिताजी कल लखनऊ गये थे?

(च) 1. संयुक्त वाक्य 2. संयुक्त वाक्य 3. संयुक्त वाक्य 4. मिश्र वाक्य 5. सरल वाक्य।

(छ) 1. संदेहवाचक 2. विस्मयादिबोधक 3. नकारात्मक 4. विस्मयादिबोधक 5. संकेतवाचक 6. इच्छावाचक 7. प्रश्नवाचक 8. विधिवाचक।

आओ सीखें– स्वयं कीजिए।

16. विराम-चिह्नों का प्रयोग

(क) 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) 5. (स)

(ख) 1. बोलते समय या पढ़ते समय, वाक्य के अंत में अथवा बीच में साँस लेने, किसी कथन पर बल देने, समझाने आदि के लिए रुकना पड़ता है। रुकने को ही विराम या विश्राम कहते हैं। 2. वाक्यों में आश्चर्य, हर्ष, घृणा आदि भाव प्रकट करने के लिये इसका प्रयोग करते हैं। 3. जब लिखने में कुछ छूट जाता है, तब इस चिह्न का प्रयोग करते हैं। 4. जब वाक्य में किसी का कथन या कथन का मूल रूप पुस्तक आदि से लिया जाए, तो इस चिह्न का प्रयोग करते हैं। किसी दैनिक पत्र या पुस्तक का नाम लिखते समय अथवा कवि का उपनाम, लेख या कविता का शीर्षक लिखते समय प्राय: इकहरे उद्धरण चिह्न (‘ ..... ’) का भी प्रयोग किया जाता है। 5. **विवरण-चिह्न**– जिस वाक्य के बाद कोई सूची देनी हो या कोई बात ब्यौरेवार बतानी हो, तो उसके पहले विवरण-चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

आओ सीखें– स्वयं कीजिए।

17. शब्द-भंडार

(क) 1. व्यय 2. सज्जन 3. प्रशंसा 4. निर्धन 5. मूर्ख

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (अ) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ) 6. (स)

(घ) 1. पर्याय का अर्थ होता है बदले में आने वाला। जो शब्द एक दूसरे के बदले प्रयुक्त हो सकें पर्यायवाची शब्द कहते हैं। 2. जो शब्द आपस में उल्टा अर्थ बताए उन्हें विलोम कहते हैं। 3. वाक्यांश के लिए एक शब्द से अभिप्राय है शब्दों के समूह के लिए एक शब्द का प्रयोग करना। उदाहरण- देश को प्रेम करने वाला- देशप्रेमी। 4. कुछ शब्दों के प्रयोगानुसार अनेक अर्थ होते हैं ऐसे शब्द अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं।

(ङ) 1. किसान - कृषक, क्षेत्रक, क्षेत्रपति।
2. राजा- महीप, महीपति, नरेशपति।
3. झंड़ा- ध्वज, ध्वजा, निशान।
4. बिजली- विद्युत, चपला, चंचला।
5. वृक्ष- पेड़, विटप, पादप।
6. पुत्री- बेटी, आत्मजा, तनुजा।

(च) 1. आकाश-पाताल 2. पूर्ण-अपूर्ण
3. उदार-अनुदार 4. बलवान-बलहीन
5. गुण-अवगुण 6. कुटिल-सरल
7. दुर्बल-सबल 8. उत्तीर्ण-अनुत्तीर्ण
9. निर्मल-मलिन 10. छूत-अछूत
11. पाप-पुण्य 12. आस्तिक-नास्तिक
13. क्रम-विक्रम 14. परमार्थ-स्वार्थ

(छ) 1. काल- मृत्यु,यमराज। 2. घट-मन, कम। 3. कक्ष-कमरा, भूमि। 4. दंड-सजा, डंडा। 5. जाल-फरेब, जाला। 6. पद-चिह्न, गीत। 7. पक्ष-पंख, ओर। 8. लक्ष-उददे्श्य, निशान। 9. राशि-समूह, मेष। 10. गति-हाल, चाल। 11. मधु-शहद, मदिरा। 12. पत्र- चिट्ठी, पत्ता। 13. पृष्ठ-पीछे का भाग, पन्ना। 14. तारा-नक्षत्र, आँख की पुतली। 15. अर्थ-मतलब, कारण। 16. भूत-प्रेम, प्राणी।

आओ सीखें- स्वयं करें।

18. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

(क) 1. उँगली उठाना 2. कलेजे पर साँप लोटने लगा। 3. कच्चा चिट्ठा खोल दूँगा। 4. अकल पर पत्थर पड़ गया है।

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (स)

(घ) 1. ऐसे वाक्यांश जो सामान्य अर्थ की प्रतीति न कराकर विशेष अर्थ का बोध कराए, 'मुहावरा' कहलाता है। 2. लोगों में बहुप्रचलित कथन को लोकोक्ति कहते हैं। 3. मुहावरे वाक्यांश होते हैं, लोकोक्ति स्वतंत्र उक्ति या कथन होती है।

(ङ) 1. बिजली समय पर न आने से कारखानों का उत्पादन कार्य खटाई में पड़ गया है। 2. आजकल कहाँ रहते हो मोहन? अब तो ईद का चाँद हो गये हो। 3. महापुरूष सबको एक नजर से देखते हैं। 4. दोनों भाई व्यवहार में उन्नीस-बीस हैं।

आओ सीखें- स्वयं करें।

अराध्या व्याकरण-6

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. व्याकरण 2. वर्ण 3. लिपि 4. बोली 5. भाषा

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (स)

(घ) 1. भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा हम बोलकर या लिखकर अपने भाव या विचार दूसरों तक पहुँचाते हैं तथा दूसरों के भाव और विचार सुनकर या पढ़कर स्वयं समझते हैं। भाषा के दो भेद हैं, मौखिक भाषा एवं लिखित भाषा। **मौखिक भाषा–** मुख से जो कुछ बोला या सुना जाता है, वह भाषा का मौखिक रूप होता है। इसे ही मौखिक भाषा कहते हैं। **लिखित भाषा–** जो कुछ लिखा या पढ़ा जाता है, वह भाषा का लिखित रूप है इसे ही 'लिखित भाषा' कहते हैं। 2. प्रत्येक भाषा के अपने नियम होते हैं। उन्हें जाने बिना भाषा का शुद्ध रूप में प्रयोग नहीं हो सकता। इन नियमों को ही व्याकरण के अन्तर्गत समझाया जाता है। इस प्रकार भाषा और व्याकरण में अटूट संबंध है। 3. व्याकरण के तीन अंग हैं – वर्ण-विचार, शब्द-विचार व वाक्य विचार। 4. भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। बोली किसी क्षेत्र विशेष में मौखिक रूप से ही प्रयोग की जाती है। भाषा का क्षेत्र विस्तृत और बोली का क्षेत्र सीमित होता है। 5. ध्वनियों को लिखने की विधि को लिपि कहते हैं।

2. वर्ण-विचार

(क) 1. ऊष्म 2. क्रमबद्धसमूह 3. अ 4. अनुनासिक 5. अनुस्वार

(ख) 1. ✓2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब)

(घ) 1. मूल ध्वनि की वह सबसे छोटी इकाई जिसके और खंड न किए जा सकें 'वर्ण' कहलाती है। वर्ण के तीन प्रकार हैं- 1. स्वर 2. व्यंजन 3. अयोगवाह 2. **व्यंजन के भेद**– व्यंजन के तीन भेद हैं– (i) स्पर्श व्यंजन, (ii) अंत:स्थ व्यंजन, (iii) ऊष्म व्यंजन **(i) स्पर्श व्यंजन**—इन व्यंजनों के उच्चारण ..... श्, ष्, स्, ह्। 3. वर्णमाला से अलग कुछ ध्वनियाँ अयोगवाह कहलाती हैं। ये हैं - अनुस्वार (ं), अनुनासिक (ँ) तथा विसर्ग (:)। 4. जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों के उच्चारण से तिगुना समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। इसे प्रकट करने के लिए हिंदी का तीन का अंक ३ लिख देते हैं। जैसे-ओ३म् 5. यह अंग्रेजी भाषा से हिंदी में आए शब्दों में प्रयोग होने वाली ध्वनि है : जैसे - डॉक्टर, हॉल, कॉफी, ऑफिस आदि।

3. उच्चारण-स्थान और वर्तनी

(क) 1. नमस्कार 2. कृपालु 3. चारपाइयाँ 4. परिचय 5. सामाजिक, चाहिए

(ख) 1. आहार 2. कहावत 3. सड़क 4. विधान 5. अधीन 6. कौशल 7. शासन 8. विषय

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब)

5. (स)

(घ) 1. शब्दों को सही ..... वर्तनी कहते हैं। 2. शुद्ध लेखन के लिए ..... अनिवार्य है। 3. मात्रओं की सही जानकारी ..... अशुद्धियाँ पाई जाती हैं।

4. शब्द-विचार

(क) 1. देशज 2. तत्सम 3. उल्टे 4. समानता 5. भिन्न

(ख) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (अ)

(ग) 1. विकारी शब्द—विकार का अर्थ है–परिवर्तन। जो शब्द वाक्य ..... **विस्मयादिबोधक** – अहा, हाय, ओह, छि: आदि। 2. रूढ़ शब्द —जो शब्द किन्हीं अन्य शब्दों के योग से नहीं बनते, ... निरर्थक हो जाते हैं। यौगिक शब्द—जो शब्द अन्य शब्दों के योग (मेल) से बनते हैं, ... सुगंध (सु + गंध) आदि। 3. योगरूढ़ शब्द—योगरूढ़ दो शब्दों के मेल से बना है–योग + रूढ़ि = योगरूढ़। ..... 'राक्षस' के लिए प्रयोग किया जाता है। 4. तत्सम् भाषा के जो शब्द बिना किसी परिवर्तन के हिंदी भाषा में प्रयुक्त होते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं तथा संस्कृत भाषा से हिंदी में आए हुए वे शब्द जो अपने बदले हुए रूप में प्रयोग होते हैं, तत्भव् शब्द कहलाते हैं; जैसे- कर्ण से कान, दुग्ध से दूध शब्द तद्भव शब्द हैं।

(घ) सेनापति, राष्ट्रपति, प्रतिदिन
चॉकलेट, ब्लाउज, कॉलिज
बच्चा, लड़का, पतला
साथ, किंतु, अथवा
कार्य, दिवस, अंक
पानी, नाक, कान
पंकज, निशाचर, चारपाई

5. संधि

(क) 1. अयादि 2. यण 3. गुण 4. दीर्घ 5. दीर्घ

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स)

(घ) 1. जब दो शब्द एक-दूसरे के समीप आते हैं तो पहले शब्द की अंतिम ध्वनि या वर्ण आपस में मिल जाते हैं। यह मिलन ही संधि है। उदाहरण - हिम + आलय = हिमालय, 2. संधि के नियमों के अनुसार यदि मिले हुए वर्णों को फिर से अलग कर दिया जाए तो यह संधिविच्छेद कहलाएगा; जैसे विद्यालय का संधि विच्छेद होगा—विद्या + आलय। 3. संधि के तीन भेद हैं— स्वर संधि, व्यंजन संधि व विसर्ग संधि। स्वर संधि—जब मिलने वाले दो शब्दों ..... 'स्वर संधि' है। उदाहरण - हिम + आलय = हिम् + अ + आलय = हिमालय। 4. **अयादि संधि**—'ए', 'ऐ', 'ओ' या 'औ' के परे यदि कोई भिन्न (विजातीय) स्वर आ जाए तो 'ए' का 'अय', 'ऐ' का 'अव' और 'औ' का 'आव' हो जाता है। ऐसी संधि को अयादि संधि कहते हैं; जैसे– ने + अन = नयन, पो + अन = पवन, शे + अन = शयन, भो + अन = भवन, गै + अन = गायन, नौ + इक = नाविक, गै + अक = गायक, पौ + अन = पावन 5. **व्यंजन संधि**—जब पहले शब्द के अंत में कोई व्यंजन होता है और दूसरे शब्द के प्रारंभ में स्वर या व्यंजन कोई भी वर्ण होता है, ...उदाहरण–नि: + मल = निर् + मल = निर्मल

6. समास

(क) 1. तत्पुरुष समास 2. द्वंद समास 3. अव्ययीभाव समास 4. द्विगु समास 5. कर्मधारय समास

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब)

(घ) 1. समास का शाब्दिक अर्थ है छोटा करना या संक्षिप्त करना। **परिभाषा**- परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं। 2. समस्तपद को पुन: पहली जैसी अवस्था में अलग करना समास विग्रह कहलाता है तथा विभक्तिरहित शब्दों को मिला देने से जो शब्द बनता

है, उसे समस्तपद कहते हैं। 3. तत्पुरुष समास—जिस समास में द्वितीय पद प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। तत्पुरुष समास में प्रथम पद विशेष्य होता है। .....

अधिकरण तत्पुरुष: आपबीती - आप पर बीती
गृहप्रवेश - गृह में प्रवेश

4. **कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में अंतर :** कर्मधारय समास तत्पुरुष का भेद है। इस समास का पूर्वपद विशेषण और उत्तरपद विशेष्य होता है जबकि जिस समस्तपद में कोई भी पद प्रधान नहीं होता और समस्तपद किसी अन्य के ..... बहुव्रीहि समास है।

5. द्विगु समास में समस्तपद का पहला पद संख्यावाचक होता है और समूह का बोध कराता है जबकि बहुव्रीहि समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता और सारा समस्तपद किसी अन्य के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है।

7. उपसर्ग एवं प्रत्यय

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब) 6. (स)

(ख) 1. कु-कुरूप, कुमार्ग 2. नि-निडर, निहत्था 3. उप-उपयोग, उपनाम 4. भर-भरपाई, भरसक 5. स्व-स्वतंत्र, स्वाधीन 6. प्र-प्रशिक्षण, प्रमाण 7. अधि-अधिकार, अधिनायक 8. आ-आजीवन, आजन्म

(ग) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ)

(घ) 1. ना - झूलना, भूलना 2. इक - नैतिक, भौतिक 3. वाला - रखवाला, घरवाला 4. दार - रंगदार, शानदार 5. ता - समता, ममता 6. गर - जादूगर, बाजीगर 7. आल - ननिहाल, ससुराल 8. ईला - रंगीला, चटकीला

(ङ) 1. जो शब्दांश शब्दों से पूर्व जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता उत्पन्न करते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं; जैसे–ज्ञान में 'अ' जोड़कर बना शब्द 'अज्ञान'। यहाँ 'अ' जुड़ने से शब्द के अर्थ में परिवर्तन हो गया है। उपसर्ग स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं होते, शब्द के साथ जुड़कर प्रयुक्त होते हैं।

2. ऐसे शब्दांश जो मूल शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे–भला + ई = भलाई ('ई' प्रत्यय)। यहाँ विशेषण (भला) में 'ई' प्रत्यय जुड़ जाने से भलाई शब्द (भाववाचक संज्ञा) का निर्माण हुआ है। प्रत्यय स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं किए जाते हैं।

8. शब्द-भंडार

(क) 1. अस्त्र 2. अमूल्य 3. बहुमूल्य 4. पाप 5. का द्वेष

(ख) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ) 6. (ब)

(ग) 1. समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। 2. विपरीत या उल्टा अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को विलोम शब्द कहते हैं। 3. वे शब्द जिनके अनेक अर्थ हों, अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं-जैसे, अंबर का अर्थ आकाश भी है और वस्त्र भी। 4. हिन्दी भाषा में अनेक ऐसे शब्द हैं, जो उच्चारण ..... जिसके समान कोई दूसरा नहीं 5. हिन्दी भाषा में ऐसे शब्द पर्याप्त मात्रा में ..... के अनुसार

(घ) अर्जुन - कौन्तेय, धनंजय, पार्थ
इच्छा - कामना, मनोरथ, लालसा
अग्नि - अनल, आग, पावक
अतिथि - मेहमान, पाहुना, आगंतुक
सरस्वती - शारदा, गिरा, भारती
लक्ष्मी - श्री, इंदिरा, हरिप्रिया

(ङ) 1. सरस-नीरस, डर-निडर, आशा-निराशा 2. एकता-अनेकता 3. सच-झूठ, स्वर्ग-नरक, प्रेम-घृणा 4. तरल-ठोस, पूर्ण-अपूर्ण, मुख्य-गौण

(च) 1. पर्वत 2. रथ 3. ज़िन्दगी 4. प्यार 5. रंग 6. नगीना

(छ) 1. नगर, बाढ़ 2. माता, जल 3. कंधा, भाग 4. देहान्त, गरीब 5. आग, वायु 6. यहाँ, एक ऋषि

(ज) 1. जिनकी गणना न हो सके 2. प्रजा का

शासन 3. नभ में विचरने वाला 4. जिसके आर-पार दिखाई दे 5. धरती पर विचरने वाला 6. जो वस्तु बहुत मूल्य दे कर भी प्राप्त न की जा सके 7. लंबे समय तक टिकने वाला 8. दूसरों पर उपकार करने वाला

(झ) 1. जीवन का बीता हुआ भाग, पूर्ण जीवन काल 2. फेंक कर चलाया जाने वाला हथियार, हाथ में पकड़ कर चलाए जाने वाला हथियार 3. प्रतियोगिता में जीतने पर इनाम, किसी कार्य के लिए इनाम 4. स्वयं को श्रेष्ठ मानना, झूठा घमंड 5. संदेह, भविष्य में कुछ बुरा घट जाने की संभावना 6. किसी वस्तु के प्रति मन की लगन का भाव, कोई विशेष इच्छा 7. सामाजिक और सरकारी नियमों का उल्लंघन, नैतिक व धार्मिक नियम तोड़ना 8. जो वस्तु बहुत मूल्य देकर भी प्राप्त न हो सके, जिसका बहुत मूल्य देना पड़े।

(ञ) 1. सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी, गणेश का दाँत, ईश्वर 2. अपरा, परा 3. दैहिक, दैविक, भौतिक 4. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र 5. विष्णु, गणेश, दुर्गा, सूर्य, शिव 6. कड़वा, कसैला, खट्टा, मीठा, चरपरा, खारा 7. आलस्य, निद्रा, स्वाद, मंदबुद्धि, काम, क्रीड़ा, महाचिंता 8. सूर्य, चंद्र, नक्षत्र, पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश 9. श्रृंगार, हास्य, करुण, वीर, भयानक, रौद्र, वीभत्स, अद्‌भुतए शांत 10. धैर्य, क्षमा, दया, अस्तेय, शौच, इंद्रिय-निग्रह, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, विधा 11. प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाम, कूकल, कूर्म, आत्मा देवदत्त, धनंजय 12. चैत्र, बैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन।

9. संज्ञा

(क) 1. मिठास 2. सजावट 3. जागरण 4. व्यक्तिवाचक 5. विशेष नाम

(ख) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब)

(घ) 1. जिन शब्दों से किसी व्यक्ति, वस्तु ..... भाववाचक संज्ञा कहते हैं। भाववाचक संज्ञाएँ दो प्रकार की होती हैं ..... मना से मनाही आदि। 2. व्यक्तिवाचक संज्ञा का जातिवाचक के रूप में ... . जातिवाचक संज्ञा हो गए हैं।
3. जातिवाचक संज्ञा का व्यक्तिवाचक .... भारत माता के सच्चे सपूत थे।

(ङ) 1. कक्षा-जातिवाचक, 2. कपड़ा-पदार्थ वाचक, 3. कलम - जातिवाचक, 4 फूल - जाति वाचक, 5. झुंड - समूहवाचक, 6. संसद भवन - व्यक्तिवाचक, 7. मेला - जातिवाचक, 8. बच्चा - जातिवाचक 9. जानकी निवास - व्यक्तिवाचक, 10. भीड़ - समूहवाचक, 11. कुत्ता - जातिवाचक, 12. ऊँचाई - भाववाचक, 13. चाँदी - पदार्थ वाचक, 14. घोड़ा - जातिवाचक, 15. कालिमा - भाववाचक, 16. भगवद्‌गीता - व्यक्ति वाचक, 17. मानवता - भाववाचक, 18. लोहा - पदार्थ वाचक,

(च) 1. चालाक-चालाकी, 2. अच्छा-अच्छाई, 3. गुरु-गुरुत्व 4. युवक -यौवन, 5. व्यक्ति-व्यक्तित्व 6. शत्रु-शत्रुता, 7. हारना-हार 8. नारी-नारीत्व, 9. मित्र-मित्रता 10. एक-एकता, 11. सजाना-सजावट 12. मुस्कुराना-मुस्कुराहट,

(छ) 1. पशुता-पशु, 2. पुरुषत्व-पुरुष, 3. भ्रातृत्व-भाई, 4. पांडित्य-पंडित, 5. कवित्व-कवि, 6. वकालत-वकील, 7. सामाजिक-समाज, 8. चोरी -चोर 9. डकैती-डाकू, 10. देवत्व-देवता 11. सिंहत्व -सिंह, 12. ठगी-ठग

(ज) 1. आज सभापति का चुनाव है। 2. अपूर्वा की लिखाई ठीक नहीं है। 3. उसकी पढाई ठीक नहीं है। 4. मुझे घबराहट हो गई। 5. वह क्रोध से भर उठा।

10. लिंग

(क) 1. स्त्रीलिंग 2. पुल्लिंग 3. बेटे 4. भिखारी 5. नौकरानी

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ)

(घ) 1. लिंग के निम्नलिखित दो भेद हैं .....

.... सास, अध्यापिका आदि।

2. पुल्लिंग की पहचान – जिन शब्दों के अंत में 'आ'..... परिवार, समाज, संघ आदि। स्त्रीलिंग की पहचान ..... जिन संस्कृत .....आयु आदि। 3. अकारांत पुल्लिंग शब्दों को आकारांत कर देने से वे स्त्रीलिंग हो जाते हैं; .....पूज्य पूज्या। अकारांत तथा आकारांत पुल्लिंग शब्दों को ईकारांत .. .. देव देवी। अकारांत पुल्लिंग शब्दों में 'नी' राजपूत राजपूतनी।

(ङ) 1. पुल्लिंग 2.पुल्लिंग 3. स्त्रीलिंग
4. पुल्लिंग 5. स्त्रीलिंग 6. पुल्लिंग
7. स्त्रीलिंग 8. स्त्रीलिंग 9. पुल्लिंग
10. स्त्रीलिंग 11. पुल्लिंग 12. स्त्रीलिंग

(च) 1. पंडिताइन 2. विधवा 3. निवेदिका
4. श्रीमति 5. मादा मच्छर 6. भवदीय
7. पाठिका 8. अनुजा 9. बुद्धिमती

11. वचन

(क) 1. मक्खियाँ 2. तलवारें 3. जनता 4. सोना

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब)

(घ) 1. ये शब्द हैं- **भीड़**- भीड़ बेकाबू हो गई। **जनता**- जनता अधिकार चाहती है। **सोना**- सोना महँगा हो गया है। **चाय**- चार प्याली चाय देना। 2. ये शब्द हैं- **आँसू**- मेरे आँसू बह निकले। **हस्ताक्षर**- मैंने हस्ताक्षर कर दिए। **होश**- शेर को देखकर मेरे होश उड़ गए। **दर्शन**- धन्यवाद आपने दर्शन दिए। 3. पुल्लिंग शब्दों के अंतिम 'आ' को 'ए' कर देने से बहुवचन रूप बन जाता है; जैसे- ..... शीशा शीशे। अकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंत .... चप्पल चप्पलें। इकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अंत ..... पंक्ति पंक्तियाँ। इकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में 'ई' ..... लकड़ी लकड़ियाँ।

(ङ) 1. धेनुएँ, 2. लाठियाँ, 3. मुनिजन, 4. गौएँ, 5. वस्तुएँ, 6. साड़ियाँ, 7. संतजन, 8. मालाएँ,

12. कारक

(क) 1. में 2. पर 3. के लिए 4. से 5. पर

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)

(घ) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप .... हे, अरे, ओ।

2. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले ..... 'को' का प्रयोग केवल प्राणिवाचक कर्म के साथ ही होता है। 3. संप्रदान कारक ..... पिताजी ने मोहन को बुलाया। (कर्म कारक) 4. कारक .... (हे) बालको!

(ङ) 1. संबंध कारक 2. अधिकरण कारक 3. करण कारक 4. कर्म कारक 5. अपादान कारक 6. संप्रदान कारक 7. संबंध कारक 8. संबंध कारक 9. संबोधन कारक 10. अधिकरण कारक

(च) 1. राम ने चाय पी। 2. सड़क पर मत खेलो। 3. उसने राजू को पढ़ाया। 4. गाड़ी देरी से आएगी। 5. मैंने रमेश को रुपये दिए।

13. सर्वनाम

(क) 1. अनिश्चयवाचक 2. लिंग 3. सर्वनाम 4. निकटवर्ती 5. पुरुषवाचक

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✗

(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ)

(घ) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे- राघव मेरा भाई है। राघव शब्द संज्ञा है। यदि हम लिखें वह हमारा भाई है। तो वह सर्वनाम है। 2. जिस सर्वनाम से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत ..... वे हमारे हैं। 3. जिन सर्वनाम शब्दों से निज या ..... (आप) निजवाचक आप का प्रयोग स्वयं के लिए तथा मध्यम पुरुषवाचक 'आप' का प्रयोग दूसरों के लिए होता है, जैसे- मैं चाय **आप** बना लूँगा। (निजवाचक सर्वनाम) **आप** कब आए? (मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम)

(ङ) 1. (कुछ) (अनिश्चयवाचक सर्वनाम) 2. (कोई) (अनिश्चयवाचक सर्वनाम) 3. (मैं) (उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम) 4. (वे) (अन्य पुरुषवाचक

सर्वनाम) 5. (वे) (दूरवर्ती निश्चयवाचक सर्वनाम) 6. (स्वयं) (निजवाचक सर्वनाम)

14. विशेषण

(क) 1. वैज्ञानिक 2. बुद्धिमान 3. विषैला 4. भारतीय

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब)

(घ) 1. कुछ गुणवाचक विशेषण निम्न प्रकार हैं- . ..... गंध - सुगंधित, दुर्गंधपूर्ण आदि। 2. संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं- (i) निश्चित संख्यावाचक (ii) अनिश्चित संख्यावाचक। एक, दो, तीन, चार, दूसरा, तीसरा, दुगुना, तीनों आदि शब्द निश्चित संख्यावाचक शब्द हैं तथा कुछ, थोड़े-से, सैकड़ों आदि अनिश्चित संख्यावाचक शब्द हैं। 3. परिमाणवाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं- ..... गिलास में कुछ पानी है। 4. सार्वनामिक विशेषण .... लड़के तुम्हारे मित्र हैं। 5. मूल विशेषण - कुछ शब्द मूल रूप ..... अखाद्य। विशेषणों की निम्न तीन ..... विशालतम।

(ङ) 1. ज्यादा 2. अत्यंत 3. गहरा 4. बहुत 5. बड़ा

(च) 1. कँटीला 2. आदरणीय 3.बिकाऊ 4. गुणवान 5. कुलीन 6. व्यवहारिक 7. पाक्षिक 8. घरेलू 9. करुणावान

15. क्रिया एवं वाच्य

(क) 1. सामान्य 2. सकर्मक 3. पूर्वकालिक 4. सामान्य 5. संयुक्त

(ख) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (स)

(ग) 1. क्रिया से पहले क्या, किसको या किसे लगाकर ..... (क्या हँसता है?-)- अकर्मक क्रिया। 2. ऐसे वाक्यों में कर्ता की प्रधानता होती है ..... एवं नैनिका से है। 3. कर्मवाच्य- ऐसे वाक्यों में कर्म ..... कर्म से है। 4. भाववाचक- ऐसे वाक्य में भाव की प्रधानता ..... नैनिका से दौड़ा जाता है। 5. संज्ञा सर्वनाम और विशेषण की भाँति क्रिया भी विकारी ..... वे लिखते हैं।

(घ) 1. पी लिया होगा-पी 2. देखती है-देख 3. खेल रहा है-खेल 4. पढ़ूँगा-पढ़

(ङ) 1. गर्माना 2. ललचाना, 3. फटकारना 4. रँगना 5. झुठलाना, 6. लठियाना, 7. लजाना, 8. शर्माना,

(च) 1. पीकर 2. साफ करके 3. सांत्वना देकर 4. हँसकर

(छ) 1. फर्श सर्फ से धुलवाओ। 2. बच्चों से पाठ पढ़वाओ। 3. ठंडा पानी पिलवाओ। 4. सबको भोजन खिलवाओ।

(ज) 1. भाववाच्य 2. कर्मवाच्य 3. कर्तृवाच्य 4. भाववाच्य

(झ) 1. मुझसे बैठा नहीं जाता। 2. आदिल द्वारा कविता पढ़ी जाती है। 3. बच्चे द्वारा खेला जा रहा। 4. विमला फूल तोड़ती है।

16. काल

(क) 1. अपूर्ण 2. समय 3. साधारण 4. काल 5. आसन्न

(ख) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5.(ब)

(ग) 1. क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने के समय का पता चलता है, उसे काल कहते हैं। मुख्य रूप से काल तीन प्रकार के होते हैं- भूतकाल, वर्तमानकाल, भविष्यतकाल। 2. जो समय चल रहा है, उसे वर्तमान काल कहते हैं; ..... बच्चा भूखा होगा। 3. सामान्य भविष्यत्- क्रिया का वह रूप जिससे आने वाले ..... संभवत: मैं कल चला जाऊँ।

(घ) 1. हम मेला देखने जा रहे हैं। हम मेला देखते होंगे। 2. वह खेल रहा है। वह खेलता होगा। 3. बच्चे पतंग उड़ा रहे हैं। बच्चे पतंग उड़ाते होंगे। 4. लता गीत गा रही है। लता गीत गाती होगी। 5. पिताजी आ रहे हैं। पिताजी आते होंगे।

17. अव्यय या अविकारी शब्द

(क) 1. विस्मयादिबोधक 2. रीतिवाचक 3.

संबंधबोधक 4. स्थानवाचक 5. कालवाचक

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स)

(घ) 1. वाक्य में प्रयोग ..... अविकारी शब्द कहते हैं अविकारी शब्दों के चार भेद .... 4. विस्मयादिबोधक। 2. जो क्रियाविशेषण क्रिया के होने के समय का बोध कराते हैं कालवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं, जैसे- सुरेश **कल** आएगा। आप **अब** जा सकते हैं। तथा जो क्रियाविशेषण क्रिया के होने के स्थान या .... दूर, निकट आदि। 3. जो समुच्चयबोधक समान स्थिति वाले अर्थात् ..... समुच्चयबोधक हैं। विरोधक- ये वे शब्द हैं जो पहले ..... क्योंकि इस कारण आदि। 4. ये वे शब्द हैं, जो एक या अधिक ..... इस कारण आदि। स्वरूपबोधक - ये अव्यय पहले के ..... यहाँ तक कि आदि।

(ङ) 1. कल 2. अच्छा 3. धीरे-धीरे 4. तेज

(च) 1. के मारे 2. के पास 3. के सहारे 4. के ऊपर

(छ) 1. अपितु 2. तो 3. परंतु 4. या

(ज) 1. धिक् 2. अहा 3. हाँ-हाँ 4. छि: छि:

18. वाक्य-प्रकरण

(क) 1. मिश्र 2. सरल 3. आज्ञावाचक 4. प्रश्नवाचक 5. सरल

(ख) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब) 6. (अ)

(ग) 1. सार्थक शब्दों का व्यवस्थित समूह वाक्य कहलाता है। वाक्य में सार्थकता, योग्यता, आकांक्षा, आसक्ति या निकटता, पदक्रम और अन्वय आवश्यक तत्व हैं। 2. सरल (साधारण) वाक्य- जिन वाक्यों में एक ..... का प्रयोग किया जाता है। मिश्र वाक्य- जिस वाक्य ..... ज्यों-ज्यों, त्यों-त्यों आदि। 3. अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं- ..... रात होगी तो तारे आसमान में निकलेंगे।

(घ) 1. जनता (ने मंत्रीजी का स्वागत किया) 2. सूर्य (संसार को गर्मी देता है) 3. वह (किसी से झगड़ा नहीं करता) 4. लड़के (शोर मचाते हैं) 5. उसने (चार छक्के लगाए) 6. अविनाश (ईमानदार लड़का है)

(ङ) 1. प्रश्नवाचक वाक्य 2. आज्ञावाचक वाक्य 3. इच्छासूचक वाक्य 4. संकेतवाचक वाक्य 5. विधानवाचक वाक्य

(च) 1. सरल वाक्य 2. संयुक्त वाक्य 3. मिश्र वाक्य 4. संयुक्त वाक्य 5. मिश्र वाक्य

(छ) 1. वह तुम्हें नहीं जानता। 2. यह घड़ी मैंने कल खरीदी थी। 3. जो संतुष्ट है वही सुखी रहता है। 4. मैं क्या जानूँ कि तुम कौन हो। 5. सचमुच! वह बहुत उदार है। 6. चोर को कोई आश्रय नहीं देगा। 7. जब सिपाही ने देखा तो चोर भाग गया। 8. उसे सब्जी लेनी थी इसलिए वह बाजार गया। 9. किन पशुओं से सब घबराते हैं? 10. बच्चे ने दूध पिया और सो गया।

20. विराम-चिह्नों का प्रयोग

(क) 1. विराम 2. प्रश्नसूचक 3. निर्देशक 4. उद्धरण 5. चिह्नों

(ख) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)

(ग) 1. निधि, नम्रता, और नीरा सो गईं। माला, ममता और मीना पढ़ रही हैं। 2. सुबह हुई; सूरज निकला; लोग उठ गए। चार बजे; घंटी बजी; छुट्टी हो गई। 3. हाय! इतनी बडी दुर्घटना हो गई। उफ्! बड़ी गर्मी है। 4. चाय, चावल चीनी आँवला भिजवा दीजिए। दूसरों का हित चिंतन करने वाले महापुरुष कहलाते हैं।

(घ) 1. दो शब्दों को जोड़ने के लिए बीच में योजक चिह्न का प्रयोग करते हैं जैसे- भाई-बहन, घर-द्वार आदि। 2. वाक्य में प्रश्नसूचक चिह्न प्रश्न के बाद लगाया जाता है। 3. जहाँ पूर्ण विराम की अपेक्षा कम रुकना होता है, वहाँ अर्द्धविराम चिह्न लगाया जाता है। 4. वाक्य के पूर्ण हो जाने पर लगने

वाला चिह्न पूर्ण विराम है। 5. जहाँ किसी विचार को विभक्त कर बीच में उदाहरण दिए जाते हैं, ... मैं तुम्हें आजादी दूँगा।" 6. विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा आदि ..... हाय! मैं लुट गया।

(ङ) स्वयं कीजिए।

(च) 1. शिष्य: क्या यह दुनिया दुखों का जाल ही बनी रहेगी?

गुरु: दुख तो मानव ने स्वयं पैदा किए हैं।

शिष्य : आखिर उचित मार्ग क्या है?

2. शिष्य ने पूछा-यह क्या हो गया महाराज?

3. व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द के तीन भेद हैं- रूढ़, यौगिक व योगरूढ़। 4. इस देश में सभी धर्मों कों मानने वाले लोग रहते हैं। वैसे यहाँ हिन्दुओं की संख्या सबसे अधिक है परंतु मुसलमान, ईसाई, पारसी, सिक्ख आदि सभी धर्मों के लोग एक साथ रहते हैं। 5. भारतवर्ष में सामाजिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय पर्व बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं। 6. दीपावली पर बच्चे बम, पटाखे, फुलझड़ियाँ, अनार बम, आतिशबाजी छुड़ाकर अपनी खुशी प्रकट करते हैं।

21 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

(क) 1. बगुला 2. अठखेलियाँ 3. नाक में दम 4. दाल 5. आँखों का काँटा

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ)

(घ) 1. 'मुहावरा' शब्द का अर्थ है ..... स्वतंत्र रूप से नहीं। उदाहरण : अक्ल का दुश्मन - मूर्ख 2. लोकोक्ति (लोक + उक्ति) का सामान्य .... कहावत भी कहा जाता है। उदाहरण : अपनी करनी पार उतरनी - जैसा काम, वैसा फल। 3. लोकोक्ति लोक में प्रचलित वह उक्ति .... स्पष्ट करता है।

(ङ) 1. (अक्ल पर पत्थर पड़ना) मेरी अक्ल पर पत्थर पड़े थे जो मैं बिना ताला लगाए घर से बाहर चला गया 2. (आँख-कान खुले रखना) जिसके बहुत से शत्रु हों उसे आँख-कान खुले रखने चाहिए। 3. (आम के आम गुठलियों के दाम) अखबारों से समाचार भी पढ़ने को मिलते हैं और रद्दी के पैसे भी। है न आम के आम गुठलीयों के दाम 4. (अँगुली उठाना) दूसरों पर अँगुली उठाने से पहले स्वयं को देखना चाहिए। 5. (अपना उल्लू सीधा करना) अपना उल्लू सीधा करने के लिए लोग बड़ा छल करते हैं।

(च) 1. सब कहते थे मॉल से सामान लाओ। मैंने पर्स लिया पर आते ही चैन टूट गई। इसे कहते हैं- ऊँची दुकान फीका पकवान 2. अपने पिता का पैसा इधर-उधर देकर राहुल ने ईंट का घर मिट्टी कर दिया। 3. दिनेश मजदूरों में बी.ए. पास है। वही अंधों में काना राजा है। 4. अब बिजली अधिक देने से क्या लाभ परीक्षा में तो पावर कट लगते रहे। इसे कहते हैं- का वर्षा जब कृषि सुखाने। 5. कमला आजकल विपत्ति में घिरी है ससुराल में सास ताने देती है और मायके में भाभी। बेचारी के आगे कुआँ पीछे खाई।

22. अलंकार

(क) 1. अलंकार 2. दो, अर्थालंकार 3. अनुप्रास 4. अतिश्योक्ति 5. चार

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. सौंदर्य में ..... कहते हैं। 2. अलंकार के दो भेद हैं- 1. शब्दालंकार 2. अर्थालंकार 3. उपमा का अर्थ ..... की गई है। 4. अनुप्रास अलंकार ..... हुई है। 5. अर्थालंकार के चार भेद हैं- (i) उपमा अलंकार (ii) रूपक अलंकार (iii) उत्प्रेक्षा अलंकार (iv) अतिश्योक्ति अलंकार

अराध्या व्याकरण-7

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. सीमित 2. बोली 3. लिपि 4. गद्य 5. पद्य

(ख) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (अ) 5. (स)

(घ) 1. भाषा के दो भेद होते हैं-(1) मौखिक भाषा (2) लिखित भाषा 2. भाषा को लिखने की विधि लिपि कहलाती है। 3. व्याकरण वह शास्त्र है,

जिसके द्वारा किसी भाषा के नियमों और व्यवस्थाओं का ज्ञान प्राप्त होता है। 4. भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। देश की विभिन्न बोलियाँ–अवधी, ब्रज, भोजपुरी, मैथिली, बुंदेली, कुमाऊँनी, गढ़वाली, मारवाड़ी। 5. भाषा के दो रूप होते हैं .... प्रयोग किया जाता है। भाषा के क्षेत्रीय रूप को ..... विस्तृत तथा व्यापक होता है।

2. वर्ण-विचार

(क) 1. अनुस्वार 2. आगत 3. द्वित्व 4. अनुनासिक, विसर्ग 5. अयोगवाह

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब)

(घ) 1. उच्चारण की ..... प्लुत स्वर कहते हैं। 2. अयोगवाह ऐसे वर्ण ..... विसर्ग (:)। 3. संयुक्त व्यंजन दो व्यंजन के ..... (ज + ज) आदि। 4. जिन वर्णों के उच्चारण में स्वर सहायक होते हैं, उन्हें व्यंजन वर्ण कहते हैं, जैसे–क, ख, च, छ आदि।

स्पर्श व्यंजन (2) अंत:स्थ व्यंजन (3) ऊष्म व्यंजन 5. मूल स्वर ..... अ + ओ = औ

(ङ) 1. अंतर – अनुस्वार, 2. साँप – अनुनासिक, 3. दंत – अनुस्वार, 4. संशय – अनुस्वार, 5. ताँगा – अनुनासिक, 6. गाँव – अनुनासिक 7. बाँसुरी – अनुनासिक, 8. पंख – अनुस्वार, 9. पाँच – अनुनासिक, 10. अनुस्वार 11. अनुनासिक 12. ऊँट – अनुनासिक,

(च) 1. सत्यभाष–स् + अ + त् + य् + अ + भ् + आ+ष्+अ 2. आजकल–आ + ज् + अ + क् + अ + ल् + अ 3. प्रतिकूल–प् + र् + इ + त् + अ + क् + ऊ + ल्+अ 4. अनुकूल–अ + न् + उ + क् + ऊ + ल् + अ 5. अध्ययन–अ + ध् + य् + अ + य् + अ + न् + अ

3. शब्द-विचार

(क) 1. यौगिक 2. तत्सम 3. योगरूढ़ 4. परिवर्तनीय 5. अपरिवर्तनीय

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)

(घ) 1. एक अथवा अनेक वर्णों के संयोग से बने सार्थक ध्वनि-समूह को शब्द कहते हैं तथा वाक्य में प्रयुक्त शब्द के व्यावहारिक रूप को पद कहते हैं। 2. जिन शब्दों का प्रयोग केवल एक ही अर्थ में किया जाता है, वे एकार्थी शब्द कहलाते हैं; जैसे–रोटी, कुत्ता, लोहा आदि। भाषा में कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है जिनके अनेक अर्थ होते हैं उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं; जैसे–पत्र, कर आदि। 3. वे शब्द जो संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा में बिना किसी बदलाव के लिए गए हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं; जैसे–जिह्वा, क्षेत्र, कार्य आदि। जो शब्द संस्कृत भाषा से थोड़े बदलाव के साथ हिन्दी में आए हैं वे तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे–अंधकार–अँधेरा। 4. विकारी शब्द ..... विस्मयादिबोधक। 5. यौगिक शब्द ..... योगरूढ़ शब्द हैं।

(ङ) हाथ–हस्त, आँख–अक्षि, नाक–नासिका, पत्ता–पत्र, शक्कर–शर्करा, जीभ–जिह्वा, उजला –उज्जवल, गाय–धेनु, गधा–गर्दभ, धुआँ–धूम्र, बूँद–बिंदु, कछुआ– कच्छप, आठ–अष्ट, घंटी –घंटिका, भाप–वाष्प, छेद–छिद्र, चूरन–चूर्ण, सूत–सूत्र,

(च) यौगिक शब्द–राजकुमार, पुस्तकालय, पानवाला; **रूढ़ शब्द**–घर, हाथी, आदमी; **योगरूढ़ शब्द**–नीलकंठ, चारपाई, पंकज; **संकर शब्द**–रेलगाड़ी, घड़ीसाज; **विकारी शब्द**–लड़का, वह, अच्छा ; **अविकारी शब्द**–आज, धीरे-धीरे, अभी

4. उपसर्ग और प्रत्यय

(क) 1. नवीनता 2. प्रत्यय 3. आई 4. बे 5. वान

(ख) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (अ) 6. (ब)

(ग) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (अ) 6. (ब)

(घ) 1. क्रिया के व्यापार या भाव का बोध कराने वाले प्रत्यय भाववाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं। 2. क्रियाविशेषण, संज्ञा, अव्यय अथवा विशेष प्रकार के क्रिया शब्दों का बोध कराने वाले प्रत्यय क्रियार्थक कृत् प्रत्यय कहलाते हैं। 3. जो शब्दांश किसी ..... उपसर्ग कहते हैं। जैसे- अति बहुत अत्यंत, अत्यधिक, अत्याचार अनु पीछे, समानता अनुराग, अनुकरण, अनुशासन अव बुरा अवकाश, अवगुण, अवशेष

4. शब्दों के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता अथवा परिवर्तन लाने वाले शब्दांश प्रत्यय कहलाते हैं। जिन प्रत्ययों को संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के अंत में लगाने से नए शब्द बनते हैं उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं; जैसे–पाठ + क = पाठक, चाचा + एरा = चचेरा

(ङ) स्वयं कीजिए।

(च) स्वयं कीजिए।

5. संधि

(क) 1. वृद्धि 2. यण 3. गुण 4. यण 5. दीर्घ

(ख) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब)

(घ) 1. निकटवर्ती वर्णों के मेल से होने वाले परिवर्तन को संधि कहते हैं। 'संधि' का अर्थ है 'मेल'। (राम + अवतार) = रामावतार, (सुर + ईश) = सुरेश तथा संधि के नियमों के अनुसार मिले हुए वर्णों को यदि फिर से अलग-अलग कर दें, तो उसे संधि-विच्छेद कहा जाता है; जैसे–विद्यालय का संधि-विच्छेद होगा–विद्या + आलय।

2. जब मिलने वाले दो शब्दों में से पहले शब्द के अंत में स्वर होता है और दूसरे शब्द के प्रारम्भ में भी स्वर होता है, तब वहाँ स्वर संधि होती है। उदाहरण–विद्या + आलय = विद्यालय तथा जब परस्पर मिलने वाले दो शब्दों में से पहले शब्द के अंत में कोई व्यंजन और दूसरे शब्द के प्रारंभ में कोई स्वर या व्यंजन हो, तो उनके बीच होने वाले मेल को व्यंजन संधि कहते हैं: जैसे- दिक् + दर्शन = दिग्दर्शन जगत् + ईश = जगदीश

3. **दीर्घ संधि**–एक ही जाति के स्वरों के निकट आने पर उनके मेल से उसी जाति का दीर्घ स्वर बन जाता है। इस मेल को दीर्घ संधि कहते हैं।

(अ + अ = आ) धर्म + अर्थ = धर्मार्थ

(अ + आ = आ) परम + आत्मा = परमात्मा

गुण संधि–यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' या 'ई' हो, तो दोनों के स्थान पर 'ए'; यदि 'उ' या 'ऊ' हो तो दोनों के स्थान पर 'ओ' और यदि 'ऋ' हो तो 'अर्' तो जाता है। इसे गुण संधि कहते हैं।

(अ + इ = ए) देव + इन्द्र = देवेन्द्र

(अ + ई = ए) नर + ईश = नरेश

4. **वृद्धि संधि**–जब 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' हो, तो दोनों के स्थान पर 'ऐ'; यदि 'ओ' या 'औ' हो तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है। इस मेल को वृद्धि संधि कहते हैं।

(अ + ए = ऐ) एक + एक = एकैक

(अ + ऐ = ऐ) मत + ऐक्य = मतैक्य

यण संधि–'इ' या 'ई' के बाद इससे भिन्न कोई स्वर हो, तो 'इ' या 'ई' का 'य' हो जाता है। 'उ' या 'ऊ' के पश्चात् इससे भिन्न कोई स्वर हो, तो 'उ' या 'ऊ' का 'व्' हो जाता है और 'ऋ' के पश्चात् 'ऋ' को छोड़ कोई अन्य स्वर हो, तो ऋ कर 'र' हो जाता है। इस मेल को यण संधि कहते हैं।

(इ + अ = य) यदि + अपि = यद्यपि

(इ + आ = या) परि + आवरण =पर्यावरण

अयादि संधि–यदि ए, ऐ, ओ, औ के आगे कोई विजातीय (असमान) स्वर आ जाए, तो ए का 'अय्', 'ऐ' का 'आय', ओ का 'अव्' तथा 'औ' का 'आव्' हो जाता है। इसे अयादि संधि के नाम से जाना जाता है।

(ए का 'अय्') ने + अन = नयन

(ऐ का 'आय्') गै + अन = गायन

5. पहले वर्गीय वर्ण ..... वृक्षच्छाया

6. विसर्ग के बाद यदि ..... अतएव

(ङ) 1. सूर्योदय, 2. शिक्षालय, 3. रेखांकित, 4. निष्कपट, 5. परमौज, 6. स्वेच्छा

(च) 1. गंगा + उदक, 2. नि + ऊन, 3. पो + इत्र, 4. देव + इंद्र, 5. अति + अधिक, 6. चे + अन,

6. समास

(क) 1. संबंध 2. कर्म 3. संप्रदान 4. अधिकरण 5. अपादान

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) 5. (अ)

(घ) 1. परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं। (i) कर्म तत्पुरुष–रथ चालक-रथ को चलाने वाला (ii) करण तत्पुरुष-गुणयुक्त-गुणों से युक्त (iii) संप्रदान तत्पुरुष-डाकगाड़ी-डाक के लिए गाड़ी (iv) अपादान तत्पुरुष-गुणहीन-गुणों से हीन (v) संबंध तत्पुरुष-सेनापति-सेना का पति (ii) अधिकरण तत्पुरुष-आपबीती-आप पर बीती

2. कर्मधारय समास ..... भला–बुरा आदि।

3. द्विगु समास ..... चार आनों का समूह बहुव्रीहि समास ..... (कृष्ण)

4. द्वंद्व समास ..... ठीक समय पर।

5. द्विगु समास ..... (श्रीकृष्ण)

(ङ) 1. वन का वासी (तत्पुरुष समास), 2. नर और नारी (द्वन्द समास), 3. चार भुजाओं वाला (बहुव्रीहि समास), 4. राह के लिए खर्च (तत्पुरुष समास), 5. ऋण से मुक्त (तत्पुरुष समास), 6. सीता और राम (द्वन्द समास)

(च) 1. दोषयुक्त–तत्पुरुष समास, 2. पति-पत्नी–द्वन्द समास, 3. नरभक्षी–तत्पुरुष समास, 4. दोराहा–द्विगु समास, 5. पाप-पुण्य - द्वन्द्व समास, 6. त्रिफला - द्विगु समास

7. संज्ञा

(क) 1. सेवा 2. भाववाचक 3. भाववाचक भाववाचक 4. जातिवाचक 5. भाववाचक

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(ग) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब)

(घ) 1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण, अथवा भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं। उदाहरण : राम, कृष्ण, मीराबाई, स्त्री आदि। 2. जिस शब्द से किसी वर्ग या जाति के पदार्थों, वस्तुओं या प्राणियों का बोध हो उसे जातिवचाक संज्ञा कहते हैं। जैसे - बालक, पुस्तक, बिजली, आम आदि। 3. जिस शब्द से किसी व्यक्ति स्थान या वस्तु के गुण, दशा, भाव या स्थिति का बोध हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - सुख, दु:ख, अपमान, जवानी आदि। 4. जिस संज्ञा शब्द से किसी पदार्थ का बोध हो, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–सोना, चाँदी, लोहा, तांबा आदि। जिस संज्ञा शब्द से वस्तु अथवा व्यक्ति के समूह का बोध हो उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे–कक्षा, छल, गुच्छा, मंडल आदि।

5. व्यक्तिवाचक और भाववाचक संज्ञाएँ एकवचन . ..... ये शब्द व्यक्तिवाचक हैं।

(ङ) 1. विशेषण से 2. जातिवाचक संज्ञा से 3. सर्वनाम से 4. विशेषण से 5. क्रिया से

(च) 1. सुंदरता–भाववाचक संज्ञा, कश्मीर–व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. रावणों-जातिवाचक संज्ञा 3. महाराष्ट्र– व्यक्तिवाचक संज्ञा 4. राहुल–व्यक्तिवाचक संज्ञा 5. कुतुबमीनार, दिल्ली–व्यक्तिवाचक संज्ञा

8. लिंग

(क) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ख) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (अ)

(ग) 1. शब्द के जिस रूप से पुरुष अथवा स्त्री जाति के होने का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं; जैसे-लड़का-लड़की, लड़का-पुल्लिंग, लड़की-स्त्रीलिंग 2. पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्दों को पुल्लिंग कहते हैं; जैसे–बालक, घोड़ा। 3. नर्स, सती, धाय, सौत, सुहागिन, संतान, कोयल, चील, लोमड़ी, गिलहरी, दीमक, मैना, मक्खी, मछली, मकड़ी, छिपकली, भेड़, बुलबुल आदि सदा स्त्रीलिंग रहने वाले शब्द हैं। 4. (i) नदियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–गंगा, यमुना, कावेरी, गोदावरी, नर्मदा आदि। (ii) तिथियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–पंचमी, नवमी, एकादशी, अमावस्या आदि। (iii) नक्षत्रों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–रोहिणी, चित्रा, कृतिका, भरणी आदि। (iv) शरीर के कुछ अंगों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–आँख, जीभ, नाक, टाँग, अँगुली, छाती आदि। (v) भोजन-मसालों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे–मिर्च, हल्दी, सब्जी, रोटी, पूरी, जलेबी आदि। 5. नित्य पुल्लिंग शब्द–तोता, कौआ, पक्षी, उल्लू, पशु, मच्छर, कीड़ा, भेड़िया, गैंडा, बाज, गरुड़, खरगोश, बिच्छू, चीता आदि शब्द पुल्लिंग माने जाते हैं। पुल्लिंग की पहचान - 1. जिन शब्दों के अंत में ..... मंडल, परिवार, समाज आदि।

(घ) 1. अभिनेत्री–अभिनेता, 2. मक्खी–नर मक्खी, 3. क्षत्राणी–क्षत्रिय, 4. कर्त्री–कर्ता, 5. आयुष्मति–आयुष्मान, 6. नेत्री–नेता, 7. दीमक–नर

दीमक, 8. भेड़–नर भेड़, 9. विधवा–विधुर, 10. चील–नर चील, 11. बीवी–मियाँ, 12. निवेदिका–निवेदक

(ङ) 1. कौआ–मादा कौआ, 2. सुधारक–सुधारिका, 3. दाता–दात्री, 4. भेड़िया–मादा भेड़िया, 5. वृद्ध–वृद्धा, 6. मर्द–औरत, 7. रुद्र–रुद्राणी, 8. बिच्छू–मादा 9. इंद्र–इंद्राणी, 10. मच्छर– मादा मच्छर 11. खरगोश–मादा खरगोश, 12. बुद्धिमान–बुद्धिमती,

(च) 1. भारत में अनेक महान सम्राज्ञी हुई हैं।

2. धोबिन रानी के वस्त्र धोया करती थी।

3. कर्वायत्री मंच पर आई और रोचक कविताएँ सुनाई।

(छ) 1. पुल्लिंग 2. पुल्लिंग 3. पुल्लिंग, स्त्रीलिंग 4. पुल्लिंग

(ज) स्वयं कीजिए।

9. वचन

(क) 1. ऋतुएँ 2. पाठकवर्ग 3. प्रजाजन 4. प्राण 5. गायकवृंद

(ख) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब)

(घ) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उनके एक या अनेक का बोध होता है उसे वचन कहते हैं। जैसे- लड़का-लड़के, पंखा-पंखे, बच्चा-बच्चे आदि। 3. पदार्थसूचक शब्दों ..... है; जैसे-(1) वह सारा पानी पी गया। (2) दूध बहुत मीठा था। 2. कुछ संज्ञा शब्दों का प्रयोग सदा बहुवचन में होता है; जैसे–आँसू, दर्शन, प्राण, बाल, लोग, हस्ताक्षर (i) दु:खद समाचार सुनते ही उसके आँसू निकल पड़े। (ii) आप जैसे महापुरुष के दर्शन बड़े दुर्लभ हैं। (iii) भय से तो जैसे उसके प्राण ही निकल गए थे। (iv) उसके बाल उड़ गए हैं। (v) लोग तो प्राय: सुनी सुनाई बात पर विश्वास कर लेते हैं। (vi) उसने पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए हैं। 3. कुछ एकवचन संज्ञा शब्दों के साथ 'लोग, वर्ग ..... काम पर आ गए हैं।

(ङ)

1. लड़का	–	एकवचन
2. मक्खियाँ	–	बहुवचन
3. रात	–	एकवचन
4. डिबिया	–	एकवचन
5. पंखे	–	बहुवचन
6. वस्तु	–	एकवचन
7. गरीब लोग	–	बहुवचन,
8. धेनुएँ	–	बहुवचन,
9. कथाएँ	–	बहुवचन,
10. ऋषि समाज	–	बहुवचन

(च) 1. बच्चे पुस्तक में से कहानियाँ पढ़ रहे थे।

2. गर्मी में रात छोटी होती है।

3. रजत ने बिल्ली और तोता पाल रखा है।

4. शीशे टूट गए।

5. लताएँ वृक्ष पर फैल गईं।

(छ) 1. तुम्हारे केश बहुत घने हैं।

2. सोना मूल्यवान धातु है।

3. रोगी के प्राण निकल गये।

4. आपके दर्शन दुर्लभ हो गये हैं।

10. कारक

(क) 1. संबोधन 2. संबंध 3. कर्म 4. अपादान 5. संप्रदान

(ख) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब)

(ग) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप और कार्य से उसका संबंध वाक्य में क्रिया या अन्य संज्ञा या सर्वनाम शब्दों से जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं। 2. कर्ता कारक विभक्ति रहित-वर्तमान काल और भविष्यत् काल की क्रिया होने पर परसर्ग 'ने' का प्रयोग नहीं होता; जैसे–बालक पत्र लिखता है, मैं चाय पिऊँगा। कर्ता कारक विभक्ति सहित-'ने' का प्रयोग भूतकाल में क्रिया के सकर्मक होने पर होता है; जैसे–बालक ने पत्र लिखा, मैंने चाय पी। 3. संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिससे पृथकता का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं; जैसे–रवि ने डाल से फूल तोड़ा। करण कारक तथा अपादान कारक दोनों का विभक्ति चिह्न से है, परंतु करण कारक में 'से' किसी साधन से काम करने का सूचक होता है जबकि अपादान कारक में 'से' अलग होने का सूचक होता है; जैसे–(i) पेड़ से पत्ते गिरते हैं। (अपादान कारक) (ii) मैं पैन से पत्र लिखता हूँ। (करण कारक) 4. संज्ञा अथवा सर्वनाम को क्रिया से जोड़ने वाले चिह्न कारक कहलाते हैं।

क्रम	कारक	विभक्ति चिह्न
(1)	कर्ता कारक	ने

(2) कर्म कारक — को
(3) करण कारक — से, के द्वारा
(4) संप्रदान कारक — के लिए, को
(5) अपादान कारक — से (अलग होना)
(6) संबंध कारक — का, की, के, रा, री, रे
(7) अधिकरण कारक — में, पर
(8) संबोधन कारक — हे, अरे, ओ

5. जिसके लिए कार्य किया जाए, उसका बोध कराने वाला शब्द सम्प्रदान कारक कहलाता है। जैसे–(i) बच्चे के लिए दूध लाओ। (i) मैं पूजा के लिए फूल लाया हूँ।

(घ) 1. (ब) 2. (द) 3. (अ) 4. (ब)

(ङ) 1. में, में 2. को 3. को 4. को 5. को 6. की 7. के 8. से

(च) 1. अधिकरण कारक 2. अधिकरण कारक 3. अपादान कारक 4. करण कारक 5. संबंध कारक 6. संबंध कारक

11. सर्वनाम

(क) 1. निश्चयवाचक 2. अन्य 3. मध्यम 4. उत्तम 5. तीन

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) 5. (स)

(घ) 1. संज्ञा के स्थान पर आने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। 2. जो सर्वनाम प्रश्न पूछने के लिए प्रयुक्त होते हैं, वे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे–तुमसे किसने कहा? कौन आया है? 3. जिन सर्वनामों का प्रयोग अपनेपन का बोध कराने के लिए किया जाता है, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे–मैं अपना काम स्वयं कर लूँगा। 4. सर्वनाम विकारी शब्द हैं। वचन (एकवचन, बहुवचन) और संबंध (रा, री, रे, का, की, के) के कारण ही सर्वनाम शब्द का रूप बदलता है; जैसे–मैं, मेरा, हम, हमारा आदि। 5. निश्चयवाचक सर्वनाम ..... छिपा रहे हो।

(ङ) 1. वह-पुरुषवाचक सर्वनाम, कहाँ-प्रश्नवाचक सर्वनाम 2. अपना–निजवाचक सर्वनाम 3. स्वयं–निजवाचक सर्वनाम 4. क्या– प्रश्नवाचक सर्वनाम 5. जो, सो–संबंधवाचक सर्वनाम 6. कोई–अनिश्चयवाचक सर्वनाम, वह–पुरुषवाचक सर्वनाम

(च) रचित की मम्मी डॉक्टर है तथा रचित के पिता अध्यापक हैं। वह अपने माता-पिता का बहुत आदर करता है। वह कभी किसी से सहायता नहीं लेता। उसने कभी झूठ नहीं बोला। उसकी सभी प्रशंसा करते हैं। उसके जैसा बालक सबको प्रिय होता है।

(छ) 1. मुझे आज जाना है। 2. वह वहाँ तुझे मिलेगा। 3. मैं वहाँ गया था। 4. किस आदमी का घर इस गली में है ?

(ज) 1. वह, अन्य पुरुष 2. तुमने, मध्यम पुरुष 3. तू, मध्यम पुरुष 4. आप, मध्यम पुरुष 5. तू, मध्यम पुरुष

(झ) स्वयं कीजिए।

12. विशेषण

(क) 1. वैज्ञानिक 2. तीन 3. विशेष्य 4. निश्चित 5. जापान, जापानी

(ख) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स)

(घ) 1. जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं उन्हें विशेषण कहा जाता है। इसके पाँच भेद हैं- (i) गुणवाचक विशेषण (ii) संख्यावाचक विशेषण (iii) परिमाणवाचक विशेषण (iv) सार्वनामिक विशेषण (v) व्यक्तिवाचक विशेषण 2. विशेषण जिन संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता बताते हैं उन्हें विशेष्य कहते हैं। कुछ विशेषण शब्द विशेषणों की विशेषता बताते हैं उन्हें प्रविशेषण कहते हैं। 3. जो शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रंग व आकार आदि का बोध कराता है, वह गुणवाचक विशेषण कहलाता है; जैसे–(i) गिलास में गरम दूध है। (ii) मूर्ख लड़का कुछ नहीं समझता। (iii) मीठा आम सभी को अच्छा लगता है। 4. दो व्यक्ति ..... सबसे लम्बी लड़की है।

(ङ) 1. हरे-भरे 2. अच्छी 3. पहली 4. . काला 5. थोड़े 6. शुद्ध

(च) 1. कम–कमतर, कमतरीन; 2. बुद्धिमान–अधिक बुद्धिमान, सबसे अधिक बुद्धिमान; 3. विशाल– विशालतर, विशालतम; 4. योग्य–योग्यतर, योग्यतम; 5. बद–बदतर, बदतरीन

(छ) 1. निर्धन, राम-लखन 2. गंदे, दाँत 3. सुंदर, कमला 4. मैले, वस्त्र 5. पचास, दर्शक

(ज) 1. बहुत 2. ज्यादा 3. एकदम 4. बहुत 5. अत्यंत

(झ) स्वयं कीजिए।

13. क्रिया एवं वाच्य

(क) 1. खिंचवाया 2. मँगवाई 3. खेलकर 4. लिखवाया 5. दो

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब)

(घ) 1. जिन शब्दों से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उन्हें क्रिया कहते हैं। कर्म के आधार पर क्रिया-भेद ..... 'मंत्री', 'पुरस्कार' हैं। 2. जहाँ दो या दो से अधिक धातुओं से बनी क्रियाओं का साथ-साथ प्रयोग हो, वह संयुक्त क्रिया कहलाती है; जैसे–मैंने खाना खा लिया था। जब पहली क्रिया के तुरंत बाद मुख्य क्रिया होती है, तो पहली क्रिया को तात्कालिक क्रिया कहते हैं; जैसे–वह विद्यालय से आते ही सो गया। 3. मूल धातु को छोड़कर अन्य शब्दों (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि) में प्रत्यय लगाकर बनने वाली क्रिया नामधातु क्रिया कहलाती है; जैसे–हाथ से हथियाना, बात से बतियाना। जिस क्रिया शब्द (पद) से यह पता चले कि कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य को उसे करने की प्रेरणा देता है, अर्थात् कार्य को किसी अन्य से करवाता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं; जैसे–अध्यापक ने छात्र से पत्र लिखवाया। इस वाक्य में 'लिखवाया' प्रेरणार्थक क्रिया है।

जब पहली क्रिया के तुरंत बाद मुख्य क्रिया होती है तो पहली क्रिया को तात्कालिक क्रिया कहते हैं; जैसे–वह विद्यालय से आते ही सो गया। 4. क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है अथवा भाव उसे वाच्य कहते हैं। कर्तृवाच्य ..... उनसे नहीं नहाया गया। 5. कर्मवाच्य का प्रयोग प्रमुख ..... बजे प्रस्तुत किया जाएगा।

(ङ) 1. जाता, जा 2. बनाती, बना 3. जाओगे, जा 4. लिख लिया, लिख 5. देखता, देख

(च) 1. सकर्मक 2. सकर्मक 3. अकर्मक 4. अकर्मक 5. सकर्मक

(छ) 1. प्रेरणार्थक 2. पूर्वकालिक 3. पूर्वकालिक क्रिया 4. प्रेरणार्थक

(ज) 1. लालच–ललचाना, 2. चक्कर–चकराना, 3. हाथ–हथियाना, 4. शर्म–शर्माना 5. अपना –अपनाना, 6. बात–बतियाना, 7. लाठी-लठियाना, 8. रंग–रँगवाना,

(झ) 1. कटवाए 2. कटवा 3. लिखवाया 4. बनवाए 5. भिजवाया

(ञ) 1. वह विद्यालय से आते ही सो गया।

2. वह खाना खाते ही गाड़ी में बैठ गई।

(ट) 1. कर्मवाच्य 2. भाववाच्य 3. कर्मवाच्य 4. कर्तवाच्य 5. भाववाच्य

(ठ) 1. क्या उनसे बोला जाएगा? 2. पुलिस ने भीड़ पर गोलियाँ चलाई। 3. चोर कल तक पुलिस द्वारा पकड़ा जाएगा। 4. बालक पत्र लिखता है। 5. हमारे द्वारा फल खाए जाएँगे। 6. दादी द्वारा कहानी सुनाई जाती थी।

14. काल

(क) 1. भविष्यत् 2. अपूर्णभूत 3. वर्तमान 4. भूतकाल

(ख) 1. (स) 2. (अ) 3. (स) 4. (अ)

(ग) 1. क्रिया के रूप से कार्य के करने, होने या न होने के समय का बोध होता है। इस समय को ही व्याकरण में काल कहते हैं। इसके तीन भेद हैं। (i) भूतकाल (i) वर्तमान काल (iii) भविष्यत् काल 2. भूतकाल के निम्नलिखित छह उपभेद होते हैं..... ..... फसल अच्छी होती। 3. जो समय चल रहा है ..... क्रियाएँ कहलाती हैं। 4. क्रिया के जिस रूप से ..... भविष्यत् काल में हैं।

(घ) 1. अपूर्ण भूत 2. सामान्य भूत 3. हेतुहेतुमद् भूत 4. संभाव्य भविष्यत् 5. सामान्य भविष्यत्

15. अविकारी शब्द

(क) 1. हाथों हाथ 2. बहुत 3. थोड़ा 4. खूब 5. सरपट

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (अ) 5. (ब)

(घ) 1. जिन शब्दों पर लिंग, वचन, काल, कारक आदि के प्रभाव से कोई विकार उत्पन्न नहीं होता, वे शब्द अविकार या अव्यय कहलाते हैं। 2. कालवाचक क्रियाविशेषण ..... प्रतिवर्ष आदि। स्थानवाचक क्रियाविशेषण ..... नीचे आदि। 3. अर्थ के आधार पर संबंधबोधक अर्थ ..... पागल हो रहा था। 4. समानाधिकरण समुच्चयबोधक ..... पकड़ा गया। 5. जो शब्द घृणा, विस्मय, शोक, हर्ष, भय आदि भावों का बोध कराते हैं, उन्हें विस्मायादिबोधक अव्यय कहा जाता है; जैसे–(i)

हाय! मैं लुट गया (ii) अरे! आप आ गए।

(ङ) 1. ऊपर–क्रियाविशेषण 2. जोर से–क्रियाविशेषण 3. पहले, क्रियाविशेषण 4. अब तक–क्रियाविशेषण 5. ऊपर-नीचे –क्रियाविशेषण

(च) 1. किन्तु–समानाधिकरण 2. बल्कि–समानाधिकरण 3. और–समानाधिकरण 4. या–समानाधिकरण 5. कि–व्यधिकरण

(छ) 1. थोड़ा– परिमाणवाचक क्रियाविशेषण 2. आज– कालवाचक क्रियाविशेषण 3. इधर- उधर– दिशावाचक क्रियाविशेषण 4. प्रतिदिन–कालवाचक क्रियाविशेषण 5. अब– कालवाचक क्रियाविशेषण

(ज) 1. भय–बाप रे बाप! इतना भीषण भूकंप। 2. हर्ष–वाह! तुमसे ऐसी ही आशा थी। 3. घृणा–छि:! मुझे ऐसे कामों से घृणा है। 4. स्वीकृति–हाँ! बच्चे, जरा मेरी भी सुनना। 5. आशीर्वाद–ईश्वर आपके बच्चों को स्वस्थ और निरोगी रखे, दीर्घायु हो!

16. वाक्य-विचार

(क) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(ख) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब)

(ग) 1. सार्थक शब्दों का वह समूह जो व्यवस्थित हो और कोई अर्थ देता हो, वाक्य कहलाता है। वाक्य के प्रमुख अंग हैं (i) उद्देश्य (ii) विधेय 2. सार्थकता ..... माना जा सकता। 3. आसक्ति या निकटता ..... अशुद्ध हो जाता है। 4. विधानवाचक वाक्य ..... फसल न सूखती। 5. रचना के आधार पर वाक्य-भेद (1) सरल वाक्य (2) संयुक्त वाक्य (3) मिश्र वाक्य

(घ) 1. वह–पुस्तकें खरीदने बाजार गया 2. पनवाड़ी–पान लगा रहा है 3. नौकर–कमरा साफ कर दिया 4. मैं - चाहता हूँ, तुम - परिश्रम करो 5. उसने–सफेद शेर देखा

(ङ) 1. विधानवाचक वाक्य 2. प्रश्नवाचक वाक्य 3. आज्ञावाचक वाक्य 4. नकारात्मक वाक्य 5. संदेहवाचक वाक्य 6. इच्छासूचक वाक्य 7. विस्मयादिबोधक वाक्य 8. संकेतवाचक वाक्य

(च) 1. सरल वाक्य 2. सरल वाक्य 3. मिश्र वाक्य 4. संयुक्त वाक्य 5. मिश्र वाक्य

17. विराम-चिह्नों का प्रयोग

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब) 6. (स)

(ख) स्वयं कीजिए।

(ग) 1. विराम का अर्थ है रुकना। लिखते समय विराम-चिह्नों का प्रयोग आवश्यक है। इनका प्रयोग न होने से वाक्य का अर्थ बदल जाता है। अल्प विराम ..... वहाँ नहीं जाऊँगा। 2. उपविराम ..... लोकमान्य तिलक। 3. यह किसी कथन के पूर्ण होने पर, अप्रत्यक्ष प्रश्नों के अंत में तथा कविता में छंद के चरण के अंत में आता है; जैसे–सदा सत्य बोलो। 4. जिस वाक्य में कोई प्रश्न पूछा गया हो उसके अंत में यह चिह्न लगाया जाता है; जैसे–क्या तुम मेरे साथ चलोगे?

(घ) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब)

(ङ) 1. नेहरू जी ने कहा था, ''आराम हराम है।'' 2. वह खीझ कर बोला, क्यों हट जाऊँ? 3. छी:! चोरी करते हो, क्या तुम्हें संस्कारों में यही सब मिला है? 4. अरे! मोहन गया, जब मैं मिला था तब वह कुछ नहीं बोला। 5. कर्म के आधार पर क्रिया दो प्रकार की होती है–(क) अकर्मक (ख) सकर्मक 6. बस हो गया; रहने दीजिए। 7. मनुष्य को उत्सव प्रिय है, क्योंकि वह आनंदप्रद है। 8. सुखदेव, राजगुरु, भगतसिंह तथा चंद्रशेखर आजाद ने देश की रक्षा के लिए अपने प्राण दे दिए।

18. शब्द-भंडार

(क) 1. जलद, जलज 2. चिंता, चिता 3. परिमाण, परिणाम 4. अनिल, अनल 5. कूल, कुल

(ख) 1. झरना 2. चिह्न 3. श्रेष्ठ 4. धनी 5. पैर

(ग) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब)

(घ) 1. पंडित-मूर्ख, सम-विषम 2. आचार-अनाचार, आलसी-परिश्रमी 3. चर-अचर, अर्थ-अनर्थ 4. आय-व्यय, इष्ट-अनिष्ट 5. कनिष्ठ-ज्येष्ठ, जय-पराजय, घृणा-प्रेम

(ङ) 1. सोना, धतूरा, गेहूँ 2. नासिका, स्वर्ग 3. पंख, तरफ, दो सप्ताह 4. टैक्स, हाथ, करना 5. दिन, आक्रमण, अवसर 6. संसार, उत्पत्ति, शंकर 7. ईश्वर, आकाश, विष्णु 8. मकान, कुल, कार्यालय

(च) 1. निष्पाप 2. परोक्ष 3. उदारमना 4. कवयित्री 5. साप्ताहिक 6. अस्पृश्य 7.असीम 8. निर्दोष

(छ) 1. जिसने बहुत कुछ सुना हो। 2. जिस स्थान पर अभिनेता अपना वेश विन्यास करते हैं। 3. नष्ट हो जाने वाला। 4. वर्षा की अति होना। 5. प्रतिदिन होने वाला।

(ज) 1. स्वतंत्र–हमारा देश भारत 15 अगस्त

1947 को स्वतंत्र हुआ। स्वच्छंद–लंगूर स्वच्छंद प्रकृति का जानवर होता है। 2. उपयोग–गाय का दूध और घी उपयोग करने के पदार्थ हैं। उपभोग–हमें पौष्टिक और संतुलित भोजन उपभोग करना चाहिए। 3. अपराध–कानून तोड़ना अपराध है। पाप–झूठ बोलना पाप है। 4. अधिक–अधिकतर माता-पिता बच्चों को नियंत्रण में रखने के बजाय अधिक छूट देते हैं। पर्याप्त–हमें पर्याप्त भोजन करना चाहिए। 5. शत्रु–शत्रु को सदैव प्यार से जीता जा सकता है। विरोधी–मनुष्य का मन सदैव गतिशील रहता है ऐसा होता है क्योंकि विरोधी शक्तियाँ उसे अपनी ओर खींचती हैं। 6. निवेदन–आपसे विनम्र निवेदन है कि यहाँ एक बड़े कूड़ेदान का निर्माण करवाएँ। आवेदन–नौकरी के लिए मैंने आवेदन किया है।

20. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

(क) 1. गिरगिट की तरह रंग 2. खाक में मिल 3. खिल्ली उड़ाना 4. कान कतरता 5. खून खौल

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब)

(घ) 1. ऐसा वाक्यांश जो सामान्य से भिन्न किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराए और शाब्दिक अर्थ से भिन्न किसी अन्य में रूढ़ हो जाए उसे मुहावरा कहते हैं। मुहावरों का प्रयोग वाक्य के प्रसंग में होता है, अलग से नहीं। यदि कहा जाए कि नौ और दो ग्यारह होते हैं, तो यह सामान्य कथन ही होगा, मुहावरा नहीं। परंतु प्रसंगवश कहा जाए कि 'चोर साइकिल लेकर नौ दो ग्यारह हो गया।' तो यहाँ यह मुहावरा होगा। 2. लोकोक्ति का अर्थ है लोक में प्रचलित उक्ति। लोकोक्तियाँ सामान्यत: पूर्ण वाक्यों के रूप में होती हैं जिन में समाज का चिर-संचित अनुभव रहता है। ये ऐसी तीखी उक्तियाँ होती हैं जो श्रोता के हृदय पर सीधा एवं गहरा प्रभाव डालती हैं। लोकोक्तियाँ भूतकाल के लोक-अनुभवों का परिणाम होती हैं तथा वाक्य के रूप में प्रयुक्त होती है। इन्हें साधारण बोलचाल की भाषा में 'कहावत' भी कहा जाता है।

मुहावरे तथा लोकोक्तियों ..... होते हैं।

(ङ) 1. घोड़े बेचकर सोना 2. खून पसीना एक करना 3. खून खौलना 4. गिरगिट की तरह रंग बदलना 5. गागर में सागर भरना

(च) 1. चोर-चोर मौसेरे भाई 2. जिसकी लाठी, उसकी भैंस 3. चोर की दाढ़ी में तिनका 4. जल में रहकर मगर से बैर

21. अलंकार

(क) 1. अलंकार 2. दो 3. श्लेष 4. अतिश्योक्ति 5. उत्प्रेक्षा

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. कविता का सौंदर्य ..... अलंकार कहते हैं। 2. अलंकार के दो भेद हैं- (i) शब्दालंकार (ii) अर्थालंकार 3. शब्दालंकार के तीन भेद हैं- 1. अनुप्रास 2. यमक 3. श्लेष। 4. काव्य में जब ..... हो गया। अर्थालंकार के चार भेद हैं- 1. उपमा 2. रूपक 3. उत्प्रेक्षा 4. अतिश्योक्ति

(घ) 1. काव्य में शब्दों के ..... अर्थालंकार कहते हैं। 2. अनुप्रास अलंकार ..... उस दिन। यमक अलंकार ..... कामदेव की पत्नी। 3. उपमा अलंकार ..... यहाँ उपमा अलंकार है। उत्प्रेक्षा अलंकार ..... संभावना प्रकट की गई है।

(ङ) 1. यमक अलंकार 2. अनुप्रास 3. यमक 4. अनुप्रास 5. उपमा

22. मौखिक रचना

(क) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ख) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब)

(ग) 1. अंत्याक्षरी से छात्रों की मौखिक-रचना की प्रतिभा का विकास होता है। इससे उन्हें कविताएँ, छंद, दोहे आदि कंठस्थ करने की प्रेरणा मिलती है। अंत्याक्षरी के लिए उच्चकोटि की भावपूर्ण कविताएँ कंठस्थ करनी चाहिए। 2. भाषा की मौखिक अभिव्यक्ति में उच्चारण की शुद्धता आवश्यक है। इसके अभाव में वर्ण, शब्द अथवा वाक्य का सही रूप अभिव्यक्त न होने पर विचार पूर्ण व सही रूप में अभिव्यक्त नहीं हो सकते, क्योंकि अभिव्यक्ति का यही मुख्य साधन है। अत: उच्चारण की शुद्धता अपरिहार्य है। 3. संवाद का अर्थ है–बातचीत या वार्तालाप। इससे मौखिक अभिव्यक्ति की कुशलता बढ़ती है। इसी प्रकार अभिनय के माध्यम से आत्मविश्वास, अंग-संचालन, संकेत तथा उचित भाव-भंगिमाओं से अपनी मनोदशाओं का चित्रण करने की कुशलता का विकास होता है। संवाद और अभिनय दोनों ही सामाजिक मनोविनोद तथा

मौखिक अभिव्यक्ति की कुशलता के माध्यम हैं। 4. कविता सुपाठ ..... सार्थक हो पाता है। समाचार-पाठ .....जा सकते हैं। 5. वार्तालाप एवं परिचर्चा ..... प्रक्रिया अपनाई जाती है। भाषण ..... भाषण रुचिकर नहीं होता।

अराध्या व्याकरण-8

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. देवनागरी 2. ध्वनि 3. 14 सितंबर 4. सिंधु 5. बोली

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (अ)

(घ) 1. भाषा विचारों के आदान-प्रदान का वह साधन है, जो लिखने अथवा बोलने में प्रयोग लाया जाता है। भाषा के दो रूप हैं-1. मौखिक 2. लिखित। लिखित भाषा: मन के भावों तथा विचारों को जब लिखकर प्रकट किया जाता है तो यह भाषा का लिखित रूप कहलाता है। लिखित भाषा में कुछ ध्वनि-चिह्न प्रयोग में लाए जाते हैं। 2. भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं। हरियाणवी, राजस्थानी, भोजपुरी, मैथिली, कन्नौजी, छत्तीसगढ़ी आदि बोलियाँ हैं। 3. भाषा को लिखने की विधि लिपि कहलाती है लिखित भाषा में ..... उसे लिपि कहते हैं। 1. गुजराती ..... 20. देवनागरी। 4. हिन्दी की उपभाषाएँ ..... वर्ग में आती है। 5. किसी भाषा को शुद्ध रूपेण प्रयोग करने की विधि बताने वाली नियमावली को उसका व्याकरण कहते हैं। व्याकरण के अंग ..... विचार किया जाता है। 6. भाषा विशेष का प्रयोग विस्तृत भू-भाग पर होने के कारण उसमें उसकी बोलियों और उपभाषाओं के प्रयोग होने लगते हैं तथा भौगोलिक भिन्नता ..... मानक रूप कहलाता है।

(ङ) 1. अंग्रेजी - रोमन 2. संस्कृत - देवनागरी 3. उर्दू - फारसी 4. गुजराती - गुजराती 5. पंजाबी-गुरूमुखी

2. वर्ण-विचार

(क) 1. समान व्यंजनों 2. स्पर्श 3. अंत: स्थ 4. सबसे छोटी 5. ॠ

(ख) 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब)

(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) 5. (स)

(घ) 1. मूल ध्वनि ..... हैं कहलाती है वर्णों के दो भेद (1) स्वर (2) व्यंजन। 2. (i) उच्चारण की दृष्टि से स्वर-भेद- जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इसकी संख्या चार है- अ, इ, उ, ऋ। (ii) जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से दुगना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। इनकी संख्या सात है- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ। (iii) प्लुत स्वर- जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। प्लुत रूप का निर्देश करने के लिए स्वर के आगे '३' का अंक लिखने की परंपरा रही है; जैसे- ओ३म्। परंतु हिन्दी में इस प्रकार का प्रचलन नहीं है। 3. जिन वर्णों का उच्चारण करते समय मुख से निकलने वाली वायु रुकावट के साथ बाहर निकलती है और उनके स्पष्ट उच्चारण में स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। .... इनकी संख्या चार है- श्, ष्, स्, ह्। 4. हिन्दी वर्णमाला में स्वरों और व्यंजनों के अतिरिक्त दो अन्य वर्ण भी हैं- अं तथा अः। इन दोनों का प्रयोग स्वरों के बाद ..... इसलिए इन्हें अयोगवाह कहा जाता है। अनुस्वार ..... प्रात:, नम: आदि। 5. प्रयत्न का अर्थ है- कोशिश या चेष्टा। ध्वनियों (वर्णों) के उच्चारण में होने वाली चेष्टा को प्रयत्न कहा जाता है। प्रयत्न दो प्रकार का होता है- (क) आभ्यंतर प्रयत्न (ख) बाह्य प्रयत्न ..... इस प्रयत्न के अंतर्गत 'य, र, ल, व' वर्ण आते हैं। बाह्य प्रयत्न- वर्णों का बोलते हुए अंत में किए गए प्रयत्न को बाह्य प्रयत्न कहते हैं। इसके दो भेद हैं- ..... तथा श, ष, स वर्ण अघोष हैं। इनकी संख्या तेरह है। 6. भाषाई ध्वनियों का उच्चारण मुख से होता है; किंतु ध्वनियों के उच्चारण-स्थान मुख के भीतर भी अलग-अलग हैं। मुख के जिस भाग से जो वर्ण बोला जाता है, वही उस वर्ण का उच्चारण-स्थान कहलाता है। .... उन्हें दंतोष्ठ्य वर्ण कहते हैं। ये हैं- व और फ। 7. अल्पप्राण- जिन वर्णों के उच्चारण में श्वाँसवायु कम मात्रा में बाहर निकलती हैं ..... और श, ष, स, ह् महाप्राण हैं। 8. बोलते समय किसी अक्षर या शब्द पर जो बल दिया जाता है, उसे बलाघात कहते हैं। ..... मोहन ने सुरेश को पुस्तक

दी। (केवल पुस्तक ही दी, कुछ और नहीं।)

(ङ) 1. श्रावण, श्री। 2. विद्या-गद्य। 3. स्रोत-सहस्र। 4. भक्त, शक्ति 5. ट्रक-राष्ट्र।

(च) 2. संध्या - स् + अ + न् + ध् + य् + आ 3. औरत - औ + र् + अ + त् + अ 4. स्त्री - स् + त् + र + ई 5. अमावस्या - अ + म् + आ + व् + अ + स् + य् + आ

(छ) 1. प-ओष्ठ, 2. श-तालु, 3. क-कंठ, 4. व-दंत और ओष्ठ 5. ठ- मूर्धा, 6. च-तालु।

3. शब्द-विचार

(क) 1. क्रियाविशेषण 2. यौगिक 3. पद 4. शब्द 5. ऊँचा

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (स) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब)

(घ) 1. शब्द एक अथवा अनेक वर्णों के संयोग से बने सार्थक एवं स्वतंत्र ध्वनि-समूह को शब्द कहते हैं। पद वाक्य में प्रयुक्त हो जाने पर शब्द की स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है और वह व्याकरण के नियमों (लिंग, वचन, कारक आदि) से बँध जाता है। इससे उसका रूप भी बदल जाता है। इस स्थिति में वह शब्द न रहकर पद बन जाता है।

2. (1) तत्सम (2) तद्भव (3) देशज (4) विदेशी (5) संकर

3. (1) रुढ़ शब्द (2) यौगिक (3) योगरूढ़

4. (1) एकार्थी (2) अनेकार्थी (3) पर्यायवाची (4) विलोम शब्द

(ङ) 1. गर्दभ-गधा, 2. सर्व-सब 3. चर्म-चमड़ा 4. नृत्य-नाच, 5. कर्ण-कान, 6. घट-घड़ा 7. क्षीर-खीर, 8. कीट-कीड़ा 9. निद्रा-नींद

(च) 1. सूरज-सूर्य, 2. हाथ-हस्त 3. कोयल-कोकिल 4. दुबला-दुर्बल, 5. रात-रात्रि, 6. मोर-मयूर,

(छ) 4. सत्य-रूढ़, 5. नीरज-योगरूढ़, 6. भोजनालय - यौगिक, 7. जन्मभूमि - यौगिक, 8. रसोईघर - यौगिक, 9. सूर्य - रुढ़, 1. पीतांबर -योगरूढ़, 2. पंकज - योगरूढ़, 3. मृगनयनी - यौगिक,

(ज) 1. एकार्थी- कुत्ता, हाथी, घोड़ा

2. पर्यायवाची- सदन, भवन, घर

3. अनेकार्थी- सोना, कुल, पत्र

4. रूढ़-पैर, घोड़ा, घर

5. योगरूढ़- नीरज, चारपाई, जलद

6. यौगिक- डाकघर, विद्यालय, सब्जीमंडी

4. उपसर्ग व प्रत्यय

(क) 1. अनु 2. अति 3. पुनर् 4. कर 5. एरा

(ख) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (स)

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) 5. (स)

(घ) 1. (अ) 2. (स) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब)

(ङ) 1. वे शब्दांश जो आगे जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं या उनके अर्थ को बदल देते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।

जो शब्दांश मूल शब्दों के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता ला देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।

2. (1) बे- बेघर, बेहोश, बेरहम (2) हर- हर एक, हर तरफ, हर रोज (3) कम- कमजोर, कमउम्र, कमबख्त (4) सर- सरपंच, सरताज, सरकार

3. कृत प्रत्यय- जो प्रत्यय क्रिया के मूल धातु-रूप के साथ जुड़कर संज्ञा और विशेषण का निर्माण करते हैं, वे कृत् प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे-

पढ़ + आई = पढ़ाई, गिर + ना = गिरना।

तद्धित प्रत्यय- जो प्रत्यय संज्ञा ..... के साथ मिलकर नया शब्द बना रहा है।

4. कर्तृवाचक कृत प्रत्यय ..... सूँघनी, चटनी, मथनी।

5. जो शब्दांश शब्दों के पहले जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता लाते हैं, उन्हें उपसर्ग तथा जो शब्दांश शब्द के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं।

दो प्रत्ययों का एक साथ प्रयोग ..... दयालुता।

(च) 1. परि- परिणाम, परिचय। 2. अप- अपमान, अपयश। 3. बिन- बिनमाँगा, बिनखाया। 4. अ- अभाव, अज्ञान। 5. प्रति- प्रतिकूल, प्रतिध्वनि।

(छ) 1. त- बचत, रूपत। 2. ती- गिनती, चलती। 3. ई- घुड़की, धमकी। 4. आवट- बनावट, सजावट। 5. दार- दुकानदार, देनदार। 6. ता- बहता, मरता।

(ज) 1. वियोग-वि, 2. प्रतिक्षण-प्रति, 3. निर्धन-निर्, 4. उत्तम-उत्, 5. उपवन-उप, 6. दुराचार-दुर्। 7. प्रयत्न-प्र, 8. निवास-नि

(झ) 1. बोली-ई, 2. चटनी-नी, 3. बैठा-आ, 4. गवैया-ऐया, 5. सोया-या, 6. खपत-त, 7. पढाई-आई, 8. घेरा-एरा

5. समास

(क) 1. अव्ययीभाव समास 2. द्विगु समास 3. द्वंद्व समास 4. तत्पुरुष समास 5. बहुव्रीहि समास

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (स) 2. (द) 3. (ब) 4. (अ)

(घ) 1. दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर एक नया शब्द बनाने की प्रक्रिया को समास कहते हैं जैसे- रसोई के लिए घर-रसोईघर।

2. **द्विगु समास** जिस समस्तपद का पहला पद संख्यावाचक विशेषण हो और किसी समूह का बोध कराता हो, उसे द्विगु समास कहते हैं; जैसे दोराहा- दो राहों का समाहार।

द्वंद्व समास जिस समस्तपद में दोनों पद प्रधान हों और विग्रह करने पर 'एवं और तथा' आदि योजक शब्द लगते हों उसे द्वंद्व समास कहते हैं; जैसे- हार-जीत → हार और जीत

3. कर्मधारय समास में समस्तपद का एक पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है; जैसे - नीलगगन- नीला है जो गगन

बहुव्रीहि समास जिस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता बल्कि कोई अन्य ही प्रधान होता है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं; जैसे- नीलकंठ- नीला है कंठ जिसका। (शिव)

4. तत्पुरुष समास- जिस समास में दूसरा पद प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास ..... उसका नाम पड़ जाता है।

(i) कर्म तत्पुरुष ..... पद से च्युत

5. कर्मधारय समास में समस्तपद का एक पद विशेषण और दूसरा ..... जैसे- नीलगगन (नीला है जो गगन), काली मिर्च (काली है जो मिर्च), नवग्रह (नौ ग्रहों का समूह), सप्ताह (सात दिनों का समूह)

6. अव्ययीभाव समास- जिस समस्तपद का पहला पद अव्यय हो तथा वही प्रधान हो और उसके योग से सारा समस्तपद ही अव्यय बन पाए, वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। अव्ययीभाव समास में मुख्य रूप से आ, अन, यथा, नि, भर, बे, प्रति आदि अव्ययों का प्रयोग होता है; जैसे- आजन्म -जन्मभर, आजीवन -जीवनपर्यंत, निडर-बिना डर, यथासमय-ठीक समय पर, बेशक-शक के बिना, प्रतिदिन - दिन-दिन, भरपेट-पेट भरकर, अनजाने-जाने बिना।

(ङ)

समस्तपद	समास का नाम
1. कार्यकुशल	अधिकरण तत्पुरुष
2. गंगातट	संबंध तत्पुरुष
3. स्वर्गगत	कर्म तत्पुरुष
4. नील गगन	कर्मधारय समास

(च) 1. चतुर्भुज (बहुव्रीहि)-चार भुजाएँ हैं जिसकी (विष्णु)

चतुर्भुज (द्विगु)-चार भुजाओं से युक्त

2. पंचरत्न (बहुव्रीहि) - पाँच रत्नों वाला

पंचरत्न (द्विगु)- पाँच रत्न

6. संधि

(क) 1. द् 2. स्वर 3. विसर्ग 4. वर्णों 5. मेल

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (स)

(घ) 1. परिभाषा- निकटवर्ती वर्णों के मेल से होने वाले परिवर्तन को संधि कहते हैं।

संधि के भेद हिंदी में तीन प्रकार की संधियाँ होती हैं- ..... विसर्ग संधि कहते हैं।

2. संधि के नियमों के अनुसार मिले हुए वर्णों को यदि अलग-अलग कर दिया जाए, तो यह प्रक्रिया संधि-विच्छेद कहलाती है; जैसे- पुस्तकालय का संधि-विच्छेद होगा = पुस्तक + आलय।

3. स्वर-संधि के उपभेदों के सामान्य नियम निम्न प्रकार हैं-

(1) दीर्घ संधि-एक ही जाति के स्वरों के निकट आने पर उनके मेल से उसी जाति का दीर्घ स्वर बन जाता है। इसे दीर्घ संधि कहते हैं। (अ + अ = आ) - कोण + अर्क = कोणार्क

(2) गुण संधि- यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'इ' हो, तो दोनों के स्थान पर 'ए'; यदि 'उ' या 'ऊ' हो, तो दोनों के स्थान पर 'ओ' और यदि 'ऋ' हो, तो 'अर्' हो जाता है। इसे गुण संधि कहते हैं। (अ + इ = ए) - नर + इन्द्र = नरेन्द्र।

(3) वृद्धि संधि- जब 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' हो, तो दोनों के स्थान पर 'ऐ'; यदि 'ओ' या 'औ' हो, तो दोनों के स्थान पर 'औ' हो जाता है। इस मेल को वृद्धि संधि कहते हैं।

(अ+ए=ऐ) – एक + एक = एकैक
लोक + एषण = लोकैषण।
4. वर्ग के पहले वर्ण का पाँचवें वर्ण में परिवर्तन– यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) ... .षट् + मास = षण्मास।
'त्' के संबंध में विशेष नियम– (क) 'त्' के बाद कोई स्वर या 'ग, घ, द, ध, ब, भ, म, र' या 'व' वर्ण हो, तो 'त' का 'द' हो जाता है– सत् + गति = सद्गति।
5. विसर्ग के बाद यदि 'श' या 'स' हो, तो विसर्ग ज्यों-का-त्यों बना रहता है या उसकी जगह क्रमशः 'श्, ष्, या 'स्' हो जाता है– ..... तो विसर्ग का लोप हो जाता है– अतः + एव = अतएव।
(ङ) 1. नर + इंद्र = (अ + इ) = नरेंद्र
2. पो + इत्र = (ओ + इ) = पवित्र
3. पा + वक = (आ + अ) = पावक
4. सु + अल्प = (उ + अ) = स्वल्प
(च) 1. विः + छेद = विच्छेद (व्यंजन संधि)
2. चित् + मय = चिन्मय (व्यंजन संधि)
3. निः + चय = निश्चय (विसर्ग संधि)
4. भर + न = भरण (व्यंजन संधि)
5. जगत् + नाथ = जगन्नाथ (व्यंजन संधि)
6. परम् + तू = परन्तु (व्यंजन संधि)
7. दिक् + गज = दिग्गज (व्यंजन संधि)
8. सत् + जन = सज्जन (व्यंजन संधि)

7. शब्द-भंडार

(क) 1. प्रयोग 2. इच्छा 3. अमूल्य 4. कूल, कुल 5. परिमाण, परिणाम
(ख) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (अ)
(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)
(घ) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब)
(ङ) 1. समान अर्थ देने वाले शब्द पर्यायवाची कहलाते हैं तथा विपरीत अर्थ प्रकट करने वाले शब्द विलोम शब्द कहलाते हैं।
2. हिन्दी भाषा में ..... सभा का प्रधान। अनेकार्थी शब्द ..... कहते हैं।
3. वह प्रयुक्त शब्द जो वाक्यांश अथवा अनेक संबद्ध शब्दों के लिए शीर्षक का कार्य करता है वाक्यांश के लिए एक शब्द कहलाता है; जैसे– जो सदा रहे– अमर।
हिन्दी में अनेक ऐसे शब्द हैं, जो उच्चारण की दृष्टि से प्रायः समान पाए जाते हैं परंतु उनके अर्थ में पर्याप्त भिन्नता होती है। उच्चारण या प्रयोग में तनिक-सी असावधानी होने पर वाक्य के अर्थ में परिवर्तन हो जाता है और पूरा वाक्य ही गड़बड़ा जाता है ऐसे शब्दों को समश्रुति (सुनने में समान लगने वाले) भिन्नार्थक (अर्थ में भिन्नता वाले) शब्द कहा जाता है। उदाहरण– कृती – कुशल, कृति – काय
(च) 1. हाथी– गज, नाग, हस्ती। 2. पुष्प– फूल, सुमन, कुसुम। 3. कोयल– कोकिला, पिक, वनप्रिय। 4. पृथ्वी– भू, धरा, भूमि। 5. बादल– मेघ, घन, जलधर।
(छ) 1. गगन-धरा, 2. चर-अचर, 3. आज्ञा-अवज्ञा, 4. जड़– चेतन, 5. उदय-अस्त, 6. एकता-अनेकता, 7. चंचल-स्थिर, 8. अमृत-विष, 9. कठिन-सरल,
(ज) कर– हाथ, टैक्स, किरण।
उत्तर– जवाब, एक दिशा का नाम, बाद का।
पक्ष– पंख, तरफ, सहायक।
विधि– कानून, तरीका, भाग्य।
अक्षर– वर्ण, ईश्वर, मोक्ष।
(झ) 1. **चिता** संत महापुरुषों ने कहा है, चिंता चिता के समान होती है।
चीता चीता बिल्कुल शेर की तरह ही प्रतीत होता है।
2. **गिरि** हिमालय गिरि आकाश को छूने वाली दिखाई देती है।
गिरी खरबूजे की गिरि बहुत उपयोगी होती है।
3. **गज** चिड़ियाघर में हमने एक गज को देखा। **गज़** दो गज़ सूती कपड़ा ले आओ।
(ञ) 1. मुमुक्षु 2. यशस्वी 3. आलोचक 4. हस्तलिखित 5. कलाकार 6. अवैतनिक 7. युधिष्ठिर 8. विश्वसनीय
(ट) 1. इस बार दीपावली पर अभूतपूर्व दृश्य उपस्थित हुआ था। 2. इस संस्था में सभी अवैतनिक हैं। 3. परमार्थी का जीवन सफल होता है। 4. वाचाल से सावधान रहना चाहिए। 5. कटुभाषी आदर नहीं पाता।
(ठ) 1. स्वागत– किसी के आगमन पर सम्मान। अभिनंदन– किसी महान व्यक्ति का विधिवत्

सम्मान।
2. व्यय- साधारण खर्च।
अपव्यय- फिजूल खर्च।
3. अध्यक्ष- किसी संस्था का स्थायी प्रधान।
सभापति- कुछ काल तक होने वाली किसी सभा का प्रधान।

8. संज्ञा

(क) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓ 6. ✗
(ख) 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (ब) 5. (ब)
(ग) 1. किसी प्राणी, वस्तु, गुण, भाव, स्थिति या अवस्था के नाम को संज्ञा कहते हैं। उदाहरण .... नदी, हवा, वन आदि।
2. व्यक्तिवाचक संज्ञा- जो संज्ञा शब्द किसी विशेष नाम के व्यक्ति, प्राणी, वस्तु या स्थान का बोध कराएँ, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे- ....नाम व्यक्तिवाचक संज्ञा होते हैं।
3. जातिवाचक संज्ञा- जब कोई संज्ञा शब्द एक ही प्रकार के सभी प्राणियों, वस्तुओं तथा स्थानों आदि का बोध कराता है, तो इनसे पूरी जाति का बोध होता है। इसलिए ऐसे संज्ञा शब्द जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे- लड़का, स्त्री, पुरुष, कुत्ता, गाँव, देश, पर्वत, नदी, अध्यापक, वर्षा, चिकित्सक आदि।
4. भाववाचक संज्ञा- जिन शब्दों से संज्ञा के गुण, दोष, भाव, अवस्था, स्थिति आदि का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे- वीरता .... आदि।
5. द्रव्यवाचक संज्ञा- जिन संज्ञा शब्दों से विभिन्न पदार्थों का बोध होता है, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे- लोहा, चाँदी, सोना, पीतल, गेहूँ, चावल, जल, दूध, तेल आदि।
समूहवाचक संज्ञा- जिन शब्दों से संज्ञा के समूह का बोध हो, उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं, जैसे कक्षा, सेना, भीड़, गुच्छा, सभा, गिरोह आदि।
6. व्यक्तिवाचक और भाववाचक संज्ञाओं का जातिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग- व्यक्तिवाचक और भाववाचक संज्ञाएँ एकवचन में प्रयुक्त होती हैं; किंतु जब विशेष स्थितियों, ... यह देश गाँधी और नेहरू का है। (महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू)
(घ) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)
(ङ) 1. डाका 2. गिरावट 3. प्रभुता 4 कालिमा 5. ठंडक 6. चोरी 7. प्रसन्नता 8. दुष्टता 9. गरीबी
(च) 1. नगर- जातिवाचक संज्ञा, 2. घोड़ा- व्यक्तिवाचक संज्ञा, 3. गोदावरी- व्यक्तिवाचक संज्ञा, 4. अच्छाई- भाववाचक संज्ञा, 5. उड़ान- भाववाचक संज्ञा, 6. पर्वत- जातिवाचक संज्ञा, 7. पीतल- द्रव्यवाचक संज्ञा, 8. दूध- द्रव्यवाचक संज्ञा, 9. सेना- समूहवाचक संज्ञा,
(छ) स्वयं कीजिए।

9. लिंग

(क) 1. स्त्रीलिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिग 4. पुल्लिंग 5. पुल्लिंग।
(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓
(ग) 1. (अ) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (अ)
(घ) 1. शब्द के जिस रूप से पुरुष या स्त्री जाति का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं। लिंग के दो भेद हैं- पुल्लिंग शब्द के जिस रूप से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं; जैसे- मोटा, लोटा, छाता, सोना, लोहा। स्त्रीलिंग शब्द के जिस रूप से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे - बेटी, चाची, गाय, शेरनी आदि। 2. नित्य पुल्लिंग शब्द-कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनका प्रयोग सदा पुल्लिंग में ही किया जाता है; जैसे: कौआ, उल्लू, खटमल, तोता, मच्छर, पशु, गैंडा, पक्षी आदि। नित्य स्त्रीलिंग शब्द- कुछ शब्दों का प्रयोग सदा स्त्रीलिंग में ही किया जाता है; जैसे: मैना, मछली, कोयल, मक्खी, चील, भेड़, बुलबुल आदि। 3. 1. ई, नी, री ..... अमावस्या आदि। 4. 1. बड़ी, मोटी ..... (अपवाद इ, ई, ए, ऐ, ऋ) 5. एक ही वस्तु के पर्यायवाची ..... आँख- स्त्रीलिंग।
(ङ) 1. डिबिया 2. बाघिन 3. लुटिया 4. मादा 5. शिष्या 6. चोरनी 7. मादा मगरमच्छ 8. यशस्विनी 9. मादा भालू
(च) 1. भाई 2. बैल 3. नर चील 4. अध्यापक 5. मियाँ 6. हंस 7. भील 8. नर गिलहरी 9. नर मकड़ी
(छ) 1. स्त्रीलिंग, पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग, 3. स्त्रीलिंग 4. स्त्रीलिंग, पुल्लिंग
(ज) 1. कवि सम्मेलन में एक कवयित्री को आमंत्रित किया गया। 2. पंडिताइन की दीन-दशा मुझसे देखी न गई। 3. उसने फेरी वाले से स्टील का एक कटोरा खरीदा। 4. फिल्म की नायिका एक

सीधी-सादी युवती है।

10. वचन

(क) 1. बालिकाओं 2. मुसाफिरों 3. मोरों 4. छात्रगण 5. पत्तियों

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब)

(घ) 1. शब्द का वह रूप ..... कहलाता है वे फुटबॉल खेल रहे हैं।

2. वचन दो प्रकार ..... हम आदि।

3. कुछ एकवचन संज्ञा शब्दों के साथ 'वर्ग, जन, लोग, वृंद, गण' आदि शब्द जोड़कर उनका प्रयोग बहुवचन में किया जाता है; जैसे- ..... आज सभी मजदूर लोग अवकाश पर हैं।

4. कुछ संज्ञा शब्दों का प्रयोग सदा बहुवचन में होता है-

दर्शन- मैं आपके दर्शन करने आया था।

आँसू- उसका दु:ख देखकर मेरे आँसू निकल पड़े।

हस्ताक्षर - मैंने पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए हैं।

बाल- उसके बाल लंबे हैं।

प्राण- रोते-रोते उसने प्राण त्याग दिए।

लोग- लोग तो प्राय: सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास कर लेते हैं।

दाम- इस कुर्सी के सही दाम बताओ।

(ङ) 1. कलाएँ- बहुवचन, 2. आप- एकवचन। 3. छात्रगण- बहुवचन, 4. लू- एकवचन, 5. प्रजाजन- बहुवचन, 6. डिबिया- एकवचन, 7. धोती-एकवचन 8. गायें-बहुवचन, 9. खटियाँ-बहुवचन

(च) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब)

(छ) 1. पुत्रों को पिता की सेवा करनी चाहिए। 2. डाकू माल लूटकर फरार हो गये। 3. आचार्यों ने हमें अच्छी बातें बताईं। 4. लुएँ चल रही हैं। 5. मेरी घड़ियाँ खराब हैं।

(ज) 1. एकवचन 2. एकवचन 3. बहुवचन 4. बहुवचन, 5. बहुवचन

(झ) 1. आज एक महीने बाद बेटे के दर्शन हुए। 2. सर्दियों में रातें लंबी होती हैं। 3. कृपया अपने आँसू पोंछ डालिए। 4. रोते-रोते उसने प्राण त्याग दिए।

11. कारक

(क) 1. कर्ता 2. अपादान 3. अधिकरण 4. संबोधन 5. करण

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗ 5. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स)

(घ) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप और कार्य से उसका संबंध वाक्य में क्रिया या अन्य संज्ञा या सर्वनाम पदों से जाना जाए, उसे कारक कहते हैं। उदाहरण :- दानिश ने चॉकलेट ली। कार पेट्रोल से चलती है।

2. **कर्ता कारक**- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का ज्ञान हो वह **कर्ता कारक** कहलाता है। जैसे- शीला ने खाना खाया। **कर्म कारक** जिस पर क्रिया के कार्य का फल पड़ता है, वह **कर्म कारक** कहलाता है; जैसे- अध्यापक ने बच्चों को पढ़ाया।

3. शब्द के जिस रूप से किसी को बुलाने या सचेत करने का भाव प्रकट हो, उसे संबोधन कारक कहते हैं; उदाहरण : ऐ! कहाँ जा रहे हो? 4. संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप, जिससे एक वस्तु का दूसरी के साथ संबंध ज्ञात हो, संबंध कारक कहलाता है; जैसे- ये मेरे मित्र हैं।

5. करण कारक ..... पूरी निकाली है।

(ङ) 1. कर्म कारक 2. संप्रदान कारक 3. संप्रदान कारक 4. संबंध कारक। 5. अधिकरण कारक 6. करण कारक 7. अपादान कारक 8. संप्रदान कारक

(च) 1. ने, को 2. से 3. ने, को 4. ने, से 5. ने, को 6. में 7. पर 8. से

(छ) 1. अपादान कारक 2. करण कारक 3. अपादान कारक 4. करण कारक 5. अपादान कारक

(ज) स्वयं कीजिए।

(झ) 1. सचिन को स्कूल जाना है। 2. परीक्षा मार्च में होगी। 3. वह रमेश का घर नहीं है। 4. मैं शाम को आऊँगा।

12. सर्वनाम

(क) 1. जिसकी, उसकी। 2. स्वयं 3. कुछ 4. वो 5. मैं

(ख) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)

(घ) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं; जैसे- मैं, तुम, वह, हम, आप, यह, जो, कोई, कुछ, कौन, आदि। 2. **निश्चय सर्वनाम**- जिन सर्वनामों से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध हो, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहा जाता है। जैसे- यह, वह, वे आदि।

अनिश्चय सर्वनाम- जिस सर्वनाम शब्द से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध न हो, वह अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाता है। जैसे- कुछ, कोई, आदि।

3. जो सर्वनाम शब्द वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम से संबंध बताता है, वह संबंधवाचक सर्वनाम कहलाता है; जैसे- जो, जैसे आदि।

4. पुरुषवाचक सर्वनाम- बोलने वाले, लिखने वाले, सुनने वाले, पढ़ने वाले या किसी अन्य व्यक्ति के लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है, वे पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। ..... जैसे;- वह, वे, वे लोग, वे सब, उसे, उन्हें, आदि।

5. निजवाचक सर्वनाम ..... चला गया।

(ङ) 1. मैं आपको अपना पता दूँगा। 2. मुझे आज जाना है। 3. मुझे अपने से प्यार है। 4. वह वहाँ गया था। 5. किसी आदमी का नाम मुझे पता नहीं। 6. जिस आदमी ने नल लगाया था वह आया है।

(च)1. कोई, क्या (अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक) 2. हमारा (उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम)

3. जैसा-वैसा (संबंधवाचक सर्वनाम) 4. वह (पुरुषवाचक सर्वनाम) 5. अपना (निजवाचक सर्वनाम)

(छ) 1. वे (अन्य पुरुष) 2. तू (मध्यम पुरुष) 3. तुम (मध्यम पुरुष) 4. वह (अन्य पुरुष)

13. विशेषण

(क) 1. ऊनी 2. राष्ट्रीय 3. कमाऊ 4. सुखी 5. विषैला

(ख) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (स) 4. (ब) 5. (अ)

(घ) 1. **विशेषण**- संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

विशेष्य- विशेषण जिस शब्द की विशेषता बतलाता है उसे विशेष्य कहा जाता है।

2. जो शब्द विशेषणों की विशेषता बताते हैं, **प्रविशेषण** कहते हैं। विशेषण के पाँच भेद हैं। (1) गुणवाचक (2) संख्यावाचक (3) परिमाणवाचक (4) सार्वनामिक (5) व्यक्तिवाचक

3. दो प्राणियों या वस्तुओं के गुणों-अवगुणों के मिलान को तुलना कहते हैं। विशेषण की तीन तुलनात्मक अवस्थाएँ हैं- (1) मूलावस्था (2) उत्तरावस्था (3) उत्तमावस्था

4. **मूलविशेषण**- कुछ शब्द मूल रूप में ही विशेषण होते हैं; जैसे काला, गोरा, मोटा, पतला आदि।

यौगिक विशेषण- कुछ शब्दों (जैसे- संज्ञा, सर्वनाम; क्रिया आदि) में उपसर्ग अथवा प्रत्यय लगाकर विशेषणों की रचना की जाती है। ऐसे विशेषणों की रचना की जाती है। ऐसे विशेषण यौगिक विशेषण कहलाते हैं; जैसे- वर्ष से वार्षिक, इतिहास से ऐतिहासिक, पुष्प से पुष्पित, रस से रसीला आदि।

5. **परिमाण** तथा **संख्यावाचक** ..... चावल लाया हूँ।

सर्वनाम तथा **सार्वनामिक** ..... बहुत कमजोर है।

(ङ) 1. कुछ-अनिश्चित संख्यावाचक 2. यह-सार्वनामिक विशेषण 3. महान-गुणवाचक 4. खिन्न मन-गुणवाचक 5. उपयोगी- गुणवाचक

(च)1. निरा मूर्ख-लड़का 2. बुद्धिमान-मनुष्य 3. दो किलो-पहलवान 4. ये-पुस्तकें 5. चालीस-छात्र

(छ) 1. घनिष्ठ- मूलावस्था 2. वृहत्तर- उत्तरावस्था 3. अधिकतम- उत्तमावस्था 4. सबसे अधिक- उत्तमावस्था 5. बदतर- उत्तरावस्था

(ज) 1. उत्तेजक- बहुत 2. तीव्र- अत्यंत 3. भोली- बड़ी 4. तेज- बहुत 5. मूर्ख- निरा

(झ) स्वयं कीजिए।

(ञ) 1. सारा परिवार (संख्यावाचक) 2. एक लीटर (परिमाणवाचक) 3. कुछ केले (संख्यावाचक) 4. प्रथम (संख्यावाचक) 5. पाँच दर्शक- (संख्यावाचक)

14. क्रिया और काल

(क) 1. खिंचवाई 2. बुलवाया 3. बजवाया 4. बनवाए 5. लिखवाया

(ख) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब)

(घ) 1. जिन शब्दों से किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उन्हें क्रिया कहते हैं; जैसे- पिताजी अखबार पढ़ते हैं। 2. **अकर्मक**- जिन क्रियाओं का कर्म नहीं होता तथा क्रिया का फल सीधे कर्ता पर पड़ता है, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे- रजनीश सो रहा है। **सकर्मक**- जिन क्रियाओं का कर्म होता है और क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे- रवि पुस्तक पढ़ रहा है। 3. **एककर्मक** जिन क्रियाओं का एक कर्म होता है उन्हें एककर्मक क्रिया कहते हैं जैसे- सिद्धार्थ गेंद से खेलता है।

द्विकर्मक- जिन क्रियाओं के दो कर्म हों, उन्हें द्विकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे- बहन भाई को कहानी पढ़ाना सिखाती है।

4. **नामधातु क्रिया**- संज्ञा, सर्वनाम तथा एक विशेषणादि शब्दों से बनने वाली क्रियाएँ नामधातु क्रियाएँ कहलाती हैं; जैसे- हाथ से हथियाना।

प्रेरणार्थक क्रिया- जिस क्रिया शब्द (पद) से यह पता चले कि कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी अन्य को उसे करने की प्रेरणा देता है ..... माता अध्यापिका से गरिमा को पढ़वाती है।

5. संयुक्त क्रियाओं में ..... वह भोजन खाने लगा।

6. भूतकाल के निम्नलिखित छह उपभेद होते हैं- ... . यदि वर्षा हो जाती तो फसल अच्छी होती।

7. **वर्तमान काल**- जो समय चल रहा है, उसे वर्तमान काल ..... वर्तमान काल की क्रियाएँ कहलाती हैं। **भविष्यत् काल**- क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य आने वाले समय में होगा ..... अत: ये भविष्यत् काल में हैं।

8. मूल धातु के अंत में 'आ' जोड़ने से प्रथम प्रेरणार्थक तथा 'वा' जोड़ने से द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया की रचना होती है; जैसे- ..... जीना जिलाना जिलवाना।

(ङ) 1. देखता (देख) 2. सुनते (सुन) 3. गया (जा) 4. लिखूँगा (लिख) 5. खेलता है (खेल)

(च) 1. सकर्मक 2. सकर्मक 3. सकर्मक 4. अकर्मक 5. सकर्मक

(छ) 1. अपनाना 2. गठियाना 3. शर्माना 4. ललचाना 5. हथियाना 6. चकराना 7. बतियाना 8. झुठलाना 9. लतियाना

(ज) 1. अध्यापक छात्रों को पढ़ाते हैं। 2. नानी बच्चों को कहानी सुना रही थी। 3. रवि, मोहन के साथ क्रिकेट खेलता है।

(झ) 1. वे सब मंदिर गए होंगे। 2. रेशमा पुस्तक लिख रही है। 3. बच्चे मेला देखने गए। 4. मीरा गीत गाती है। 5. बच्चे मैदान में खेल रहे होंगे।

15. वाच्य

(क) 1. कर्तृवाच्य 2. भाववाच्य 3.तीन

(ख) 1. (ब) 2. (स) 3. अ

(ग) 1. क्रिया के जिस ..... वाच्य कहते हैं। वाच्य के भेद ..... थोड़ा सो लिया जाए।

2. कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य ..... टहला जाए।

(घ) स्वयं कीजिए।

16. अविकारी शब्द

(क) 1. रात भर 2. प्रतिदिन 3. धीरे 4. बाहर 5. जोर-से 6. खूब

(ख) 1. (स) 2. (ब) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ)

(ग) 1. अविकारी शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं जिनकी रूप-रचना पर काल, लिंग, वचन और कारक आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता; जैसे- तेजी से, धीरे-धीरे, ही भर आदि।

2. **मूल क्रियाविशेषण**- जो क्रियाविशेषण किसी अन्य शब्द अथवा प्रत्यय के योग के बिना ही प्रयोग में लाए जाते हैं, वे मूल क्रियाविशेषण कहलाए जाते हैं; जैसे- आज, कल, यहाँ, वहाँ, ऊपर, नीचे, अब, तब आदि।

यौगिक क्रियाविशेषण- ऐसे क्रियाविशेषणों जो अन्य शब्दों में प्रत्यय लगाकर या समास द्वारा बनते हैं वे यौगिक क्रियाविशेषण कहलाते हैं; जैसे- रात-दिन, आजकल, क्षणभर, पहले-पहले,

प्रेमपूर्वक आदि।

3. जो अव्यय संज्ञा या सर्वनाम के बाद आकर उनका संबंध वाक्य में प्रयुक्त अन्य शब्दों के साथ प्रकट करते हैं, ... अर्थ के आधार .... पर्यंत आदि।

4. **समानाधिकरण समुच्चयबोधक**- जो समुच्चय -बोधक समान स्थिति वाले अर्थात् स्वतंत्र पदों, वाक्यांशों या ..... ताकि प्रधानाचार्य से मिल सको।

5. जो शब्द हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा आदि भावों को प्रकट करते हैं उन्हें विस्मयादिबोधक कहते हैं। .. .. भाव प्रकट हो रहे हैं।

(घ) 1. आगे, पीछे (स्थानवाचक) 2. उतना, जितना (परिमाणवाचक) 3. यहाँ (स्थानवाचक) 4. कम, ज्यादा (परिमाणवाचक) 5. पीछे (स्थानवाचक)

(ङ) 1. के समान 2. के खिलाफ 3. की ओर 4. की तरह 5. के साथ

(च) स्वयं कीजिए।

(छ) 1. क्योंकि 2. इसलिए 3. यद्यपि, लेकिन 4. नहीं तो 5. ताकि

(ज) 1. समानाधिकरण 2. व्यधिकरण 3. व्यधिकरण 4. समानाधिकरण 5. समानाधिकरण

(झ) 1. सावधान 2. छि: 3. शाबाश 4. हाय 5. खबरदार

(ञ) 1. सावधानी बोधक 2. हर्षबोधक 3. घृणा बोधक 4. शोकसूचक 5. हर्षबोधक

17. पद-परिचय, पदबंध तथा वाक्य

(क) 1. पदों 2. सार्थक 3. प्रतिप्रश्न 4. पदक्रम 5. मिश्र

(ख) 1. (अ) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स)

(ग) 1. **पद**- वाक्य में प्रयुक्त हो जाने पर शब्द पद कहलाता है।

पदबंध- वाक्य के उस भाग को ..... पदबंध कहलाते हैं।

2. पदबंध के प्रकार ..... वापस लौटेगा।

3. **वाक्य के अंग**- (i) वाक्य में कर्ता या उसके विस्तार अथवा जिस व्यक्ति या वस्तु के बारे में कुछ कहा जाए, उसे उद्देश्य कहते हैं; जैसे- सविता गीत गा रही है। सविता वाक्य का उद्देश्य है।

(ii) वाक्य में कर्ता या उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाए, उसे विधेय कहते हैं; जैसे सविता गीत गा रही है। यहाँ गीत गा रही है, में उद्देश्य के विषय में बताया है।

4. **सार्थकता**- सार्थक शब्दों का प्रयोग वाक्य की प्रथम आवश्यकता होती है। निरर्थक शब्दों का समूह वाक्य-संरचना नहीं कर सकता। ऐसे शब्द वाक्य में सार्थक शब्दों के साथ तभी प्रयोग किए जा सकते हैं, जब ..... की शर्त पूरी न करने के कारण नहीं माना जा सकता।

5. **संयुक्त वाक्य**- जिस वाक्य में दो स्वतंत्र उपवाक्य किसी समानाधिकरण समुच्चयबोधक द्वारा परस्पर जुड़े हुए हों, वह संयुक्त वाक्य होता है; जैसे- वह बाजार गया था और उसने फल खरीदे।

मिश्र वाक्य- जिस वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य और शेष आश्रित उपवाक्य हों, उसे मिश्र वाक्य कहा जाता है। जैसे- प्रधानाचार्य ने कहा कि कल छुट्टी होगी।

6. प्रधान उपवाक्य- किसी वाक्य का जो उपवाक्य स्वतंत्र होता है, दूसरे उपवाक्य पर निर्भर..... आश्रित उपवाक्य हैं।

7. अर्थ के आधार पर वाक्य-भेद– अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं.....यदि वह आता तो मैं चला जाता।

8. आसक्ति या निकटता- वाक्य के पद एक-दूसरे के समीप रहने चाहिए। यह तभी संभव है, जब पूरे वाक्य का एक साथ उच्चारण हो। यदि कुछ ठहराव या बलाघात दिखाना हो, तो .....नाम संदेश प्रसारित करेंगे।'

(घ) उद्देश्य	**विधेय**
1. मैं	नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करता हूँ।
2. रामचरितमानस	तुलसीदास की सर्वश्रेष्ठ कृति है
3. स्वावलंबी व्यक्ति	सदा सुखी रहता है।
4. मेरा भाई	प्रश्न हल कर रहा है।

5. भिखारी सड़क पर खड़ा है।

(ङ) 1. पदक्रम। 2. पदक्रम 3. अन्वय 4. पदक्रम 5. पदक्रम

(च) 1. न्यूजीलैंड से आए खिलाड़ी (विशेषण पदबंध)। 2. खेलकर सो गया। (क्रिया पदबंध) 3. वह पहले की अपेक्षा (क्रियाविशेषण पदबंध) 4. मीठे सपने देखने वाले लोग (विशेषण पदबंध) 5. बड़ी डींगे हाँकने वाला वह (सर्वनाम पदबंध)

(छ) 1. इच्छा- सूचक वाक्य 2. संदेहवाचक वाक्य 3. प्रश्नवाचक वाक्य 4. आज्ञावाचक वाक्य 5. प्रश्नवाचक वाक्य

(ज) 1. संयुक्त वाक्य 2. सरल वाक्य 3. संयुक्त वाक्य 4. संयुक्त वाक्य

(झ) 1. पिता ने पुत्र से कहा कि गुणों का सभी आदर करते हैं। 2. बालक शोर मचाकर भाग गए। 3. वह बाजार गया और दूध लाया। 4. बालक रोया और चुप हो गया।

(ञ) 1. अरे! तुम कब आए? 2. किसान एक बैल खरीदना चाहता था। 3. मेरे आँगन में हरी घास नहीं है। 4. क्या घर में मेहमान आ गए हैं?

18. विराम-चिह्नों का प्रयोग

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब) 6. (स)

(ख) 1. जो काम में आज पूरा नहीं कर सका; कल करूँगा 2. कृ०पृ०उ० कृपया पृष्ठ उलटिए। 3. वचन के दो भेद होते हैं-(1) एकवचन (2) बहुवचन 4. इस बच्चे को कहाँ ले जा रहे हो? 5. क्रिया दो प्रकार की होती हैं:- सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया 6. शराब पीने से शरीर में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। 7. वह दूर की सोचने वाला (दूरदर्शी) है। 8. सदा सत्य बोलो। 9. वह परिश्रमी, ईमानदार, स्वस्थ और सुंदर है। 10. तुलसी ने कहा है, "परहित सरिस धरम नहिं भाई।"

(ग) 1. भाषा को अधिक स्पष्ट तथा प्रभावशाली बनाने के लिए जिन संकेत-चिह्नों को प्रयोग किया जाता है, उन्हें **विराम-चिह्न** कहते हैं।

प्रश्नसूचक-चिह्न– वाक्य में प्रश्न पूछने के लिए सदैव प्रश्नसूचक-चिह्न लगाया जाता है; जैसे- ..... संबोधन के लिए-गोपाल! यहाँ आओ।

निर्देशक- उदाहरण की ओर संकेत करने वाला अथवा वाक्य ..... मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"

2. पूर्ण विराम- यह किसी कथन के पूर्ण होने पर, अप्रत्यक्ष प्रश्नों के अंत में तथा कविता में छंद के चरण ..... मुझे मिल गई है।

3. **कोष्ठक**- कोष्ठक-चिह्नों का प्रयोग प्रमुख रूप से निम्नलिखित तीन रूपों में किया जाता है- (क) .... सादा जीवन व्यतीत करते थे।

त्रुटिपूरक-चिह्न– जब कुछ लिखने से छूट .... में लगे ही रहते हैं।

उद्धरण-चिह्न- इसे अवतरण चिह्न भी कहते हैं। जब किसी अन्य की उक्ति को ..... प्रसिद्ध ग्रंथ है।

4. किसी बड़े तथा प्रसिद्ध शब्द को संक्षेप में लिखने के लिए उस शब्द का पहला अक्षर लिखकर उसे आगे (०) लगा देते हैं। यह शून्य ही लाघव चिह्न कहलाता है; जैसे- डॉक्टर का लाघव- चिह्न डॉ०

5. **योजक**- जैसा कि ..... एक-तिहाई।

(घ) 1. भगवान सबका भला करें, जो दे उसका भी, जो न दे उसका भी। 2. प्रातः काल टहलना अच्छा है, सभी बताते हैं। 3. शाबाश! तुमने तो कमाल कर दिया। 4. गाँधी जी ने कहा था- "सत्य और अहिंसा से ही हम देश आजाद करा सकते हैं।" 5. मैं तो ठहर गया, बोल! तू कब ठहरेगा? 6. कमला जोर से चिल्लाई- 'बचो'। 7. नेताजी ने कहा- "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा।" 8. मैनें डॉ० शर्मा का निबंध 'विज्ञान वरदान या अभिशाप' पढ़ा। 9. मुझे बाजार से जूते, कपड़े, टोपी, किताबें और कुछ मसाले खरीदने हैं। 10. गोपाल ने मोहन को पुकारा ओ मोहन; पर मोहन ने कोई ध्यान नहीं दिया। वह सोचता-सोचता रवि और दीपक के घर की ओर निकल गया। 11. हाय! मैं लुट गया। 12. रवि, राकेश, मोहन और सुरेश आए थे, ये सब अब गाँव जाएँगे। 13. देखो कौन आया है? उसे आदर के साथ, कुर्सी, सोफे या पलंग पर बैठाओ। 14. अहा! देखा कितना सुंदर मौसम है, चारों ओर सुंदर फूल खिले हैं, आओ नाचे गाएँ।

19. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

(क) 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (स) 5. (ब)

(ख) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (स)

(ग) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब) 4. (अ) 5. (ब)

(घ) 1. (य) 2. (अ) 3. (र) 4. (ब) 5. (द) 6. (स)

(ङ) 1. ऐसा वाक्यांश ..... मुहावरा कहते हैं। मुहावरों का प्रयोग वाक्य के प्रसंग में होता है, अलग से नहीं। 2. लोकोक्ति (लोक + उक्ति) का सामान्य अर्थ है- लोक में प्रचलित उक्ति। ..... कहावत भी कहा जाता है। धोबी का कुत्ता घर का न घाट का ..... नाच न जाने आँगन ढेड़ा।

3. मुहावरे तथा लोकोक्तियों में अंतर निम्न बातों से स्पष्ट है– ..... मुहावरे के शब्द वाक्य के अनुसार परिवर्तनीय होते हैं।

20. अलंकार

(क) 1. वर्णों 2. चिपकना 3. असमान 4. आभूषण

(ख) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब) 5. (अ)

(घ) 1. अलंकार का अर्थ है– आभूषण या शृंगार। जिस प्रकार गहने या आभूषण शरीर के सौंदर्य को बढ़ाने में सहायक होते हैं, उसी प्रकार अलंकार भी काव्य के सौंदर्य को बढ़ाते हैं। 2. **शब्दालंकार**- जहाँ शब्दों के प्रयोग से भाषा के सौंदर्य में वृद्धि होती है और काव्य में चमत्कार आ जाता है, वहाँ शब्दालंकार माना जाता है। ऐसे स्थान पर अलंकार शब्द पर आश्रित होते हैं अर्थात् शब्द बदल देने पर उनका अलंकारत्व नष्ट हो जाता है। **अर्थालंकार**- जहाँ काव्य में विशेषता अर्थगत हो, वहाँ अर्थालंकार होता है अर्थात् जहाँ शब्दों के अर्थ से चमत्कार स्पष्ट हो, वहाँ अर्थालंकार माना जाता है। इस अलंकार से युक्त रचना की एक विशेषता यह भी है कि यदि एक शब्द के स्थान पर उसी अर्थ वाला दूसरा शब्द (पर्यायवाची) रख दिया जाए, तब भी रचना के चमत्कार में कोई अंतर नहीं आता।

3. प्रमुख शब्दालंकार हैं– 1. अनुप्रास 2. यमक 3. श्लेष।

अनुप्रास- जिस रचना में वर्णों की बार-बार आवृत्ति के कारण चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ अनुप्रास .... अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

यमक- जब एक शब्द दो या अधिक बार प्रयुक्त होता हो और ..... आवृत्ति होने के कारण यहाँ यमक अलंकार है।)

श्लेष अलंकार– श्लेष का अर्थ है- चिपकना। जहाँ एक ही शब्द में एक बार प्रयुक्त होने पर दो या अधिक अर्थ ..... शब्द में श्लेष अलंकार है।)

4. प्रमुख अर्थालंकार हैं : उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, मानवीकरण

उपमा- उपमा का अर्थ है- दो असमान वस्तुओं की तुलना करके उनमें कुछ समानता दिखाना। .... धर्म-कोमल, वाचक शब्द-से)

रूपक- जहाँ गुण की अत्यंत समानता दर्शाने के लिए उपमेय और उपमान को 'अभिन्न' अर्थात् 'एक' कर दिया ..... (राम-रतन)

5. **उत्प्रेक्षा**- जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना अथवा कल्पना कर ..... अतः यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है।

अतिशयोक्ति- जहाँ किसी का वर्णन इतना बढ़ा-चढ़ाकर किया जाए ..... अतः अतिशयोक्ति अलंकार है।)

(ङ) 1. यमक 2. उपमा 3. रूपक 4. उपमा 5. अतिशयोक्ति